हिन्दी साहित्य की अंतराष्ट्रीय त्रैमासिक ई -पत्रिका

वर्ष -1, अंक -1, (जुलाई-सितम्बर)

हिन्दी की गूँज

हिन्दी की गूंज
Saqib Majeed
अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका
संरक्षक एवं संपादक
रमा शर्मा
जापान
日本

हिन्दी की गूँज

संरक्षक एवं सम्पादक

डॉ रमा शर्मा

जापान

साहित्य सम्पादक

कपिल कुमार

बेल्जियम

वेब संपादक

जे पी द्विवेदी

गाजियाबाद

सलाहकार सम्पादक

विनोद पाण्डेय

गाजियाबाद

प्रकाशन :

हिन्दी की गूँज

जापान

हिन्दी की गूँज

♦ सभी पद अवैतनिक हैं। ♦

नोट : पत्रिका में प्रकाशित किसी सामग्री के लिए संपादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद का निपटारा सक्षम न्यायालय द्वारा किया जाएगा।

अनुक्रम

संपादकीय- रमा शर्मा/5

आलेख

जंग ए आजादी के महान योद्धा थे उन्हाडी(हरियाणा) के नेतराम-राजेश कुमार/7
महामारी, साहित्य एवं समाज-रामेश्वर प्रसाद गुप्त/26&27
हिन्दी केवल भाषा ही नहीं पूर्ण संस्कृति-दीपक श्रीवास्तव/47

कविता/गीत/गजल

गजल-कपिल कुमार/6
आरजू जिंदगी की-मेघा सक्सेना/8
चन्दा की चाँदनी-मेघा सक्सेना/8
दूर छूट गया-रश्मि अभय/8
अभिनेता सुशांत-डॉ दिग्विजय कुमार शर्मा/9
एक नज्म-सौम्या दुआ/10
आकर तुम मत जाना साजन-डॉ पूनम माटिया/10
फिर से राजतिलक कर दो- राकेश छोकर/11
उमंग-राकेश छोकर/11
गजल-राखी /12
गजल-विनोद सिंह नामदेव /12
जिंदगी-डॉ मीना शर्मा 'मनु' /16
कल्पना-डॉ पुष्पांजलि अग्रवाल /16
खाली बैठी थी औरतें-शरद कोकास /17
माँ-निक्की शर्मा 'रश्मि' /18
नौकरी-शरद कोकास /18
विलोम शब्द-डॉ अनीता सिंह /20
कमाल करते हैं-कामिनी गुप्ता /20
कब्रिस्तान के बगल वाली लड़की-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /21
जर्द पत्ता-सुधीर केवलिया /22
जरूरत-सुधीर केवलिया /22
ताटंक छंद-विनोद सिंह नामदेव /23
गजल-विनोद सिंह नामदेव /23
कविता-डॉ जयशंकर शुक्ल /27
प्रवासी मजदूर-डह शारदा प्रसाद /28
राज की बात-रश्मि रामेश्वर गुप्ता /28
एक और कविता-डॉ प्रदीप कुमार दुबे /30
माँ गंगा का इतिहास-डॉ राजीव पाण्डेय /38
दो गज की दूरी, बहुत जरूरी-विनोद पाण्डेय /39
नई फुहार- चंद्र भानु मिश्रा/48
देवतुल्य परिवार मिले- डॉ राजीव पाण्डेय /48

संस्मरण/कहानी

मिस यू पापा-मीना पाठक /36&37
ये मोह मोह के धागे-उपासना सियाग /41&46

लघुकथा/विचार

गुलमोहर-डॉ नयना डेलीवाल /13
योग की साधना-गोबरधन लाल डांगी /13
तुम चिंता न करो मैं हूँ ना- निक्की शर्मा 'रश्मि' /19

साक्षात्कार

सीखने और सिखाने की बात हर जगह होनी चाहिएः तुफैल अहमद-कपिल कुमार /29&30
आलोचना का भविष्य उज्वल है, ऐसा मेरा प्रबल मत हैःडॉ जयशंकर शुक्ल-अनिल कुमार पाण्डेय /31&35

समीक्षा

आधुनिक मानव समाज की एक सच्ची विवेचना'जिस्मगोई'-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /24&25

डायरी
मेरी डायरी से- गोबरधन लाल डांगी /14&15

व्यंग
बिना सेल्फी कैसा योग-विनोद पाण्डेय /39&40

संपादकीय

आज सारी दुनिया में कोलाहल मचा है। एक वायरस ने सभी को यह सोचने पर विवश कर दिया है कि जीवन का सुख क्या है ? पैसा कमाने और जुटाने की जद्दोजहद में भाग रहे आदमी को अब समझ में आ रहा है कि जीवन की आवश्यकताएँ कितनी सीमित हैं। भीड़ का चेहरा बने हुए सेलेब्रेटी को आज भीड़ से ही डर लग रहा है। यह कोई वायरस हो या कोई जैविक हथियार हो या किसी तरह की प्राकृतिक आपदा। एक बात तय है इस वायरस में आज के मनुष्य को बहुत कुछ सिखा दिया। अपने परिवार का मतलब लोग खूब अच्छे ढंग से समझ सके। हर प्राणी में जीवन की अनिश्चितता से भयभीत है। ऐसे में साहित्य की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। कविता हर दौर से मानव को विकट परिस्थिति से जूझने की शक्ति प्रदान करती है। वर्तमान में लिखा गया साहित्य भविष्य की पीढ़ियों के लिया सीख बनेगा। मनुष्य के ह्रदय में भावनाओं का समंदर हर वक्त हिलोरे लेता है उसे कोई बाँध नहीं सकता। आज इस मुश्किल परिस्थिति में भी मनुष्य के विचार एक जगह से दूसरी जगह यात्रा कर रहे हैं। केवल रूप बदला है। वो रूप कविता भी हो सकती है,कहानी भी हो सकती है,संस्मरण भी हो सकता है।कोई भी विधा हो सकती है यहाँ तक कि यह यात्रा सामान्य बातचीत के रूप में भी हो सकती है। आइये हिंदी की गूँज के माध्यम से हम उसी यात्राओं के साक्षी बने जहाँ शब्द और भाव साथ-साथ चल रहे हैं और शिल्प उनके राहों की सुंदरता को निखार रहा है।

समय हर घाव को भर देता है
बस उसके निशान ही रह जाते हैं
जिंदगी के एहसासों को भी क्या कहें
समय के साथ वो भी बदल जाते हैं
लगाते हैं चेहरों पर जो होली में गुलाल
समय गुजरते ही वो भी दाग नजर आते हैं

कुछ मौन मुखरित हो गये
कुछ बोल गूंगे हो गये
सुनने वालों ने सुन लिया
समझने वालों ने समझ लिया ....

अपनी बात

रमा शर्मा
जापान

गजल

1

गुमसुम लम्हें सन्नाटे गहरे जाएं तो जाएं कहाँ
उस पर बैठे यादों के पहरे जाएं तो जाएं कहाँ

है बहुत मासूम ये दिल, धड़के भी रह रह कर
घूरते अनजाने चेहरे , जाएं तो जाएं कहाँ

हैं बहुत ही दूर मुझसे ,अब लफ्जों के दायरे
मायने समंदर से गहरे जाएं तो जाएं कहाँ

है यहाँ कुछ भी नही बस खामोशी के सिवा
रूठे रूठे,कुछ लम्हे ठहरे जाएं तो जाएं कहाँ

करते है पीछा अल्फाज मेरे बनके गहरे साये
दुश्मन खुद अल्फाज मेरे जाएं तो जाएं कहाँ

2

जख्म जिसने दिए , अब घायल वही
जिसे न था यकीं ,अब कायल वही

हमपे बरसा था जो बादल कभी
जमके बरसा है उनपे भी बादल वही

दूर की कौड़ी कहते थे लाए हैं वो
जो लेके बैठे हैं अब भी मसायल वही

चुराके जो ले गए थे वो मेरी आँख से
सजा के बैठे हैं आँखों में काजल वही

इश्क करना है तो फिर सोचना है मना
इश्क में जो सयाना है पागल वही

कपिल कुमार
बेल्जियम

जंग ए आजादी के महान् यौद्धा थे उन्हाणी (हरियाणा) के ''नेतराम''

वो वीर थे,वो धीर थे,जो रुके नही, अडिग रहे,
माँ भारती की शान में,जिनके कर्म सब निहित्त रहे।
सलाम उन शूरमाओं का,जो आजादी की जंग के सिपाही रहे।

हिन्दुस्तान की पावन भूमि से स्वतंत्रता सेनानियों की खुशबू की महक आज भी देश विदेश में बसे प्रवासी अप्रवासी भारतीय सभी समान रूप में,महसूस करते है। लेकिन जो हिन्दुस्तान में है ,वे इन महान स्वतंत्रता सेनानियों को अपने आदर्श के रुप में देखते हैं। ऐसे ही एक यौद्धा स्वतंत्रता सेनानी रहे है , नेतराम जी, जिनकी कहानी से आज आप रूबरू है।उन्ही के पुत्र शिक्षक राजेश जी की कलम से।

कनीना उपमंडल के गांव उन्हाणी में खुशहाल के घर १६१८ में जन्मे नेतराम ने ''जंग ए आजादी'' में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था।बचपन में ही इनके पिता का देहांत हो गया था ।इनकी माता धापा देवी ने इनका लालन पालन किया।इनकी माता बहुत संघर्ष शील व देशभक्ति के विचारों की महिला थी।वे चाहती थी उनका बेटा देश की आजादी के लिए कुछ करें।उन दिनों आजादी के लिए सभी के अंतर में एक ज्वाला जग रही थी।

वे २२वर्ष की आयु में ७वीं राज राईफल्स सेना में भर्ती हो गए। प्रशिक्षण के बाद अंग्रेजों ने इनकी बटालियन को जापान से लड़ने के लिए भेज दिया ।क्योंकि अंग्रेजी सरकार पूरे विश्व में अपनी प्रभुत्व चाहती थी,वहां जापानियों ने भारतीय सैनिकों को बन्दी बना लिया।

इसी दौरान स्वतन्त्रता के लिए लड़ाई लड़ रहे उन वीर योद्धाओ में से,श्री रास बिहारी बोस, सिंगापुर पहुंचे और भारतीय बंदी सैनिकों को छुड़ाकर १६४२मे आजाद हिन्द फौज का गठन किया ।जिसमें स्वाभिमानी भारतीय सैनिक सहर्ष शामिल हो गए जिसमें नेतराम भी शामिल हुए। लेकिन यह सेना अधिक समय तक टिक नहीं पाई और जापानियों ने पुनः बंदी बनाकर तोपखाना जेल में डाल दिया।

इसके बाद शेर ए हिन्द सुभाष चन्द्र बोस अंग्रेजी सरकार के आंखों में धूल झोंककर सिंगापुर पहुंचे।वहां उन्होंने २२अक्टुबर १६४३ को आजाद हिन्द फौज का पुनर्गठन किया । उन्होंने अपनी सेना में शामिल होने से पूर्व तीन शर्तें रखी, कि मेरे साथ आजादी की लड़ाई लड़ने वालों को लंबी -लंबी तकलीफय भूख सहनी पड़ेगी तथा खून देना होगा।जो भी भाई जान से ज्यादा देशभक्ति व भारत माता के प्रति अपनी निष्ठा पर भरोसा रखता हो।वही इस फौज में शामिल हो।ये सभी बातें

जिस भाई को मंजूर हो वह मेरे साथ आ जाएं। नेतराम जी भी नेता जी के विचारों से प्रभावित हुए ,और उनकी सभी शर्तों को मान लिया।इसी के साथ वो आजाद हिन्द फौज के नेहरू बिर्गेड में शामिल हो गए।आजाद हिन्द फौज में रहते हुए उन्होंने वतन की आजादी के लिए बर्मा की रंगून जेल और पाकिस्तान की मुल्तान जेल बंगाल की गिरगिच्छा जेलो में कठोर यातनाएं सही।

रंगून जेल में इनके खाने के चावलो में चूना मिला दिया जाता था जो कि बिल्कुल खाने लायक नहीं होते थे। जब इस आजादी के यौद्धा को जेल से बाहर थोड़ा बहुत घूमाने ले जाया जाता तब वह कपड़े में छिपा कर उन चूनायुक्त चावलो को साथ ले जाते और कही थोड़ा बहुत पानी मिलता तो उनमें चावलो को डुबो डुबो कर खाने लायक बनाते।यही पर उनके साथी रागिनी कलाकार मेहर सिंह की मौत इन चूना मिले चावलो के खाने से हो गई थी।

बंगाल की गिरगिच्छा जेल में इनको भूखा रखा जाता था यह सेनानी पेड़ों की छाल खाकर अपना जीवन बचाते थे। बहुत कठोर यातनाएं उन्होंने इस जेल में सही थी। पाकिस्तान की मुल्तान जेल में जहां रखा जाता था वह बहुत संकीर्ण थी उस कोठरी में आराम से बैठा नहीं जाता था सोने की बात तो बहुत दूर। और भी अनेको प्रकार की यातनाओं का वर्णन वो अक्सर बताते थे।पर सत्य तो ये है, की जिनको वतन पर जान देनी हो,तो मुश्किलें कैसे रोकेंगी,वो दिवाने ऐसे थे जो,वतन को महबूब समझते थे।लेकिन अंग्रेजों की इतनी कठोर यातनाओ के बाद भी भारत माता का यह सपूत न उनके आगे झुका न ही संघर्ष से रुका। इनकी रिहाई मुल्तान जेल से ही हुई। नेतराम आजाद हिन्द फौज के सच्चे सिपाही वह कर्मठ देशभक्त यौद्धा थे जिन्होंने वतन की आजादी के लिए अनेक कष्ट एवं यातनाएं सही।

नेतराम की बहादुरी व भारत माता को आजाद करवाने के लिए १५ अगस्त १६७२को तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने राष्ट्र की ओर से ताम्र पत्र देकर सम्मानित किया। ताऊ देवीलाल ने भी उनको सम्मान सहित ताम्र पत्र प्रदान किया।१६६७ तत्कालीन मुख्यमंत्री बंशीलाल ने राज्य की ओर से ताम्र पत्र देकर सम्मानित किया।२६अप्रेल २००७को यह वीर सेनानी पंचतत्व में विलीन हुए। उसी दौरान उनके निधन पर हरियाणा विधानसभा में दो मिनट का मौन रखकर उन्हे सच्ची श्रद्धांजलि दी गई थी। नेतराम का देशभक्ति का जब्बा आज भी देश के जवानों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। देश के प्रत्येक आजाद नागरिक को उनकी देशभक्ति पर फख है। भारत माता के ऐसे सच्चे सपूत को शत् शत् नमन।

आज उनका परिवार भी उन्ही के मार्गदर्शन पर चल देश व समाज की,बुराइयों कुरीतियों से लड़ने के लिए शिक्षा व समाजसेवा के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहा है।उनके सबसे छोटे सुपुत्र राजेश कुमार जो पेशे से सरकारी शिक्षक है अपनी औपचारिक सेवा के बाद समाज सेवा में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं उनके समाज सेवा के उत्कृष्ट कार्यों के लिए अनेक संस्थाओ द्वारा सम्मानित किए जा चुके हैं।

राजेश कुमार
शिक्षक व सोशल एक्टिविस्ट
गांव-उन्हाणी, जिला -महेंन्द्रगढ़ (हरियाणा)

आरजू जिन्दगी की

जिंदगी की आरजू यू खिली मन में
अजब ही आगाज हुआ आदत में ।
आफताब की तरह यू चमक उठे रूप
न जाने किसकी आराइश उतरी रूह मे।
सुबह - शाम का पता नही
बस अहसास ने अपना कदा बनाया है ।
क्या भूल जाए उनको
खयाल उनका मन में यू गोते लगाए जाता है
ख्वाबओ को बोलो न आए यू रातो में
किसी की आरजू आखिर खिली है मन में
ऐ जिन्दगी थोड़ा धीरे चल हसरतें अभी बाकी है
कुछ लम्हे जिन्दगी से चुराना अभी खवाइश बाकी है ।

चंदा की चांदनी

बहुत लंबी रात है ,चाँद भी कुछ हमारे साथ है
बैठे है उनके आगोश में , न जाने कब उनसे मुलाकात हो ।
गुलजार सा हो गया अम्बर आज ,
कहि नूर न चुरा ले ये जनाब , बैठे है इंतजार में,
इस बादल की छाव में, तारे सिमट के आ गए ,
आज सारे इस संसार मैं ।
क्यों न इतराउ मे , क्यों न शर्माउ में,
खुबसुरती की इस चादर में ,क्यों न गुम हो जाओ में ।
दाग है तुझमे फिर भी ,नाप न पाया तेरी खूबसूरती कोई
बस यूं ही तारीफ मेरी भी करे कोई ।
सुंदरता का प्रतीक तुम को है माना ,
आज कुछ अफसाना बना के ही जाना ।
कल का पता नही तुम यू रिजा ओ गे ,
अफसोस न रह जाए कही , क्या पता छुप जाओगे ।
आज जी भर के अरमान निकलने दो ,
चांदनी की खूबसूरती में पिघलने दो ,
प्यार से प्यारा है कोई ये बात आज पता चलने दो ।
इस लंबी रात का जिक्र है निराला ,
खूबसूरती की इस चादर ने गजब कर डाला ।

मेघा सक्सेना

दूर छूट गया

सिर्फ दो दरवाजे थे
एक ने मुझे और
दूसरे को मैनें स्वयं
त्याग कर दिया।

खुले आसमान के नीचे
अपनी तन्हाइयों के साथ
ना जाने कब तक मैं
यूँ हीं बेमकसद बैठी रही

जन्मों का रिश्ता
एक पल में टूट गया था
मैनें खुद हीं स्वीकारा था
अपने आत्मसम्मान को
अपमान का एक घूंट भी
अब गंवारा नही था।

फिर मैनें लड़खड़ाते कदमों को
मजबूती से जमीन पर टिकाएं
और बरसों के मोह को
एक घूंट में जहर की तरह पी लिया
सामने दुनियाँ की भीड़ थी
मगर मैं उस भीड़ का हिस्सा
नही थी....मेरा आने वाला कल
मुझे आवाज दे रहा था
और मैं उस तरफ बढ़ती चली गई
जिधर से आवाज आई थी।

मैनें सच और झूठ के फासले को
एक साथ तय किया..सच मेरे साथ है
और झूठ दूर कहीं बहुत दूर छूट गया है।

'रश्मि अभय'

अभिनेता सुशांत

सुशांत तेरा अचानक यूँ इस तरह चले जाना,
क्यों एक पिता की लाठी को तू तोड़ गया।

तुझे गुलशन गुलशन कहते थे सब तुझे यहां,
सबका प्यारा, दुलारा था आखों का तू तारा।

कहता सबको आई, चाचा, भइया, दादा,
नेह, आकर्षण तुझमें था कूटकर भरा हुआ।

इकलौता तू सबकी आँखों का प्यार, तारा,
क्यों चमन से उजड़ गया गुलशन तू बेचारा।

इस तरह जाना तेरा यह सिद्ध कर गया,
तेरे हृदय की अथाह पाना मुश्किल कर गया।

जीवन में उत्साह से भरपूर रहा तू हरदम,
इतनी बड़ी समस्या को क्यों खुद पी गया।

न हम जान सके , न कोई और जान सका,
यूँ जाना बेवस तेरा , हमें मजबूर कर गया।

जीवन एक बार ही, मिलता है मेरे गुलशन,
क्यों नही समझ पाए, इसको भी जरा तुम।

जीवन संघर्ष ही होता है यही जीने का सहारा,
ऐसे जाना भी कोई जाना है, ये होता है गवारा।

आखिर ऐसी क्या बात हुई , क्यों तू चला गया,
था घर का चमन, घर, गांव में तू था गुलशन।

क्यों हम सबको अनाथ कर, तू यूँ छोड़ गया,
सोचा न कभी था हमने, सपने में भी ऐसा होगा।

उम्मीद थी तुझसे सभी, बुलन्दियों को छूने में
सबके दिलों से सारे बंधन, नाता क्यों तोड़ गया।

मालूम था , थी चांद पे बसने की इच्छा तेरी,
क्यों जमी पे हमको बिलखता बेकदर छोड़ गया।

अब जिये तो जिये हम सहारे किसके बिन यहां,
जीते जी हम सबको क्यों तू हमें मार गया।

तेरे लिए हजार सपने थे , सबने मन में थे संजोए,
क्यों हम सबको रोता, बिलखता यहां छोड़ गया।

तेरी याद में अब जिंदा है, मिटेंगे भी तेरी यादों में
मर के भी अमर रहोगे तुम, रोशनी बन चमकोगे।

विनम्र श्रध्दांजलि।

डॉ दिग्विजय कुमार शर्मा
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

एक नज़्म

दिल की गलियों में
टहलता अरमान है तू,
मेरे ख़्वाब -ए -ताबीर'
से अनजान है तू ।

तुझे उल्फत हुई जाने
कैसा दीवानापन ,
जमाइल' सा मेरा
इत्मीनान है तू।

खाक कर बैठी
इश्क में वजूद अपना ,
कैद सीपियों में है
शोला नादान है तू।

कर दी रूह फना इजाजत
भी ना ली तुझसे ,
मेरी मोहब्बत से खुदा हैरां
ना हैरान है तू।

कर ली बगावत दुनिया
से तुझे पाने की,
था कुछ खुमार बेशुमार
मेरा ऐलान है तू।

ताबीर- शुभ स्वप्न फल
जमाइल- खूबसूरत

सौम्या दुआ
हल्द्वानी
नैनीताल उत्तराखंड

आकर तुम मत जाना साजन, आकर तुम मत जाना

आकर तुम मत जाना साजन, आकर तुम मत जाना....
जब आँगन में मेघ निरंतर झर-झर बरस रहे होंद्य
ऐसे में दो विकल हृदय मिलने को तरस रहे होंद्य
जब जल-थल सब एक हुए हों, धरती-अम्बर एकम,
शोर मचाता पवन चले जब छेड़-छेड़ कर हर दमद्य
ऐसे में तुम आना साजन! ऐसे में तुम आना,
आकर तुम मत जाना साजन..........

कंपित हो जब देह, नेह की आशा लेकर आनाद्य
प्रेम-मेंह की एक नवल परिभाषा लेकर आनाद्य
लहरों से अठखेली करता चाँद कभी देखा है?
या आतुर लहरों का उठता नाद कभी देखा है?
चंदा बन के आना साजन! चंदा बन के आना,
आकर तुम मत जाना साजन..........

पल-प्रतिपल आकुल-व्याकुल मन, राह निहारे हाराद्य
तुम आये, ना पत्र मिला, ना कोई पता तुम्हाराद्य
फागुन बीता, बीत गया आषाढ़ कि आया सावनद्य
कब आओगे, कब आओगे, कब आओगे साजन?
सावन बनके आना साजन, सावन बनके आना,
आकर तुम मत जाना साजन...........

डॉ पूनम माटिया

फिर से राजतिलक कर दो

अखंड भारत के वीर सपूतों
शौर्य गाथाओं के शिल्पकारों
अश्व मेध के बुंदेलों
युद्धाभिषेक करो
तिरंगे को प्रणाम कर
मृत्युन्जय आवेग का कर वरण
प्रतिकार की क्रोधाग्नि से
शत्रुओं के अत्याचार पर
अभिमन्यु सा वार कर
वज्रघाती पैगाम दो
राष्ट्र के हो अभिमान तुम
अर्जुन सरीखे रणबांकुर
भीष्म प्रतिज्ञा लो
माँ के यशोगान को
प्राणों के अभिदान से
किस्से क्रान्ति के
फिर से गुंजायेमान करो
मत अब अभयदान दो
अनुपम शौर्य गाथा तुम्हारी
चंदन तिलक सा मान धरो
तुम्हारे रक्त का कण कण
समर्पित
राष्ट्र को प्रतिक्षण
कर्मण्य अधिकार्रष्य का वचन
दे गए गीता के कृष्ण
अब हर पापी का विध्वंस कर दो
अपने इतिहास को
फिर से राजतिलक कर दो
फिर से राजतिलक कर दो।

उमंग....

क्षणिक मनोवेग
आनंद का उल्लास
और ऊर्जा का अविरल प्रवाह
जंग की जीत का श्रेय
विजय श्री का पोषण
सहिष्णुता के सम्बन्ध सेतु की
अस्तित्वशीलता
वैभव,शौर्य, सुयश
श्री वृद्धि संग
उमंग
निर्मल नीर गंगा सी तरंग
तुम ही हो
मेरे राष्ट्र की नींव
इतिहास, वर्तमान और भविष्य
और
मेरे ग्रन्थों के अक्षर
तम से हटकर
हुए जो आत्मविभोर
ऋतुराज संग
नाचे मोर
खोल पंख
प्रकृति की उजले भोर
अंतर जगे जब उमंग
अंतर जगे जब उमंग।

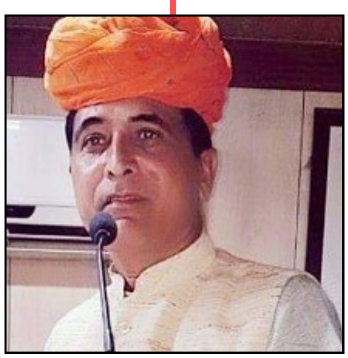

राकेश छोकर

गजल

ये कौन आकर मुझसे बात करता है
जख्मों पर मुझसे सवालात करता है

मैं बोलती नही हूँ कुछ भी लबों से
आंखों से गम बरसात करता है ।

वो मेरे दर्द सहलाता है बड़े प्यार से
जिन्दगी के दुख पर आघात करता है

एक उस से ही जिन्दगी में रवां है खुशी
वो फकत रूह से मुलाकात करता है ।

मैं तो अधमरी सी तड़पती इस आग में
वो ठंडी बयार के पैदा हालात करता है ।

वो अपने साये को भी नही छूने देता मुझे
मेरे जर्रे जर्रे में खुद को तलाश करता है ।

राखी

गजल

गम खुशी दौलत हवेली याद क्या रह जायेगा,
इस धरा का, इस धरा पर ही धरा रह जायेगा।

बाँटने तेरी वसीयत सब कचहरी जायेंगे,
अस्थियों का ढेर तक, तेरा पड़ा रह जायेगा ।

आ भी जायेगा अगर कौवा मुंडेरों पर कभी,
खीर तेरे श्राद्ध की खाये बिना रह जायेगा ।

चार कांधे भी मयस्सर हो नहीं पायेंगे जब,
फिर बता तेरा कहाँ पर दबदबा रह जायेगा।

तुम उजालों को मिटाने की हिमाकत कर भी लो,
फिर भी मेरे दिल में इक दीपक जला रह जायेगा।

होश आयेगा खुमारी देर तक टिकती नहीं,
ऐसे ही तेरी अना का सिलसिला रह जायेगा।

टूट कर बिखरे मरासिम तो यहाँ पहले से थे,
जोड़ना चाहें भी तो इक फासला रह जायेगा।

वकत की जो भी नसीहत मानता सुनता नहीं,
वो यकीनन हाथ ही मलता हुआ रह जायेगा।

तुम यकीं करते नहीं मेरी किसी भी बात पर,
देख लेना एक दिन तन्हा खुदा रह जायेगा।

खुश्क मौसम है बहारें लौट आयेंगी मगर,
ये ‘शजर’सूखा हुआ सूखा खड़ा रह जायेगा।

विनोद सिंह नामदेव
“शजर शिवपुरी”
इन्दौर मध्यप्रदेश

हिन्दी की गूँज

गुलमोहर

झूलती साँझ, झूले पर उगा,
झुनझुनियाँ गुलमोहर....

उसकी आँखों में सुनहले गुलमोहर की लाली छा गई.दिल में घुटन हुई.स्मृतियों का बवंडर उठा,अंखियों की तलैया में अश्रुओं का सोता फुट पड़ा।सामनेवाली छत पर झूलता झुला और वियुक्त खालीपन आंसुओं के मारफत मानो असबाब-सा उड़ पड़ा...

बांध पूर्णतः टुटा, जलप्रपात बह निकले, उससे पहले वह घर आ गई।चारपाई पर बैठ ग।.जब वहां से आखिरी बार गुजरी तब झुला रुनक झुनक सांकल से शोभायमान था।

दिन के निकलते ही परस्पर हो जाती आँखों की गुफ्तगू...शाम को कोफी के मग से उभरती बाष्प से गीली बातें...देर से शय्या में जाते ही स्वप्निल रातें!

नया शहर,नया काम,लोग अनजान.अब, यह, सब,परिचित मोहल्ला और पहचान बनकर नसनस में बस गया था, नशा बनकर उभरने लगा था !

शनिवार का दिवस था।अहमदाबाद के मुहल्ले में शाम जल्द ही उतर आयी थी। दफ्तर से लौटते हुए गली के नुक्कड़ पर अजीब सी चहलपहल देखी। टी.वी. पर समाचार सुलग रहे थे कि अहमदाबाद का पूर्वी क्षेत्र कौमी तनाव में होम हो चूका है। गली के नुक्कड से उभर रही बेचौनी और समाचार के तालमेल बिठाये, उससे पूर्व ही तेज चिल्लाहट करते हुए एक टोला सामनेवाले मकान की सीढियाँ चढ़ गया! एक धमाका...धुंए का गोला...कोफी का मग...झूलता पैर...और झुला बिलकुल विषम गति में झूल गया!

सफेद कुर्ता पाजामा लाल रंग में भीगा और यह लाल रंग वृत्ताकार फैल गया। पर्ण फूटे। सामनेवाले घर के आँगन में गुलमोहर पनपा...लालचटक।

उस लाली को कहाँ छुपाये ??

डॉ.नयना डेलीवाला,
अहमदाबाद.

योग की साधना

प्राचीन काल से ही पंतजलि ने योग की ओर संसार का ध्यान आकर्षित किया था, योग की सार्थकता जीवन में हमेशा रही है.आज योग विश्व योग हो गया है. बाबा रामदेव जी स्वदेशी ने योग को अन्तर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में विकसित किया है. आज हर एक मनुष्य के लिए योग महत्वपूर्ण है. योग मनुष्य को मनुष्य बनाता है और मन में विकसित बुरे विचारों को पसीने के रुप में शरीर से बाहर निकालता है.मन की एकाग्रता और चिन्तन शक्ति में वृद्धि होती है. शरीर को रोगों से मुक्त कर स्वास्थ्य रखता है. कहा जाता है- पहला खुश निरोगी काया. योग समाज को मजबूती प्रदान करता है पूरे विश्व को एकता के बन्धन में बाधता है. मनुष्य को तामसी प्रवृत्ति से मुक्त कर मानवीय व्यवहार, स्वभाव, सदभावना, प्रेम, स्नेह और ममत्व को विकसित करता है. योग मनुष्य के शरीर को तन्दुरस्त र खता है साथ ही आयु भी बढाता है.एक नयी सोच विकसित करता है पूरे विश्व में योग ने स्वदेशी का मंत्र दिया है.भारत देश को विश्व में एक नया पहचान के साथ आत्मनिर्भर बना है. योग हर मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण है सुबह से शाम तक जो भी क्रिया करता है सब योग ही है . शारीरिक भोग भी एक योग ही है वह चिंता से मुक्त कर आनंद की अन्तिम परिणति तक पहुचाता है. सबसे अधिक योग संसार में मजदूर और किसान जाति ही करती है इसलिए स्वस्थ रहती हैं. शहरों की अपेक्षा गाँव में स्वास्थ्य का प्रमाण अधिक है. योग प्रकृति के साथ मनुष्य के सहचर को मजबूत करता है. धरती की हरियाली बची रहेगी तब ही जीवन में योग का औचित्य रहेगा, हर मनुष्य को हमेशा योग कर अपने जीवन को स्वच्छ और स्वास्थ्य रखा जाए.आज पूरे विश्व में योग को स्कूल ध्कह्लेज और विश्वविद्यालयों में अध्ययन और अध्यापन के रुप में चल रहा है जो भारत के लिए गौरव की बात है, आज सारा जहान भारत की और देख रहा है.

(अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस २१, जून) -- :-

गोवर्धन लाल डांगी
शोधार्थी
चित्तौड़गढ़ राजस्थान

मेरी डायरी से

'शिक्षा बच्चों की'

आने वाले कुछ दिनों में स्कूल-कॉलेज और विश्वविद्यालय अध्ययन के लिए खुल जाएगें, बच्चों के इस वर्ष की पढाई में कोरोना विश्व महामारी की मार आ पड़ी है और पड रही है, पता ही नहीं कितना पाठ्यक्रम पूरा हुआ और अगली श्रेणी में प्रमोट कर दिये, ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन किया गया लेकिन उस प्रवासी मजदूर के बच्चों को कौनसी शिक्षा मिली. राह चलते चलते, घर आते आते जीवन का चिराग ही बूझ गया बीच राह में सडक पर कूचल गया. कुछ शहरों से गाँव पहुंचे बच्चों के सामने स्कूल और पढाई की समस्या विकराल होगी.किस स्कूल में पढें और प्रवेश ले, शहर से गाँव के घर में न छत सही है न खाने को कोठी में अनाज, पिता के साथ फिर मजदूरी करनी है.यह भी एक राष्ट्र व्यापी समस्या है

गरीब परिवारों के बच्चों के साथ कितना अन्याय है, निजी स्कूलों में बच्चे और उनके माता पिता दो पाटों के बीच पीस गए हैं पहले से ही आटा गिला है, फिर फीस कहा से लाए बिना मजदूरी के बच्चों को प्रवेश कैसे दिलाये.सपने पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय डह अब्दुल कलाम जी ने दिखाये थे, यूँ ही मिट्टी में पलित हो गयें.आज हमारे देश के स्कूलों में बेठने की पहले से ही अच्छी सुविधा नहीं है फिर छोटे से कमरे में कोरोना के बीच अध्यापक क्या करेगा. सरकार को दोष देगा, सरकार शिक्षक को दोषी कह कर निलम्बित कर देगी. ऐसे विपरीत हालात में बच्चों के भविष्य के साथ हमें समझोता नहीं करना है, स्कूल जूलाई नहीं अगस्त से चले तो चलने दे, हमारे बच्चे, हमारी प्रतिभा है, हमारे देश का भविष्य है, हमारे देश का हिमालय सा शिखर है.

लम्बे समय से गुरु और शिष्यो के बीच संवाद नहीं हुआ है, आनलाइन हुआ भी है लेकिन बहुत से बच्चों के परिवार के पास खाने के लिए दाने नहीं है फिर बच्चों को फोन कहा से दे.आज भी दस प्रतिशत बच्चे आनलाइन पढाई से अनभिज्ञ रहे हैं... कयी शिक्षक कोरोना में ड्यूटी करते करते परिवार को भी राष्ट्रीय हित के लिए भूल गए और अपने को बलिदान कर दिया,कयी शिक्षकों ने इस महामारी से लोहा लिया है, कुछ ने तो हार कर आत्महत्या कर ली. ऐसे विपरित परिस्थितियों में बच्चों का क्या दोष है, पेट के लिए आज सडक पर भी भीख नहीं मिलती है, श्वान भी आज गली मो. हल्ले में शोर नहीं करते हैं.मेरा देश बचा रहेगा तो हम फिर अपने पैरों पर खड़े हो सकेंगे...

'जीवन संघर्ष'

जीवन में यदि आंसू आए तो स्वयं को पौछ लेना चाहिए वरना जो भी आता है जीवन से सौदा करना चाहता है.अक्सर माता और बहनें इसकी शिकार होती मैंने देखीं है. जो आंसू पौछने के लिए आता है वही जीवन को राख में बदल देता है. अच्छे इंसान भी है जो संसार को तैरना साथ साथ सिखाते हैं, एक दूसरे के लिए जीवन के रंगमंच पर अपना फर्ज अदा करते हुए अपने आप को खफा देते हैं.इस समय लाकडाउन खुलने के बाद कयी तरह की समस्याएं सामने आएगी, हर वक्त माताओं और बहनों को संभलकर चलना है, एकांत वाले रास्ते से न गुजरे, इंसान के वेशभूषा में राक्षस भी हमारे साथ पनाह ले रहे हैं..... समय बहुत भयानक होगा क्योंकि लम्बे समय से सब एक दूसरे से अलग थे, जो ज्वालामुखी विस्फोट होगा उसका अंदाज लगाना हमारे बस का खेल नहीं है केवल आशंका जताई जा रहीं हैं. कयी हमारा जीवन इनकी ढाल न बने एक दूसरे के साथ भी रहे और सतर्क भी रहे, किसी की भावनाओं में बहे नहीं, बहुत से नकली आंसू भी बनाएंगे, हमें सावधान रहना है और जीवन के मूल्यों की प्रासंगिकता का भी हौस रखना है. मैं किसी को डरा नही रहा हूँ लेकिन जो मुझे अहसास हो रहा है उसी को आप सब के साथ ब्या कर रहा हूँ, हो सकता है मेरे कहनें से किसी का बचा हुआ जीवन बच जाए, समाज के सामने हमें सिर झूकाना पडे, घूट घूट कर जीवन को जीने से अच्छा है कि हम समय के साथ सझक रहे..

'मित्र एक धरोहर'

मित्र का स्थान चरणों में नहीं ह्रदय और बाहों में होता है, मित्र ईश्वर का एक नाम है, मित्र के लिए प्राणों की प्रवाह नहीं की जाती है। धन दौलत तो आती जाती रहेगी लेकिन मित्र जीवन का आधार है, प्राण वायु है, जीवन के विपरीत आंधी और तूफान से वही बचा सकता है।। उदय होते सूर्य को सब नमस्कार करते हैं और अपने अन्दर नयी स्फूर्ति पाते हैं, लेकिन अस्त होते सूर्य को कौन नमन करता है।। रात्रि में कौन सूरज की राह देखता है। जीवन का आनंद कच्चे धागे के सम्बन्धों में ही है। विश्व में एक मात्र भारत ही ऐसा राष्ट्र है जहाँ सम्बन्ध और रिश्ते पर परिवार और समाज

जहाँ सम्बन्ध को शरीर से नहीं, भावनाओं और आस्ता की पवित्र गंगा के समान माने जाते हैं वही मानवता और ईश्वर का बसेरा होता है।। राष्ट्र को वही सम्मान देना चाहिए जैसा हम अपने माता-पिता को देते हैं। मेरा राष्ट्र मेरा पिता है।। मेरे कहने का आशय राष्ट्र धर्म ही जीवन का सार है।। जो अपने माता पिता और पत्नी से प्रेम नहीं करते वे क्या राष्ट्र का सम्मान और समर्थन करेंगे।। इस संसार में पवित्र मित्र की कोई परिभाषा नही है, केवल एक अहसास है।। अंधेरी रात का सूरज , सौम्य चंद्रमा और धरती का पुत्र मित्र ही है।।,

‘संवेदनशील प्रकृति का अस्तित्व‘-

पर्यावरण धरती माँ का श्रृंगार है, उसका अपना सुहाग है, अपने जीवन का सिंदूर है. ऐसी पवित्र धरती माँ के हृदय को हम कैसे शून्य कर दे. एक माँ के आंचल का चिर हरण कैसे कर सकते हैं. अपनी माँ की भी माँ, नानी की भी माँ, सनातन धर्म की माँ. जिस आंचल में सारा संसार अपनी क्रिडा कर रहा है जीवित है उसके आंचल को ही हम उजाड रहे हैं. जहाँ हमारे जीवन का एक मात्र आधार ही धरती माँ की कोख है, उसे बचाना है. संसार का हर एक प्राणी या मानव जाति को धरती माँ की रक्षा करनी है.हर एक व्यक्ति एक एक पेड लगाएं और अपने परिवार का अभिन्न अंग मानते हुए सेवा करे, मनुष्य जाति का कल्याण इसी में है. हम पर्यावरण की वर्तमान समस्या को समझें और हल करें. प्रकृति के साथ अपना अटूट विश्वास और प्रेम जाग्रत करें. प्रकृति के साथ जीव जन्तुओं की भी रक्षा करनी है, उनके साथ मानवीय व्यवहार करें, वह बोलता नहीं है इसलिए उसका गला नही घोटे. कहा जाता है कि- जैसी करनी वैसी भरनी. हम आने वाली पीढ़ियों की भी चिंता करें . हमारी विरासत को बचा के रखें हिफाजत करें. हमें इस पवित्र धरती और धरती पर निवास करने वाले हर प्राणी की रक्षा करनी है. जीए और जीने दे. यदि धरती माँ के आंचल को हमनें चीरने का प्रयास किया तो मानव जीवन का नष्ट होना तय है.. हर देश पर्यावरण को बचाने का प्रयास कर रहा है लेकिन जमीनी स्तर पर कोई ठोस काम नहीं हुआ है, केवल कागज ही रंगे गए हैं. हमारे भारत में हर एक वृ क्ष की पूजा करने का विधान है, हम शास्त्रों के अनुसार जीवन जीते हैं, विश्व को भारत की ओर देखना चाहिए, -विश्व कल्याण के सिद्धांत को अपना हैं. सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः --

‘काल चक्र’

आज पूरी दुनिया कोरोना वाइरस महामारी के चक्र व्युह में फंस गयी है.घर से बाह जाना या किसी को स्पर्श करना यानि जीवन से हाथ धोना जैसा है. हमारी मृत्यु हमारे सामने ही दुनिया में तांडव मचा रही है. इस काल चक्र में फंसी दुनिया को बचाने का एक ही उपाय बचा है घर में रहें, एक दूसरे से दूर रहे, हम शरीर से ही दूर है.हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं, राष्ट्र हित सवा. ेपरि है, यदि राष्ट्र सुरक्षित रहेगा तो हम हमारे बच्चों का भविष्य सुरक्षित रख सकेगें. राष्ट्र हमारे लिए काम कर रहा है और हम राष्ट्र के लिए करें.इस नाटकिय जीवन को राष्ट्र के लिए समर्पित करना है और कर रहे हैं.इस महामारी से हजारों योद्धा अपनी परवाह किये बिना तलवार की धार पर चल रहे हैं.इस वक्त हमारी जिम्मेदारी है कि हम हर नियम का पालन करें.धर्म से पहले राष्ट्र ध ार्म है. मानवीय मूल्यों के रक्षक भक्षक कैसे हो सकते हैं, एक बार पुनः मानवीय मूल्यों की स्थापना करनी है.आज जीए और जीने दे का सिद्धांत फलिपूत होना चाहिए.हम जीवित रहेगें तब ही दुनिया का सुन्दर रंगमंच का नाटक देख सकेगें. सारे जहाँ से प्रेम हो सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः--------

गोवर्धन डांगी,

शोधार्थी लेखक

चित्तौड़गढ़ राजस्थान

जिंदगी

कई बार प्रश्न किया है मैंने
जिंदगी से
ऐ जिंदगी तू अकेली क्यों है
कभी जबाब नहीं दिया
बस -बस गम सुम सी ही रह गई
कहते हैं समय बहुत कुछ
सिखा देता है
मैंने भी सीखा है समय से
जो हो रहा है उसे होने दो
आपके हाथ में तो सिर्फ कर्म है
करते जाओ,करते जाओ,
करते जाओ ।

रुको मत,रुको मत,रुको मत
बस ए जिंदगी यही तेरा प्रश्न है
यही तेरा उत्तर है
जहां पर वक्त को दी जाय
एक अलग सी महत्ता
वहां इंसान का जीवन,
मैं समय हूँ, इससे जुड़ जाता है
बस यही है जिंदगी
बस यही है जिंदगी
आज का दौर ,आज का दौर
जिंदगी से कितना जुड़ा है
और
आज का दौर जिंदगी से
कितना दूर है
ये भी आप देखिए
चार पाई (धन) पाते पाते
चार पाई पर आ जाते हैं लोग
दौड़ते दौड़ते लोग,
अपनी ही जिंदगी को
कमजोर कर लेते हैं

दोस्तो----------
जिंदगी का फलसफा भी
यही है
क्योंकि
जिंदगी समझ में आ जाये
तो इससे बहतरीन कुछ नहीं
न समझ आये तो फिर
कुछ नहीं
ये जिंदगी है इसे जानो
समझो, पहचानो
जियो अपनों के लिए
जियो परोपकार के लिए
बस यही सब कुछ है

डॉ मीना शर्मा 'मनु'

कल्पना

इच्छाओं के सागर में डूबकर
सोचा मैंने कई बार
मिलते नहीं मोती हर बार
पत्थरों से पहचान होती गई बार-बार
अरमानों के बगीचे में कल्पना,
का पेड़ भी लगा लिया
दायित्वों की आंधी ने उसे
जड़ से हिला दिया
कल्पना थी,
बनू मैं भी एक पहचान
हर कोई जाने मुझे
हो मेरा भी नाम
कल्पना, कल्पना ही रही
हकीकत ना बन सकी
हकीकतों के इस भंवर में खोकर
मैं अभी इच्छित ना बन सकी
आस है जीवन का बहुत बड़ा सहारा
देखो कहां जाकर मिलता है किनारा।।

डॉ पुष्पांजलि अग्रवाल
हरिद्वार

खाली बैठी थीं औरतें

यह महज संयोग ही था
कि वे औरतें थीं
और खाली बैठी थीं

दरअसल पूरी पृथ्वी पर
सिर्फ वही औरतें थीं
जो ठीक उस वक्त खाली बैठी थीं
खाली बैठना ही उनका सबसे बड़ा गुनाह था

वे खाली बैठी थीं
इतनी खाली कि वे उस वक्त
न पोस्टर बना रही थीं
न कोई कार्ययोजना
न कविता लिख रही थीं
न पर्चे लिख रही थीं
न लिख रही थीं कोई नारा
किसी तख्ती या बैनर पर

वे नहीं कर रही थीं
छोटे छोटे नुक्कड़ नाटक भी
न ही गा रही थीं कोई जनगीत
आंदोलनकारी साथियों के साथ

वे इतनी खामोश थीं
कि उनकी खामोशी
उन्हें खल रही थी
जिन्हें बोलने के स्वघोषित
संवैधानिक अधिकार प्राप्त हैं

वे औरतें थीं
और सचमुच खामोश थीं
सभा को संबोधित करना तो दूर
नारे भी नहीं लगा रही थीं वे
और तो और किसी का
भाषण भी नहीं सुन रही थीं

शाहीनबाग
जहाँ आग और धुआं दोनों ही था
वे न लंगर में रोटियाँ बेल रही थीं
न बड़े बड़े कढ़ाव उतार रही थीं
न खुद खाना खा रही थीं,
न नन्हे बच्चों को खिला रही थीं
और तो और अपने टिफिन भी
नहीं खोले थे उन्होंने
पानी भी नहीं परोस रहीं थीं
यहाँ तक कि वे भूल गई थीं
दुधमुँहे शिशुओं को दूध पिलाना

वे तो बस अभी अभी आई थीं
जैसे तैसे घर से निकलकर
घर में ठीक से खाना पकाकर
पति को बच्चों को
घरवालों को
ठीक से खिला पिला कर
खुद दवाएँ खाकर
बुजुर्गों को खिलाकर
बच्चों को भेजकर स्कूल
कपड़े लत्ते ,साफ सफाई
रसोई के सब काम निपटाकर

और भी थीं कुछ इनके अलावा जो आई थीं
अपनी नौकरी के बाद भागते दौड़ते
अपनी छोटी मोटी दुकानें बन्द कर
समेटकर अपने काम काज
इतनी फुर्सत में
शाहीनबाग आने वाली
इन औरतों को
आखिर क्या कहा जाये

हाँ वे निपट खाली औरतें थीं
निठल्ली और कामचोर
यहाँ आकर भी खाली बैठें
यह जिन्हें गवारा न था
उन्हें बैठे ठाले
सलाह देने का हक तो बनता है
क्या बुरा किया उन्होनें सलाह देकर कि कुछ करो
पितृसत्ता का फर्ज ही तो निभाया है आखिर

हाँ वे खाली बैठी हुई
बेहद खामोश औरतें थीं
मगर प्रतिरोध की मौन मूरतें थीं।

शरद कोकास

मां

जिसके पास हर दर्द वो जख्म
का इलाज हुआ करता है
कहीं और नहीं सिर्फ माँ के पास
ये एहसास हुआ करता है

जिनके आँचल में मेरे लिए
हर एक सुख छिपा होता है
जिनकी साँसों में हमारे लिए
ही जान अटकी रहती है

बस एक माँ के पास ही
तो ये एहसास हुआ करता है।
हर एक जख्म का उसके पास
ईलाज हुआ करता है

मेरे हर गम का उनको पहले ही
भान हुआ करता है
बस एक माँ के पास ही तो
ये चमत्कार हुआ करता है

निक्की शर्मा 'रश्मि'
मुम्बई

नौकरी

अपने नयेपन में नौकरी उतनी ही अच्छी लगती है
जितना कि नया प्रेम,नई कमीज और नई सड़क
सदियों पुराने एक खेल में
नई गेंद की तरह उछलता है आदमी

समय के जिस्म से एक हिस्सा काटकर बेचते हैं हम
एवज में पाते हैं थोड़ा सा धन
जिसे बचे हुए हिस्से पर खर्च किया जा सके

अपने शुरुआती दिनों में
सुबह की धूप सी होती है नौकरी
ओस की बून्दों सी ताजगी लिए
ठंड में कम्बल ओढ़े जाने का सुखद अहसास देती
दोपहर में धूप सी प्रखर होती
बादलों में छुपती- छुपाती
असमय डूब जाने का खतरा लिए
चलती है अस्ताचल की ओर

इसकी अनिवार्य अर्हताओं में है बुद्धि
पतंग सा उत्साह और आकाश सी उमंगें
महत्वाकांक्षा इतनी कि नियोक्ता नाराज न हो
सच्चाई और ईमानदारी इतनी कि
झूठों और बेईमानों की आँख में ना चुभें
कुछ जरूरी- गैरजरूरी योग्यताओं के अलावा
नमक और मसाले की तरह थोड़ा आक्रोश भी
ताकि नौकरी में स्वाद बना रहे

इसमें इजाजत नहीं वर्जनाएँ तोड़ने की
लीक से हटकर चलाने की मनाही है
एक दुधारी तलवार पर चलने की तरह है यह
एक धार उनकी जिन्हें नौकरी नहीं मिल पाती है
एक धार उनकी जिन्होंने नौकरी देकर अहसान किया है

कुछ के लिए बाजीगरी है नौकरी
कुछ के लिए सुविधा है नौकरी
कुछ के लिए जिन्दगी के साथ साथ चलती है नौकरी
कुछ के लिए नौकरी के बाद भी चलती है नौकरी ।

शरद कोकास

तुम चिंता न करो मैं हूं ना

शादी से पहले पार्टनर का साथ बहुत अच्छा लगता है, ऐसा लगता है जैसे हसीन सपनों में उड़ान भर रहे हैं, जन्नत कहीं है तो बस पार्टनर की बाहों में ही। हजारों कसमें हजारों वादे खाए जाते हैं, साथ रहने के, निभाने के, हर दुख, तकलीफ, खुशी सब साथ निभाने के वादे ही वादेद्य पर क्या शादी के बाद भी यह हसीन सपना बना रहता है या कुछ बातें उन्हें तोड़ देती हैं।

शादी के बाद कई बातें हमारे सामने आती हैं जिससे हम अनजान रहते हैं, कई बातें परिवार की होती हैं। ज्वाइंट फैमिली है तो जिम्मेदारी ज्यादा बढ़ जाती है और अगर बच्चे आ गए तो और भी बढ़ जाती है और धीरे-धीरे इन जिम्मेदारियों के बीच रिश्ता कहीं ना कहीं दम तोड़ता नजर आता है।

कभी रिश्तो में उलझकर। कभी पैसों में उलझकर। पैसों को लेकर रिश्ता टूटने की वजह भी बन सकता है। शादी के बाद कई रिश्ते बदल जाते हैं और निभाना भी पड़ता है। खर्चे बढ़ जाते हैं, उन्हें संभालना भी होता है, पार्टनर का स्वभाव अलग हो तो और भी मुश्किल आती है।-वाद विवाद से बचकर इसे मजबूती से पकड़ कर रखना सही रहता है, नहीं तो मुश्किल हो जाती हैद्य इससे पार्टनर की परिपक्वता का भी पता चलता है, वो किस तरह रिश्ते को हैंडल करता है।

शादी के बाद पैसों की अहमियत समझ आती है। अगर आपका परिवार आप पर ही निर्भर है तो शादी के बाद काफी परेशानी बढ़ जाती है द्य अच्छा हो पार्टनर को पहले से ही इस बात से अवगत करा दें अगर, पार्टनर खर्चीला हो तो सोच विचार कर खर्च करने चाहिए और साथ में इन्वेस्टमेंट भी जरूरी है। पैसों की तंगी रिश्तो में दरार तो डालती ही हैद्य कभी-कभी रिश्ते टूट भी जाते हैं, शादी के बाद पति और पत्नी दोनों को ही एक दूसरे को समझना होगा, एक दूसरे की भावनाओं की कद्र करनी होगीद्य शादी में सिर्फ दो लोग नहीं मिलते, दो परिवार भी आपस में मिल जाते हैंद्य एक दूसरे के परिवार वालों की कद्र करनी होगी, दिल से अपनाना होगाद्य जब रिश्ते जुड़ जाते हैं तो कोई भी तकलीफ में इंसान इस भंवर से निकल जाता है, अगर सामने हाँथ थामने वाला कोई हो।

रिश्ते इसी की एक मजबूत कड़ी है। पार्टनर एक दूसरे का जीवनसाथी ही नहीं दुख-सुख का भी साथी होता है, बेहतर दोस्त होता हैद्य एक दूसरे को समझने वाला होता हैद्य इसे आदर और सम्मान दें, एक दूसरे को संपूर्ण बनाएं, एक दूसरे को पूर्ण करें, एक दूसरे के साथ की जरूरत हो तो साथी के साथ ही रहें। शादी तभी चलती है जब दिल की बात एक दूसरे की समझे, एक दूसरे को अधिकार दें।

मेल अपने ईगो को छोड़ दें और पत्नी के भावनाओं का कद्र करेंद्य पत्नी को भी अपने पति को समझना होगा, उनकी परेशानियों को समझना होगा, उनकी आर्थिक तंगी को समझना होगा, कभी-कभी जीवनसाथी ऐसे मोड़ पर होते हैं जब आर्थिक तंगी हो जाती है, उस समय सहारा बनना होगा अगर नौकरी छूट गई हो, कुछ अलग करना हो तो साथ दे उनके सपनों को समझे, उनकी परेशानियों को अपनाएंद्य जीवन के हर अंधेरे, उजाले में एक दूसरे को ‘‘मैं हूं ना‘‘ साबित करें।

जीवनसाथी ऐसा चाहिए होता है जो दोस्त की तरह बिल्कुल अनकहे दिल की हर बात समझ जाए और उसका सम्मान करें। एक दूसरे का सहारा बने, जिंदगी हसीन हो जाएगी क्योंकि प्यार, सुरक्षा, अपनापन शादी में ही मिलता हैद्य पैसों से नहीं, शादी का रिश्ता सिर्फ प्रेम विश्वास पर टिका होता है। शादी का भाव ही होना चाहिए एक-दूसरे के बिना अधूरे हैंद्य अनकही बातें सीधा दिल तक पहुंच जाए, एक दूसरे का सहयोग करें। दोनों गाड़ी के दो पहिए हैं, साथ चलेंगे प्यार से तो शादी की गाड़ी चलेगी। सफर हसीन हो जाएगा।

सब जिम्मेदारी निभाए मगर प्यार से और संजीदगी से। अपनेपन और सच्चाई से दिलों के रिश्ते जुड़े हैं तो एक दूसरे को सपोर्ट करें और एहसास दिलाएं हर पल, हर लम्हा चिंता ना करो , ‘‘मैं हूं ना‘‘। ,पैसों की तंगी को लेकर आपस में खटपट हो ही जाती है पर यह कोई बुरी बात भी नहींद्य सभी के साथ होती है, पर रोज नहीं होनी चाहिए और प्यार से सुलझा लेना चाहिएद्य आपसी समझ रिश्तों को बढ़ाता है, दूरी तनाव लाती है। प्रेमी प्रेमिका जब मिलते हैं, एक दूसरे की आंखों में प्यार झलकता है, मौसम कैसा भी होद्य बस एक दूसरे का साथ अच्छा लगता है, एक दूसरे को समझते हैंद्य शादी के बाद भी यही अहसास जिंदा रखें, उसे खोने ना दे। यह सच है जिंदगी में आर्थिक अभाव के बीच रोमांस हवा हो जाता है, पर इसे कायम रखने का काम महिलाओं का ज्यादा है जो हर घर की नींव होती है। आर्थिक तंगी में प्यार के बोल और समझदारी से प्यार को प्यार ही रहने देंद्य हर तकलीफ में एक दूसरे का सहारा बनें और हर वक्त महसूस कराएं‘‘ ‘‘तुम चिंता ना करो मैं हूं ना‘‘

निक्की शर्मा ‘रश्मि‘
मुम्बई

विलोम शब्द

आदि -अनादि वो ईश्वर निराकार।
अमीरी -गरीबी जीवन की परिस्थितियाँ है।

अपना- पराया संसार की जकड़न है।
अच्छा -बुरा व्यक्ति के विचार हैं।

आस्तिक -नास्तिक ईश्वर के प्रति अहसास है।
अनुराग -विराग मोह-माया और त्याग है।

अमर -मर्त्य जीवन के प्रति अहंकार है।
आदर -अनादर व्यक्ति के स्वभाव की बात है।

आसक्त-अनासक्त प्रेम की पीड़ा का परिणाम है।
अभ्यांतर -वाह्य किसी को पाने की तड़प है।

दोस्त -दुश्मन हर जन्म में साथ-साथ हैं।
सुख-दुख जीवन के विपरीत भाव है।

प्रश्न -उत्तर व्यक्ति को कर देता निरूत्तर है।
लाभ-हानि व्यक्ति की स्थितियाँ हैं।

शुभ -अशुभ व्यक्ति का विश्वास है।
उत्थान -पतन कर्मों का परिणाम है।

दुर्जन -सज्जन व्यक्ति का संस्कार है ।
सत्कार -दुत्कार व्यक्ति की पहचान।

निंदा -स्तुति ईर्ष्या और तृप्ति है।
जन्म -मृत्यु व्यक्ति का भाग्य है।

डॉ. अनिता सिंह
बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

कमाल करते हैं

बात होती जब वतन की वो सवाल करते हैं।
खामोशी से कभी आंखों से कमाल करते हैं।

तुम डरते हो बाहर के दुश्मनों से क्यों भलाय
वो भीतर छुप कर सरजमीं लाल करते हैं।

हैं कुरितियां कितनी ही समाज में जो देखो तो
वो ढूंढ कर कुछ बातें रोकर मलाल करते हैं।

जब चुनाव था तो बहुत ही काम था जनता से
वादों को पूरा करने में अब कितने साल करते हैं।

फौज पर भी राजनीति की अब तो बारी आ गई
अपने नाम के लिए उनका भी इस्तेमाल करते हैं।

कामनी गुप्ता

कब्रिस्तान के बगल वाली लड़की

कब्रिस्तान के बगल वाली लड़की
चुलबुली सी
प्यारी सी
खनकती हँसी के संग
इधर - उधर
तितलियों सी मंडराती
सबको हंसाती , हंसती
किलोलें भरती हंसिनी सी .

वहां उसका होना
रोज एक नयी कहानी
की भूमिका गढ़ जाता है
दे जाता है कथानक
किसी उपन्यासकार को
भावभूमि किसी कवि को.

वो लड़की किसी दिन
जब होती है उदास
रुक जाता पत्तियों का
हिलना-डुलना
पक्षियों का कलरव
लहरों का तरंगायन
पास वाले तालाब में भी .

कभी जब ओ लड़की रोती
सुबह सारी पगडंडी
भींगी भींगी मिलती
कब्रिस्तान में मिलता
गहराया सन्नाटा
अनचाहा , अनायास

सभी मानते थे उसको अपना
वो भी ऐसे लगता था
कि किसी की बेटी है
किसी की बहन है
और किसी की प्रेयसी
प्यार और मनुहार
उसके गहने जो हैं .

जब बहुत दिनों से
दिखी नहीं वह
कब्रिस्तान के बगल वाली लड़की
माथे पर सिलवटें
आ गयीं
आँखे भींग गयी
अपनों की भी
उसके अपनों की भी
बड़ी प्यारी थी जो .

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

जर्द पत्ता

घर का दरवाजा
खोलते ही
फिर दिख गया है उसे
सामने वाले दरख्त का
बाहर पड़ा
एक जर्द पत्ता
हुआ करता था
अभिन्न हिस्सा
जो उस दरख्त का कभी
बूढा हो गया
बर्दाश्त नहीं कर पाया
हवा के तेज झोंके
बेदखल हो गया
नए पत्तों से ढकी शाख से
बेचौनी सी होने लगती है
यह देखकर
उसे अपने अंदर
अपनी बढ़ती उम्र के साथ
समझ नहीं पा रहा वह
अपने ही घर में शोर को
अचानक घबराहट से
संभालकर पसीने से भीगे
शरीर को अपने
उठा लेता है
कांपती अंगुलियों से वह
उस जर्द पत्ते को
संभालते हुए हथेलियों में
बंद कर दरवाजा
सिमेट लेता है
कांपते हुए अपने जिस्म को
फिर से
अपने ही बनाए घर के
किसी एक कोने में........................

जरुरत

जरुरत रहती है अखबार की
बहुत लोगों को आज भी
सुबह के समय हर दिन
लेकिन पढ़े जाने के बाद उसे
जरुरत नहीं रहती उसकी
रद्दी बन जाता है यह हर दिन.................

जरुरत मेरी भी है
अखबार ही की तरह कुछ
मेरे रिटायरमेंट से पहले भी थी
और आज भी है
मेरे ही अपनों को
लेकिन
जो आज सिमटकर रह गई है
पूरे महीने में केवल एक दिन.....................

जिंदा रखा हुआ है मुझे
हर महीने के उस एक दिन के लिए
लिखाए जाने के लिए कुछ
मेरे ही अपनों ने
टूट जाती है मेरे कमरे में पसरी
चारों ओर खामोशी उस दिन
उसके बाद मैं भी हो जाता हूं
पूरे महीने के लिए उस पढ़े हुए
अखबार की तरह
लेकिन
रहना पड़ता है अपने कमरे में
भूलकर अपनी हर जरुरत
भूलकर अपना अस्तित्व
पढ़े बिना ही मुझे
पढ़े हुए अखबार की तरह हर दिन..........................

सुधीर केवलिया

ताटंक छंद

आग लगी है जब सीने में, कब तक यूँ डरना होगा।
अब जो टकरायेंगे हमसे, उन सबको जलना होगा।

नीच नाच तू नाच न नंगा, हाँ तुझको मरना होगा।
ऐ! चीन तुझे अब दुनियां के, नक्शे से मिटना होगा।

घुसकर मारेंगे अब घर में, वार करेंगे सीने में ।
फख्र हमें तो तब ही होगा, इस जीवन को जीने में ।

तूने कोरोना फैलाया, मान गयी दुनियां सारी।
युद्ध करेगा तो इलाज की, वैकसीन होगी भारी।

रणभेरी बजने वाली है, होशियार रहना होगा।
सैनिक पूरा देश हमारा, चीन तुझे मरना होगा।

घुसी घुसाई आंखों वाले, हमको आंख दिखाते हैं।
कीट पतंगे भक्षण करते, शायद भिष्टा खाते हैं।

धधक रही है ज्वाला हिय में, उसमें तू जल जायेगा।
भारत हिला अगर थोड़ा तो, सारा जग हिल जायेगा।

छल से मार दिये जवान यूँ, लिए रॉड कर डंडों से।
आलम सारा अवगत है अब, तेरे इन पाखंडों से।

लिए तिरंगा हाथ चलो जय, जय हो भारत माता की।
जननी जनी जनानी जन सब, रखियो शान पताका की।

डेढ़ फुटा हड्डी वाले सुन! हमसे अब डरना होगा।
भारत माता के चरणों में, शीश तुझे धरना होगा।

ठान लिया है कोरोना पर, बात तुझे करना होगा।
दुनियां भर की लाशों का, तुझसे हिसाब लेना होगा।

बीस मारकर तीस मारखां, बनने तुझे नहीं देंगे।
तेरे भी चालीस मरे हैं, तुझमें भर भूसा देंगे।

जाल बिछाकर घात किया, प्रतिघात मिलेगा तुझको भी,
दम है तो आ जाओ सामने, जात बता दें तुझको भी।

विनोदसिंह नामदेव
''शजर शिवपुरी''
इन्दौर मध्यप्रदेश

गजल

अना में बेसबब लोगों पे उसका यूँ बिफर जाना।
लगा रख्खा है दहशत में इधर आना उधर जाना।

ये जीवन है जिओ इसको सदा जिन्दादिली से तुम
नहीं अच्छा है यूँ फांसी लगा के घर में मर जाना।

हरीमेनाज की मय का नशा कुछ और है साकी
नहीं अच्छा नशे में लड़खड़ाते उसके घर जाना।

बनाऊंगा यकीनन घर कहीं मैं दूर दुनिया से
कहाँ आसान है मेरा भी जिद से अब उतर जाना।

मिलेगा फिर कभी मौका मुसाफिर सोचना भी मत,
दियानतदार है तो जिन्दगी में नाम कर जाना।

लिये इच्छाओं की अर्थी यूँ अपने सर पै जाता हूँ
नहीं मंजूर खाली हाथ घर पर लौटकर जाना।

रुला देगी परिंदों को 'शजर' झूठी खबर मत दे,
भरी बरसात में अच्छा नहीं है उनका डर जाना।

अना = घमण्ड,
बिफर = नाराज, बेकाबू,
हरीमेनाज = प्रेमिका का घर

विनोदसिंह नामदेव
''शजर शिवपुरी''
इन्दौर मध्यप्रदेश

आधुनिक मानव समाज की एक सच्ची विवेचना - ''जिस्मगोई''

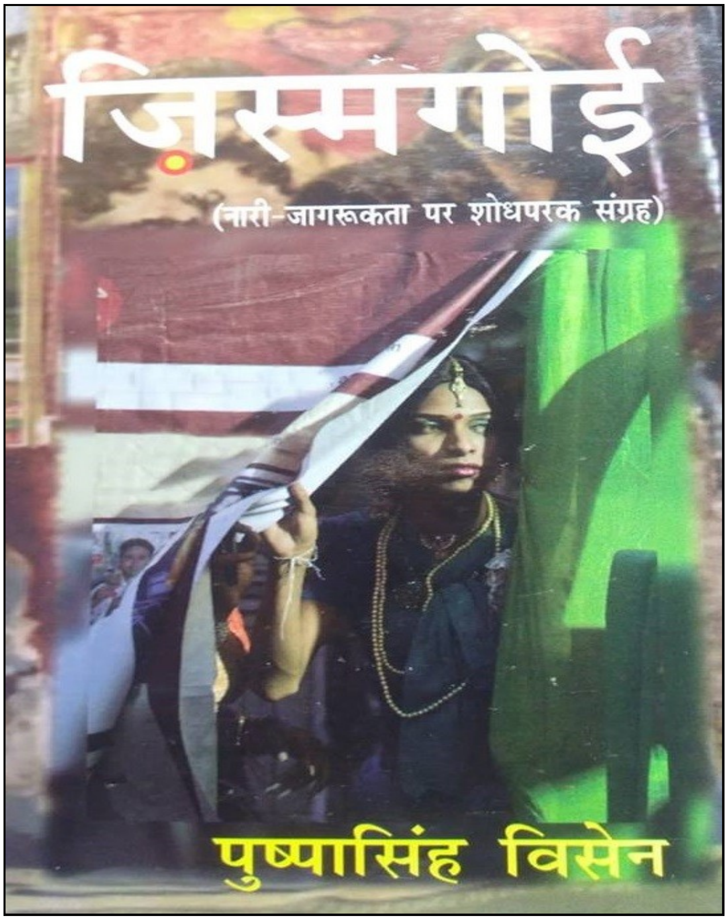

डॉ पुष्पा सिंह विसेन जी द्वारा लिखित ''जिस्मगोई'' नारी जागरूकता पर एक ऐसा शोधपरक संग्रह है जिसे बड़ी ही साफगोई से बिना किसी लाग लपेट के, बिना किसी पक्षधरता के लेखिका द्वारा आज के समाज मे नर-नारी के रिस्तों का सत्यपरक आईना बनाया गया है जिसमे आज के समाज की कटु किन्तु सच्ची तश्वीर उभरकर सामने आती दिखती है ।समाज मे ब्याप्त विभिन्न अवधारणाओं का सूक्ष्म निरीक्षण करते हुये बड़ी ही बेबाकी से आधुनिक समाज मे ब्याप्त भोग - विलास की नकारात्मक प्रवृत्ति के चलते तथाकथित नैतिकता और आधुनिकता को बेलौस विवेचना अन्यत्र दुर्लभ ही है। नारी का स्वरूप कहाँ से शुरू होकर पतन के किस स्तर पर जा पहुंचा है, बिन्दुवार सत्य उदाहरणो द्वारा निरपेक्ष भाव से उकेरना किसी लेखिका के लिए तो अत्यंत दुरूह जान पड़ता है, परंतु इस कसौटी पर डॉ पुष्पा सिंह विसेन जी की लेखनी कहीं भी डगमगाती नहीं दिखती है। लेखिका द्वारा समाज मे पुरुष वर्ग के स्वमभू श्रेष्ठता को भी चुनौती देने मे जरा भी हिचक नहीं दिखाई देती है। वहीं कुत्सित नारी मानसिकता पर भी लेखिका जोरदार प्रहार करने मे जरा भी नहीं हिचकती। पुरुष- स्त्री के रिस्तों के साथ साथ समाज मे बड़ी तेजी से पैर पसार रहे अप्राकृतिक रिस्ते जैसे लेस्बियन, गे और नर किन्नरों के रिस्तों पर कटाक्ष करते हुए उनसे अपनी असहमति भी जताई है।कहने का लब्बोलुआब यह कि देश के वर्तमान परिवेश के यथार्थ का चित्र ही तो खींचा है।दस अध्यायों मे विभक्त इस संग्रह मे लेखिका कई संवेदनशील मुद्दों पर ध्यान खींचा है। प्रायः सभी अध्याय कटु सत्य से भरे पड़ें हैं। भूतकाल से लेकर वर्तमान समय कि विषमताओं पर बेबाकी से अपनी राय व्यक्त कर रचना को सभी के लिए शिक्षाप्रद और पठनीय बना दिया है, साथ ही हिन्दी साहित्य जगत को एक अमूल्य निधि सौंपी है।

जिस्मगोई जैसा शोधपरक संग्रह प्रस्तुत करने के लिए संतोष और धैर्य के स्तंभो मे स्वयं को बांधकर जीवन जीना होता है । चारित्रिक सुदृढ़ता का एक ऐसा मानक गढ़ना होता है जिसे भेदने का सहसा कोई साहस न कर सके क्योंकि साहित्य की दुनियाँ भी किसी मामलो मे अछूती नहीं है। लेखिका की यह स्वीकारोक्ति आज के तथाकथित बुद्धिजीवी समाज के ऊपर एक प्रश्नचिन्ह खड़ा कर जाती है। ''जिस्मगोई आखिर क्या है- एक नश्वर मांस पिंड।" ऐसा कहते हुए लेखिका नियम संयम से समाज के चरित्र निर्माण और भविष्य निर्माण का संदेश भी देती है।

आज की आधुनिक नारी जो फैसन की अंधी दौड़ मे पूरी तरह से सारे मानदंडो को तिलांजलि देकर सिर्फ अपने सौंदर्य और कुछ पाने की चाहत मे सब कुछ न्योछावर करने को हर वक्त तैयार रहती है। नारी के इस स्वरूप पर लेखिका प्रश्न खड़ा करती है जो अपने फिगर के चक्कर मे अपने शिशु को स्तनपान के सुख से वंचित कर अपने बच्चे के लिए कठोर बन जाती है। ऐसा करके वह अपना और अपने बच्चे का भविष्य कमजोर करती है।

आज के समाज के लड़कियों की सोच को व्यक्त करने के लिए लेखिका एक सच्ची घटना का सहारा लेकर एक लड़की से कहलवा देती है- "ब्वायफ्रेंड का फैसन आउट डेटेड हो गया है। प्रतिदिन नए ब्वायफ्रेंड बनाओ, मजे लो और उससे तरह तरह के गिफ्ट लो। यही सब रह गया है।"

आज के महानगरों मे कुकुरमुत्तों की तरह पनप रहे अय्यासी के महाजाल मे गाँव का सीधा साधा पढ़ा-लिखा युवा का भी नगरबर बन जाना अपसंस्कृति को दर्शाता है। गाँवो से शहर की ओर पलायन का एक रूप रधिया और माधो के रूप मे सामने आते हैं। कहीं न कहीं अमीरी गरीबी की खाईं, धन लोलुपता और 'बदलाव' के अतिरेक का जीता जागता प्रमाण 'रधिया' बनती दिखाई देती है। जो वस्तुतः आज के समाज की सच्चाई भी है।

समाज मे बढ़ रहे यौन अपराधों का एक मजबूत कारण लेखिका लड़कियों के परिधान को मानती हैं। अपनी इस मान्यता के पक्ष मे एक उदाहरण भी देती है जो ''करे कोई भरे कोइ'' वाली कहावत को चरितार्थ करता है।

आज के युग की नारियों के बारे मे लेखिका कहती है- ''आज के युग की नारी तीर-तलवार तो चलाने के योग्य तो रही नहीं परंतु पुरुषों के पुरुषत्व का हनन कर उन्हे भी पंगु बना रही है।"

उससे भी दो कदम आगे बढ़कर लेखिका का यह कथन सहसा आश्चर्यचकित कर जाता है कि ''हमारा देश पुरुष प्रधान देश रहा है और रहना भी चाहिए।" यह कथन कहीं न कहीं नारी समाज कि तथाकथित आधुनिकता जिसमे सिर्फ और सिर्फ दैहिक सुख कि कामना है, उसके मुँह पर करारा तमाचा है।

लेखिका सभ्य समाज के लिए नारी को जागरूक और जीवन के प्रति सतर्क रहने का आह्वान करती है। लेखिका नारी को नींव का ईंट मानती है जिस पर सभ्यता-संस्कृति कि दीवार खड़ी की जा सकती है। एक महान व्यक्ति के इन पंक्तियों के साथ नारी सुचिता कि ओर सभी का ध्यान खींचती है-

औरत का जिस्म एक किताब है
एक पढे तो गीता व कुरान है
अनेकों लिखें व मिटाएँ ओ वह
एक ब्लैक बोर्ड के समान है ।

साथ ही वह प्रश्न खड़ा करती है कि ''यह नारी को तय करना है कि वह गीता व कुरान बन कर रहे या फिर पतन के दलदल का नारकीय जीवन जीये'',फैसला नारी के हाथों मे है।"

लेखिका द्वारा गणिका बनने के विधि विधानों की जो जानकारी दी गयी है, वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। उस विधि-विधान को पुस्तक द्वारा समाज के बीच ले आना अत्यंत साहसिक कदम माना जाएगा। नारियों पर थोपे गए सारे ही विधि-विधान पुरुषों द्वारा अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने का एक कुत्सित प्रयास मात्र है। राजस्वला अवस्था की प्रक्रिया से गुजरकर नारी पुरुष का वीर्य धारण कर उसे या समाज को पुत्र या पुत्री के रूप मे जो उफार सौंपती है, वह पुरुष वर्ग चाहकर भी नहीं कर सकता। यह सब कुछ नारी की श्रेष्ठता स्वतः स्थापित कर उसे महानता की श्रेणी मे ला खड़ा करता है। ऐसे मे इन विषयों पर नियम बनाते समय उस समय की विदुषी महिलाओं या ऋषि कन्याओं से बिना विमर्श किए पुरुष वर्ग की यह एक कुत्सित चाल ही काही जाएगी।

आज के समाज की नारी अब अबला नहीं है, आज वह विकास के हर सोपान का बरण कर रही है, हर क्षेत्र मे अपना परचम लहरा रही है। इसलिए नारी मुक्ति या विमर्श की सार्थकता तभी मानी जाएगी जब वह उन्मुक्तता और अपने स्वच्छंदता का उपयोग विचार पूर्वक करे। आज नारी समाज को पूर्ण चेतना के साथ चौतन्य रहने की आवश्यकता है। इस बात को लेखिका ने इस किताब मे बार बार उठाया है। साथ ही लेखिका यह भी मानती है कि-

''नारी पवित्र है,पाक साफ है। वह पूज्य भी है। ईश्वरीय प्रकृति ने तो उसे राजस्वला धर्म कि पवित्र भेंट देकर यह साबित कर दिया है कि वह सदैव पवित्र है और रहेगी।"

समाज मे पनप रहे अन्य रिस्तों जैसे पुरुष का पुरुष से रिस्ता, नारी का नारी से रिस्ता, नर का किन्नर से रिस्ता को लेखिका ने सिरे से ही नकार दिया है। हम सभी का यह मानना है कि नर और नारी ही एक दूसरे के पूरक हो सकते हैं। समाज मे बदलाव के लिए कुछ विचारणीय सुझाव लेखिका द्वारा दिये गए हैं। भविष्य मे उस पर विचार कि आवश्यकता तो है। लेखिका कि ऐसी सोच सम्मान के योग्य भी है।

यह किताब अपने मे आज के समाज के बारे मे बहुत समेटे हुए सभी के लिए पठनीय पुस्तक के रूप मे पाठकों के समक्ष है। इस प्रकार कि रचनाधर्मिता सदा ही सराहनीय होती है। हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक "जिस्मगोई" समाज मे एक अलग मुकाम हासिल करेगी। इसी के साथ मैं लेखिका डॉ पुष्पा सिंह विसेन को साधुवाद देता हूँ।

पुस्तक का नाम- जिस्मगोई
मूल्य- रू. ३६५.००
प्रकाशक- साहित्य केंद्र प्रकाशन
लक्ष्मी नगर नई दिल्ली-९२
लेखिका-पुष्पा सिंह विसेन

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

महामारी,साहित्य एवं समाज

साहित्य और समाज मानव जीवन के ऐसे दो कड़ी हैं जो हर स्थिति और परिस्थिति में मानव मूल्यों की रक्षा करने, जनकल्याण कार्यों को दिशा देने,विश्व को सही राह दिखाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।ये अभी से नहीं सदियों से चला आ रहा है। जब जब मानव मूल्यों में गिरावट, सृष्टि के जीवों में संकट और नकारात्मक विचारों वाले लोग हावी होने के प्रयास किये,या स्वार्थी लोगों के कुत्सित प्रयास हुए हैं, साहित्य और समाज उठ खड़ा हुआ है।अपने जिम्मेदारियों का इन दोनों कड़ियों ने पूरी ईमानदारी से निर्वहन किया है।साहित्य ने जहाँ राह दिखाई है,वहीं समाज ने अपने सभी कर्तव्यों को पूरा करने में तन, मन और धन लगा दिए। संकट कितना भी भयानक हो,राह कितना भी कठिन हो,अंधेरा कितना भी गहरा हो। समाज और साहित्य ने पूरी दुनिया और सम्पूर्ण चराचर जगत को उबारा है।

महामारी नाम से ही भय लगता है। ऊपर से पूर्व के महामारियों का घिनौना इतिहास हमें कंपित कर देता है। पहले भी महामारी दुनिया के अलग अलग हिस्सों में भिन्न भिन्न समयों पर फैलते रही है। हैजा,चेचक,इन्फ्लूएंजा आदि। लेकिन इसका फैलाव सीमित क्षेत्रों में होने से इन पर काबू पाया जा सका।ऐसा नहीं है कि इससे जनधन की व्यापक हानि नहीं हुई। लाखों लोग इन महामारियों के चपेट में आकर प्राण गंवाये हैं। लेकिन कभी भी ये महामारी एक साथ पूरे विश्व में नहीं फैली जिससे इसको रोकने या फैलाव को आगे बढ़ने से रोकने में जल्दी सफलता मिल गई। एक देश में ये महामारी फैली तो बाकी के अन्य देशों ने इसके नियंत्रण के लिए टीके का ईजाद कर लिए,जो सम्पूर्ण मानवता को बचाने में कारगर साबित हुआ।

Covid-19 कोरोना वायरस द्वारा चीन से फैली इस महामारी ने देखते ही देखते सम्पूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। शुरू के २-३ महीनों तक लोगों को इसके लक्षण, कारण,फैलने के तरीके,उपचार आदि को जानने समझने में लग गये। जब तक इसको जाना,समझा गया तब तक ये करोना वाइरस पूरी दुनिया के लाखों लोगों को मौत की नींद सुला गया,या फिर जीवित लोगों में अज्ञात भय का सिहरन पैदा कर गया। आज समूचा विश्व इस अघोषित और घातक बीमारी से पीड़ित है। अपने आप को विश्व का सबसे उन्नत राष्ट्र कहने वाले अमेरिका,इटली,चीन,स्पेन,फ्रांस,इजरायल,रूस आदि देशों में इस महामारी ने स्वास्थ्य सुविधाओं की धज्जी उड़ा दी है। लगभग हर देश चाहे वह छोटा हो या बड़ा, इस महामारी से बचने के तरीके खोजने में जी जान से जुटे हैं।

सन २०२० में इस महामारी कोरोना ने नये नये शब्दावली गढ़ दिए। जैसे- कोरोना वारियर्स,लह्क डाउन,कवारेंटाइन, रेड,येलो, ग्रीन,कंटेन्मेंट जोन,पी पी ई किट,सोशल डिस्टेंसिंग आदि आदि। भारत में जैसे ही इस समस्या की शुरुआत हुई।देश के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के द्वारा पूरे देश में समूर्ण लह्कडाउन कर सोशल डिस्टेंसिंग के पालन करने के निर्देश दे दिए। इन्ही उपायों के चलते प्रारंभिक पचास दिनों में हमारे देश में इस महामारी के फैलाव को रोकने में आशातीत सफलता मिली। लह्कडाउन और सोशल डिस्टेंसिंग से भारत जैसे विकासशील देश को, जहां की स्वास्थ्य सुविधा अपेक्षाकृत कमजोर हो,वहां अपनी स्वास्थ्य सुविधा बढ़ाने का अवसर और पर्याप्त अवसर मिल गया। लेकिन इसी के साथ ही एक नई चुनौती सुरसा के मुँह जैसे फैलकर हम सबके सामने आ गई। मानव और मानवता को जिंदा रखने की अबूझ पहेली मजदूरों के पलायन के रूप में देखने को मिली।

इसी से शुरू होता है साहित्य और समाज का दायित्व। साहित्य को तो जैसे इस महामारी ने एक नई ऊर्जा दे दी। आज के इस डिजिटल युग में जितनी तेजी से इस बीमारी की जानकारी फैली उतने ही प्रचंड वेग से साहित्यकारों के कलम ने इसके बारे में लिखना शुरू कर दिया। कविता,कहानी,संस्मरण,चुटकुलें,लेख,लघु कथा, गीत,भजन आदि आदि के माध्यम से साहित्यकारों ने लोगों को बांधकर रखा,व्यस्त रखा,नकारात्मक विचारों से बचाये रखा।पल पल की जानकारी देने के लिए डिजिटल क्रांति के इस दौर में अनेक प्लेटफार्म मौजूद है जिसका भरपूर उपयोग साहित्य जगत ने किया। पैदल चलते मजदूर,भूखे प्यासे, पाँव में पड़ गये छाले,खाने को भोजन नहीं,रहने को घर नहीं,सोने को बिस्तर नहीं,जाने को यातायात के साधन नहीं, जेब में फूटी कौड़ी नहीं। मानव की इस अंतहीन व्यथा को साहित्य ने ही अपनी लेखनी से समाज तक पहुँचाया है। समाचार पत्र,टीवी, मोबाइल आदि के माध्यम से मजदूरों के साथ साथ पूरे देश वासियों के विचार,उसकी समस्या, उत्पन्न तकलीफ और पीड़ा या फिर घरों में कैद लोगों की दिनचर्या,परिवार के साथ रहने की खुशी या विवशता को साहित्य ने बड़ी ही चतुराई और खूबसूरती से समाज तक पहुंचाया है। सम्पूर्ण लह्कडाउन के चलते विश्व पर्यावरण में होने वाले सुखद परिणामों को बताकर लोगों में,समाज में एक नई आशा का संचार प्रवाहित करने का काम साहित्य ने किया है।

आखिर में आता है समाज का चुनौतीपूर्ण दायित्व और जिम्मेदारी। इस मामले में समाज ने हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर मानवता को बचाये और बनाये रखने में अपनी महती भूमिका अदा की है। पैदल चलते जनसमूह के रेले को मुफ्त में भोजन,पानी देकर उसके निराशा भरी जीवन में उम्मीद की किरण को बनाये रखने में समाज ने अपना सब कुछ झोंक दिया। प्रधानमंत्री केयर्स फण्ड हो या मुख्यमंत्री सहायता कोष समाज के हर वर्ग और हर तबके ने अपनी क्षमता के अनुसार सहयोग देकर इस महामारी से लड़ने में सरकार का भरपूर साथ दिए हैं। अनेकों संस्थाओं,समूहों ने मुफ्त में भोजन पानी की व्यवस्था,मास्क की उपलब्धता सुनिश्चित किये, अपने निजी भवन,होस्टल,अस्पताल,लहज,आदि को मानव सेवा के लिए निःशुल्क खोल दिए। कोरोना वारियर्स की सेवा करने,उनके मनोबल को बढ़ाये रखने के लिए लोगों ने प्रधानमंत्री की अपील पर ताली, थाली बजाकर या करोडों दीप जलाकर अपनी सकारात्मक ऊर्जा प्रदान किये।

वास्तव में साहित्य और समाज जिस देश में भी जीवित अवस्था में है उस देश को कोई भी आपदा हरा नहीं सकती। इन दोनों स्तंभों के प्रकाश से अंधेरा अधिक दिनों तक टिक नहीं सकता। ऐसे देश के निवासियों में नकारात्मक विचार और भाव जन्म नहीं ले सकते,जहां साहित्य और समाज दृढ़ता से खड़े होकर वसुधैव कुटुम्बकम के लिए संकल्पित हों। साहित्य और समाज की सक्रिय जुगलबंदी महामारी को परास्त करने में निश्चित रूप से सफल होगी।

रामेश्वर प्रसाद गुप्ता
१५, ओमकार होम्स
राजकिशोरनगर,बिलासपुर
छत्तीसगढ़

कविता

कविता वही जिसमें प्रणय की धुन सुनाई दे
सुन्दर सलोनी सृष्टि की रुनझुन सुनाई दे
अपने पराये भेद सब दिल से मिटाये जो
ऐसी अनोखी अनकही सरगम सुनाई दे।

प्रत्येक अक्षर शब्द में मोती जड़ें से हों
हर एक छोटी बात के मतलब बड़े से हों
गुरू और लघु की हो व्यवस्था छंद के अनुसार
वक्तव्य में अनुभूति की प्रतिमा दिखाई दे।

सुर ताल के तट से बँधी जैसे नदी चले
उस भाँति मर्यादा लिए हर भाव-भूमि मिले
पाती लयश्रुति जिस तरह खोया निजी मुकाम
ऐसी गले के दर्द की कोई दवाई दे।

पद मित्रता का भाव हो माधुर्य का सगा
रस के प्रवाह में न कोई बाँध हो लगा
जैसे किसी पहाड़ पर कोई घटा चढ़े
उस भाँति कविता का नशा चढ़ता दिखाई दे।

हर गीत में आलाप का जिस भाँति होता नाद
हो दीप्ति ऐसी ओज की हो अर्थ का प्रसाद
कविता वहीं जो शम्भु की विभूति सी पवित्र
हर पंक्ति पर जिसमें समाज वाहवाही दे।

डॉ जयशंकर शुक्ल

प्रवासी मजदूर

बरसों पहले छोड़ गांव घर,
दूर नगर में डेरा डाला
महामारी की विपद बेला ने
हाल ये कैसा कर डाला ?

मजबूरी में शहर जो आए
दो जून मिलेगा अन्न- दाना
ढोल दूर का लगा था
प्यारा आज हुआ सब बेगाना

प्यारा लगता गांव आज जब
संकट में है प्राण पड़े
कोई नहीं यहां अपना है
रोटी के लाले आज पड़े

महानगर के भ्रम जाल में
भूल गया हर अपनों को
रोजी -रोटी सब छूट गई
ग्रहण लगा हर सपनों को

मां की ममता और डांट पिता की
खूब याद आते हैं आज
साधन नहीं तो पैदल ही
कोसों की दूरी तय करना है आज

कोरोना के क्रूर काल में
कराह रही है मानवता
यहां वहां सब लहक डाउन है
सिसक रही भारत माता

एक जुनून... बस एक जुनून...
हर हाल में घर अब जाना है
टूटे सपने, बिखरी दुनिया
अब गांव में ही सुख पाना है.

डॉ. शारदा प्रसाद
एसो. प्रोफेसर,
हिंदी विभागाध्यक्ष
रामगढ़ महाविद्यालय
रामगढ़ कैंट, झारखंड

राज की बात

शहर के तपते प्रहर में,
छांव देता कौन किसको।
शक के घेरे घूरते है,
ठाँव देता कौन किसको
नीर निर्मल,पीर उज्ज्वल,
नीड़ स्वर्णिम पांव जिसको।
संग मेरे चल के देखो,
देखना है गांव जिसको।

दिल की बातें थी बताई,
मानकर हमराज जिसको।
तीर उसने ही चलाई,
क्या बताये और किसको।
राज रखना दर्द अपने,
मुक्त कर दो तुम खुशी को।
चाह गर हमदर्द की है,
भूल जाना बेबसी को ।

चार दिन की जिन्दगी में,
थे सुने छल-छिद्र जिसको,
रेत मुट्ठी के थे सारे,
रख न पाए पास जिसको,
नेकियाँ कर भूल जाओ,
पूण्य कहते है इसी को,
रोक लो गर रोक सकते हो,
हृदय में तुम खुशी को।

रश्मि रामेश्वर गुप्ता,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

सीखने और सिखाने की बात हर जगह होना चाहिए-तुफैल अहमद

ओमान में रहने वाले प्रवासी साहित्यकार तुफैल अहमद जी पेशे से इंजीनियर और दिल से शायर और लेखक हैं।तुफैल जी की शिक्षा-दीक्षा दिल्ली में हुई। आप जामिया यूनिवर्सिटी से बैचलर आफ इंजीनियरिंग (गोल्ड मेडलिस्ट) और एसपीए दिल्ली से मास्टर आफ इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करके ओमान में कार्यरत हैं। शायरी से प्यार स्कूल के दौरान से ही था जो धीरे-धीरे बढ़ता ही गया ,फलस्वरूप आज तुफैल जी को एक प्रतिष्ठित शायर के रूप में हमारे बीच में हैं। भारत,ओमान ,दुबई और कुवैत आदि देशों में कई मुशायरों में मंच लूट चुके हैं। आपकी गजलों की दो म्यूजिकल एल्बम आ चुकी है और गजलें विश्वभर के तमाम पत्र-पत्रिकाओं के छपती रहती है। आइये जानते इस मशहूर शायर के बारे में कुछ और अधिक।

कपिल कुमार : ओमान में आप कबसे हैं,और ओमान से हिंदुस्तान क्या ले सकता है ,मतलब संस्कृति के बारे में है।

तुफैल अहमद : मैं पिछले १४ वर्षों से ओमान में कार्यरत हूं। यहां की संस्कृति से हमें प्रेरणा मिलती है कि मिल जुल कर कैसे रहा जाता है। हम सिसायत में उलझनें के बजाए अपने लक्ष्य की ओर कैसे अग्रसर रह सकते हैं। हम अनुशासित जीवन कैसे और कितनी आसानी से व्यतीत कर सकते हैं।

कपिल कुमार : हिंदुस्तान से वहाँ क्या आना बाकी है ,ओमान में ,जो हिंदुस्तान दे सकता है।

तुफैल अहमद : भारत में तो साहित्य का खजाना है। भारत और ओमान के रिश्ते बहुत गहरे हैं। यहां लाखो की संख्या में भारतिय रहते है। मगर भारतीय साहित्य अभी तक उस अनुपात में अरब जगत में नहीं पहुंच पाया है। भारतीय साहित्य का अरबी अनुवाद और अधिक होना चाहिए।

कपिल कुमार : आपने तो बहुत कुछ किया है वहाँ पर मिडिल ईस्ट में मुशायरे ,साहित्य के कार्यक्रम ,अभी आगे क्या कार्यक्रम हैं,क्या कुछ सोच रखा है।

तुफैल अहमद : मैं जब १४ वर्ष पहले यहां आया तो उस समय यहां पर केवल बड़े मुशायरे या कवि सम्मेलन हुआ करता था। यहां के स्थनीय कवि उन बड़े मुशायरे या कवि सम्मेलन में जाते थे। बड़े बड़े काविगन अपना रचना सुना कर चले जाते थे। स्थानीय लोग को सुनकर चले आते थे। उसके आगे बस शून्य ही सा था। स्थानीय लोगों के लिए साहित्य की गतिवधियां नाम मात्र ही थी। इस शून्य की रिक्ती पूर्ति के लिए हमने घरों में गोष्टी शुरु की। शुरु में बहुत के लोग थे । धीरे धीरे लोग जुड़ते गए और कारवां बनता गया । उसी कारवां का नाम है चसह। जिससे आज देश विदेश से बहुत से कवि जुड़े हुए हैं।हमारी कोशिश है कि ज्यादा से ज्यादा लोग इससे जुड़े हमारी एक ख्वाहिश है कि यह मुहिम जो हमने कवियों को जोड़ने की कोशिश की है जो हमने यह कोशिश की है कि जो ग्रास रूट लेवल के पोस्ट से उनको आगे बढ़ने का मौका मिले। और सिर्फ यहां पर नहीं हमारी कोशिश है कि हर देश में यह च्स्ळ की मुहिम पहुंचे ।

कपिल कुमार : आज के हालात में चीन की चाल के बारे में कुछ कहना चाहेंगे।

तुफैल अहमद : मेरे विचार से हमें यह लड़ाई अपनी भूमि की रक्षा के अलावा दूसरे स्तरों पर भी लड़नी पड़ेगी। कूटनीतिक लड़ाई लरनी होगी। आर्थिक लड़ाई लड़नी होगी। भारत चीन का बहुत बड़ा बाजार हैं। अगर उन्हें आर्थिक मार पड़े गी तो वह अपनी सोच बदलने पर मजबूर हो जाए गा।

कपिल कुमार : उर्दू साहित्य में शागिर्द का बड़ा महत्त्व है ,इस जरुरत को चंद शब्दों में कहना हो तो आप क्या कहेंगे।

तुफैल अहमद : न केवल साहित्य में बल्कि जीवन में भी हम अक्सर लोगों से सीखते हैं ,कुछ को आदर्श मानते हैं ,कुछ के बताये रास्ते पर चलते हैं। सीखना बहुत जरुरी है उसके लिए अच्छे उस्ताद की जरुरत होती है। हम हर समय हर जगह हर व्यक्ति से कुछ ना कुछ सीखते है। परंतु जब हम यह भूल करते हैं कि हम सोच लेते है कि हमें दूसरों से सीखने की आवश्यकता नहीं है, तो हमारा विकास रूक जाता है । मेरा यह मानना है कि ऐसी स्थिति में हम एक पलटू पर पहुंच जाते हैं। हमारे ऊपर जाने का स्कोप का अंत हो जाता हैं। इसलिए सीखने और सिखाने की बात हर जगह होना चाहिए ।

कपिल कुमार : उर्दू के अलावा आप और कौन-कौन सी भाषा में लि खते हैं ?

तुफैल अहमद : उर्दू के साथ-साथ मै हिंदी और अंग्रेजी में भी लिखता रहता हूँ ।

कपिल कुमार : तुफैल साहेब आखिरी सवाल हिंदी की गूंज जापान , और उनकी संस्थापिका रमा शर्मा जी के बारे में कुछ कहना चाहेंगे।

तुफैल अहमद : रमा जी से मेरी मुलाकात अभी कुछ दिन पहले आपके मंच पर ही हुई थी और एक ही मुलाकात में मुझे पता चला की कि रामा जी के विचार बहुत ही उच्च कोटि के हैं। अपने देश से दूर होकर भी वह वह भारतीय संस्कृति का दीपक जलाए हुई हैं। हिंदी की गूंज जापान में रामा जी जैसे लोगों की वजह से ही सुनाई पड़ रही है। एक ऐसे देश में जहां पर हिंदी भाषी बहुत कम है वहां पर हिंदी की साहित्यिक पत्रिका निकालना हिंदी भाषा की और हिंदी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा है। मेरी शुभकामनाएं रमा जी के साथ कि देश के बाहर जो हिंदी के विस्तार की कोशिश कर रही है उसने उन्हें कामयाबी मिले। अभी हमने सुना कह रमा जी की तबीयत ठीक नहीं है। तो मैं उनकी अच्छी सेहत के लिए दुआ करता हूं और आशा करता हूं कि वह जल्दी ठीक हो जाएंगी।

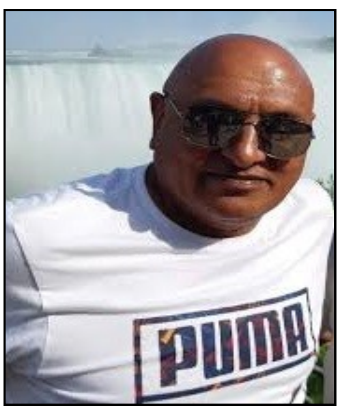

कपिल कुमार

एक और कविता

राग है ,अनुराग है,समष्टि का प्रयाग है ।
ह्दय की संवेदना का प्रतिफल विराग है ।
भाव है ,अनुभाव है,अभाव का प्रभाव है ।
सहृदय के अंतर्मन का नित संचारी भाव है ।

अद्‌भुत श्रृंगार शांत हास्य करुण भाव है ।
वीभत्स ,रौद्र ,वीर का भयानक प्रभाव है ।
क्रौंची के विलाप से निकला अनुष्टुप छंद है ।
बाल्मीकि के जीवन का सौरभ मकरंद है ।

तुलसी का दास्य भाव सुर की भक्ति है ।
जायसी ,कबीर ,पंत ,मीरा की अनुरक्ति है ।
प्रतिभा ,व्युत्पत्ति ,शक्ति नूतन अभ्यास है ।
काया में श्वास सरिस जीवन की आस है ।

कुंतक वक्रोक्ति जन्य वामन की रीति है ।
वनिता के रूप सदृश्य जीवन की प्रीति है ।
कामिनी कला का चिर मंगल वरदान है ।
तृष्णा कुबुद्धि भ्रम माया का भान है ।

यश अर्थ लोक ज्ञान शांति का संयोग है ।
आत्मज्ञान वीणा का अनुपम प्रयोग है ।
शब्दवेधी बाण के सहने की शक्ति है ।
वेदना है पीड़ा है हृदय की अभिव्यक्ति है ।

जीवन ही कविता का रूप प्रतिरूप है ।
भूतल पर मानव के मन का स्वरूप है ।
कुण्ठा विकारजन्य भावना का अंत है ।
भवजनित जीवन का सुखमय बसंत है ।

डॉ प्रदीप कुमार दूबे
सुल्तानपुर ,उत्तर प्रदेश

आलोचना का भविष्य उज्जवल है, ऐसा मेरा प्रबल मत है-डॉ० जयशंकर शुक्ल

(साहित्य के यथार्थ स्थिति पर डॉ० जयशंकर शुक्ल जी से एक साक्षात्कार)

अनिल जी- वर्तमान समय में साहित्य में यथार्थ की बातें की जा रही हैं य क्या हिंदी साहित्य में यथार्थ की दृष्टि से पूर्ववर्ती मध्यकाल या आदिकाल का अध्ययन नहीं किया जा सकता?

जयशंकर शुक्ल- अनिल जी आपका यह प्रश्न अपने आप. में एक परम्परा का प्रतिनिधित्व करता है। इसमें एक आन्दोलन की सूत्रपात को महसूसा जा सकता है। साहित्य को निरूपित करने वाले सोपानों में प्रमुखतया कथ्य, शिल्प एवं शैली महत्वपूर्ण हैं ।आपका प्रश्न कथ्य केन्द्रित है। वास्तव में जब हम कथ्य का शाब्दिक अर्थ देखते हैं तो वह हैदृयथा-अर्थ । जिसका अभिप्राय है, जैसा देखा, जाना, समझा, महसूसा जाय वैसा अर्थ।अब यह निर्धारण साहित्य के कर्ता पर जाकर रुकता है कि वह तथ्यों, सूचनाओं, सारणियों, सत्यों को किस तरह अन.ुभव करके अपने अनुभूति को कहाँ, कैसे, कब निरूपित करता है। उसे अपने निरूपण में अब कथ्य को किसी शिल्प व शैली में बांधना होता है। हिंदी साहित्य की प्रमुख विधाएँ, गद्य, पद्य, एवं मिश्रित (चम्पू) मानी जा सकती है। अब इन विधाओं के विविध रूपों पर विमर्श करने पर हमारे सामने शैलियों का प्राकट्य होता है। अनिल जी यथार्थ की चर्चा में हम गल्प एवं कल्पना को नजर अंदाज नहीं कर सकते। पूर्ववर्ती मध्यकाल अथवा आदिकाल में लेखन का स्वरुप हमे ध्यान से विवेचित करना होगा। उन काल खण्डों में रचनाकार हमेशा की तरह दो प्रकार के रहे हैं, एक राज्याश्रयी रचनाकार तथा दूसरे स्वतंत्र व जन धर्मी साहित्यकार।

अब इन कोटियों में यथार्थ चित्रण की जब हम बातें करते हैं तो दोनों ही यथार्थ का सटीक चित्रण करते हैं। वह यथार्थ जो उन्होंने अनुभव किया है। राज्याश्रयी रचनाकार जहां शासन सत्ता के लिए विरुदावलियाँ तैयार करते रहे वहीं लोक कवि आम जनता के बीच रहकर उसका यथार्थ निरूपित करते रहे। आज के दौर में उस काल का मूल्यांकन करें तो रासो के रचनाकार हों या जयदेव, विहारी, खुसरो अपने अपने कथ्यों के माध्यम से अपनी उपस्थिति बनाए हुए हैं, यह जन मूल्यांकन में अहसास किया जा सकता है। इन काल खण्डों के कवियों की कालजयिता आज भी अनुकरणीय बनी हुई है। विभिन्न विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रमों के अंतर्गत उनकी स्वीकार्यता उनके सार्वभौमिकता को बताती है, जो यथार्थता का पर्याय है। हाँ कल्पनाशीलता, अभिव्यंजना, गल्प, विवेचना, विवरण, संवेदनशीलता का 'अंकन-चित्रण' आरेखन रचनाकार द्वारा शब्द गुणों तथा शब्द शक्तियों के माध्यम से किया जाता रहा है। आज के परिदृश्य में यह कोई नया शब्द नहीं है। हाँ कुछ नव साहित्यकारों ने अपनी पहचान को विशेषी कृत करने हेतु जिस प्रकार से विविध विमर्शो का प्रचालन किया है, यथार्थ का नव-उद्भव उसी का एक हिस्सा मात्र है और कुछ नहीं।

अनिल जी- समकालीन काव्यधारा में आप यथार्थ को किस दृष्टि से देखते हैं? विशेषकर ऐसे समय में जबकि लोग साहित्य से ही सबकुछ पाने की अपेक्षा कर रहे हैं ?

जयशंकर शुक्ल -अनिल जी सबसे पहले तो समकालीनता को ही परिभाषित करने की आवश्यकता है। वस्तुतः काव्य आन्दोलन में समकाल.ीनता एक युगबोध को एक काल खण्ड को निरूपितध्व्यंजित करता है। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की प्रेमचंद की अध्यक्षता में लखनऊ में हुई बैठक। सभा में रचनाधर्मियों द्वारा स्वयं के लिए निर्धारित मानकों एवं भारतीय साहित्य को विश्व साहित्य के साथ जोड़ने के प्रयासों को प्रमुखता से सूचीबद्ध किया गया। यहीं से उत्तर छायावाद जो कि बच्चन, नरेन्द्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल अंचल तथा जानकी वल्लभ शास्त्री, शिवमंगल सिंह सुमन के सहभागिता में एक नवीन आन्दोलन के रूप में आता है और यहीं से निराला को अपना आदर्श मानते हुए काव्य की एक नवधारा का सूत्रपात होता है जो केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह के प्रतिनिधित्व में प्रगतिशील काव्य आन्दोलन के रूप में जानी जाती है। यह धारा अज्ञेय के द्वारा तारसप्तक व प्रतीक के संपादन के साथ प्रयोगवादी काव्य आन्दोलन में परिवर्तित हो गयी जहां इसमें रामविलाश, प्रभाकर माचवे, गिरिजा प्रसाद माथुर, भवानी प्रसाद मिश्र आदि की भूमिका प्रमुख रही। जगदीश गुप्त के नई कविता नाम देने तक यह आन्दोलन अबाध गति से चलता रहा । इसी के सामानांतर नवगीत का आन्दोलन भी सत्वर गति से आगे बढती रही जिसमे काशी की "नवेगीत की नौका" गोष्ठी 1951 में तथा तथा 1953 में "गीतम" का प्रकाशन वीरेन्द्र मिश्र द्वारा तथा साहित्य सम्मलेन इलाहबाद में नए क्राफ्ट पर सेमिनार में वीरेन्द्र वीरेन्द्र मिश्र का काव्य पाठ व आलेख पाठ प्रमुख रूप से देखा जा सकता है। 1958 में गीतांगिनी द्वारा राजेंद्र प्रसाद सिंह तथा 1964 में "कविता 64" द्वारा ओम प्रभावर ने इस आन्दोलन को आगे बढाया। इसी के साथ साथ नयी कविता के उपरान्त साठोत्तरी कविता तथा उसके बाद समकालीन काव्य की स्थिति आती है। अनिल जी आप किस समकालीनता की बात कर रहे हैं य कालखण्ड या युगबोध को प्रदर्शित करती काव्य रचनाएँ या आज के सन्दर्भ को व्यंजित करता काव्य लोक।

यदि सन्दर्भ आज का है, तो आज का काव्य परिवेश यथार्थ का आग्रही है। वह यथार्थतन केवल कथ्य में वरन् शिल्प, भाषा, भाव, प्रतीक, बिम्ब, शैली सब में यथार्थता का अनुमोदन मांगता है। दूसरे शब्दों में इसे नवता का पर्याय भी कह सकते हैं । जो यथार्थ की विशेषताओं, इसके प्रारूपों व इसकी विवेचनाओं को नहीं पकड़ पायेगा वह स्वयं को अधिक दूर तक जाने की ऊर्जा नहीं दे सकता। वह पुरातन व अतीत में खो जाने की भयावहता से से भी अनुप्राणित हो सकता है।

अतः यथार्थ प्रमुख मांग है य जो रचनाकार के लिए परम आवश्यक है।

अनिल जी- स्वतंत्रता पूर्व के हिन्दी साहित्य में किस तरह की स्थितियां कथ्य में रहीं, क्या आज के साहित्य का मूलस्वर राष्ट्रीय चेतना से आगे कुछ कहने में सक्षम हो सका है ?

जयशंकर शुक्ल- स्वतंत्रता पूर्व के हिंदी साहित्य में इसका प्रमुख स्वर, शोषण, दमन, अशिक्षा, बेकारी, गरीबी के प्रति आक्रोश, के रूप में रहा। उस काल में साहित्यिक चेतना से अनुप्राणित रचना धर्मियों की पुस्तकों, पत्रिकाओं, पत्रों को जब्त करने से लेकर उन्हें जेल भेजने तक की घटनाएँ सामने आती हैं। हिन्दी साहित्य के समानांतर चलने वाली अन्य साहित्यिक धाराओं-आन्दोलनों ने भी इस तरह के कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। बांग्ला साहित्य, मराठी साहित्य, अवधी व व्रज जैसे आंचलिक भाषाओँ के साहित्य में इस तरह की रचनाधर्मिता की छाप देखी जा सकती है। यह बात अलग है कि उनमे से बहुत कुछ अब भी शोध, अनुसंधान, प्रकाशन, प्रसारण की बाट जोह रहा है।

स्वतंत्रता पूर्व के गद्य साहित्य में नई जोश व उमंग देखने को मिलता है। काव्य में इसकी विभिन्न धाराओं में से मंच की धारा तो विपुल रूप से राष्ट्रवादी रचनाओं की वाहक रही। वहीं अकादमी काव्य धारा के प्रवर्तकों ने उस समय अपनी सामर्थ्य भर लेखन किया। अज्ञेय अपने लेखन के कारण ही जेल में ठूंस दिए गए। जैनेन्द्र ने उनकी प्रथम कहानी प्रकाशन में प्रेमचंद को उनका उपनाम अज्ञेय अंग्रेजों के दमनकारी नीतियों से बचने के लिए ही सुझाया था।

स्थितियां आज भी कमोवेश वैसी ही हैं। मंच व गंभीर लेखन के प्रति राष्ट्रवाद जहां काव्य में झूल रहा है वहीं गद्य में यह वामपंथ एवं दक्षिणपंथ की खांचों में विभक्त हो शिशक रहा है। आज राष्ट्र या राष्ट्रधर्म की बात कहने वाला साहित्य के बंटे हुए गिरोहों के मध्य में अस्पृश्य हो जाता है । परंपरा आज तिरोहित की जा रही है। अतीत को कोशना फैसन बन गया है। नैतिकता का श्राद्ध करने वाले कुछ गिरोहबद्ध रचनाकारों ने नग्नता को अपनी पहचान बना ली है। अनिल जी आज का परिदृश्य विषाक्त हो गया है। जीवन-मूल्यों की बात करने वाला आज प्रतिबद्ध नहीं है बल्कि धर्म, संस्कृति, सभ्यता और संस्कार को गली देने वाले महिमामंडित हो रहे हैं। साहित्य के इन सरोकारों के आधार पर व्यक्ति, समाज, समूह, समुदाय, कवि, लेखक ही नहीं बल्कि संस्थाएं, सरकार, सत्ता में भी अलग-अलग बंखारा हो गया है। चयन व वितरण के मानदण्ड रचनापरक नहीं वरन व्यक्ति परक हो गया है। तब से अब तक हमने इतनी प्रगति की है अनिल जी।

अनिल जी- डॉ० शुक्ल जी, आपकी दृष्टि में जनसामान्य की अपेक्षाओं को यथार्थ-धरातल पर रखने का प्रयास साहित्य की किस विधा में सबसे अधिक दिखाई देता है?

जयशंकर शुक्ल- अनिल जी विधा का चयन न केवल रचनाकार का विशेषाधिकार है वरंन् यह कथ्य केन्द्रित भी होता है। कहानी, लघुकथा, उपन्यास तीनों का शिल्प अलग अलग होते हुए भी मूल में सूक्ष्म से विराट की ओर एक यात्रा है। इसी तरह से हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं और रूपों के लिए कहा जा सकता है। कविता, कहानी, लघुकथा, लेख, साक्षात्कार, जीवनी, डायरी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, संस्मरण, रिपोर्ताज, निबंध पत्र, समीक्षा आदि सभी विधाएँ अपने आप में पूर्ण भी हैं, सम्बंधित भी हैं तथा अवलम्बित भी हैं। यथार्थ के धरातल पर विधा की कसौटी रचनाकार की दक्षता पर निर्भर करता है। एक लोक गायक जन जन का नायक होता है। प्रेमचन्द जैसा कालजयी रचनाकार हो तो कहानियाँ युग प्रवर्तक ही होंगी। निराला का स्पर्श पाकर शब्द आन्दोलन बन जाएंगें। आचार्य रामचंद्र शुक्ल की लेखनी हो तो आलोचना, निबंध व इतिहास वार्तालाप करते नजर आएगें। प्रसाद की कलम ऐतिहासिक पात्रों को नाटकों से न केवल जीवित करती हैं वरन कामायनी जैसी कृति द्वारा युग प्रवर्तक महाकाव्य का सृजन करती है।

ये सभी रचनाएँ यथार्थ के धरातल पर संदर्भित हैं। अनिल जी विधा नहीं कथ्य, शिल्प व शैली के साथ साथ रचनाकार की योग्यता, क्षमता, दक्षता, प्रयोगकारिता सभी कुछ मिल कर प्रभावी व श्रेष्ठ बनते हैं। यदि आप मेरी दृष्टि से इसका उत्तर चाहते हैं तो यह कविता में ज्यादा सहज रूप से सम्भव है।

अनिल जी-आज का साहित्य विभिन्न अर्थों में बंटा हुआ है य इस स्थिति में आलोचना विधा के भविष्य को लेकर आप क्या कहना चाहेंगे ?

जयशंकर शुक्ल- मैं आपके प्रश्न की भाषा से सहमत नहीं हूँ मित्र। साहित्य ज्ञान का अखण्ड स्वरुप है। और ज्ञान विभाजित नहीं किया जा सकता। हाँ, अपनी सुविधा और अवसरवादिता के कारण कुछ साहित्यकारों ने अपने अपने गिरोह बना लिए हैं। विभिन्न पंथों, वादों, ध्रुवों, खण्डों, क्षेत्रों, अंचलों, जातियों, सम्प्रदायों, समूहों, प्रान्तों के नाम, स्थान व स्वरुप में बंटे रचनाकारों ने आज अपने कृत्यों से साहित्य को न केवल मर्माहत किया है अपितु शर्मिंदा कर आहत भी किया है। आज पत्र-पत्रिकाओं के निर्धारण कर्ता में गिरोह बंद रचनाकार संपादक प्रकाशक आलोचक प्राध्यापक हो गए हैं। देश के विश्वविद्यालयों का उत्तर या दक्षिण खेमों में बँटना किस कोण से सही कहा जाएगा। लेखन से लेकर संपादन, समीक्षण, प्रकाशन तक में साहित्य के ये एजेंट सक्रिय हैं। विभागीय नियुक्तियों से लेकर प्रोन्नति तक में इनकी दादागिरी चलती है। अब इस स्थिति में भयावहता का अंदाजा आप बखूबी लगा सकते हैं, अनिल जी।

आपके प्रश्न के दूसरे भाग आलोचना पर विचार करने पर वह अपने परिवेश से प्रभावितध संक्रमित है। आज आलोचना प्रायोजित हो गयी है। बनारस हिन्दी विश्वविद्यालय के ख्यातिलब्ध महान साहित्यकार व रचना, शोध,आलोचना के शिखर हजारी प्रसाद द्विवेदी जी अपने

रचनाधर्मिता के लिए समर्पित रहे।आलोचना में पारदर्शिता के पक्षधर द्विवेदी जी ने नये प्रतिमानों का सृजन किया। बाद के कालखण्डों में उन्हीं के प्रिय शिष्य नामवर सिंह ने सारे परिदृश्य का वितान ही बदल के रख दिया। क्या कविता, क्या कहानी सभी कुछ नव्यता के पक्षधरों में अपने ढंग से व्यंजित करने में पूरे मानकों को प्रतिष्ठापित कर दिया। काव्यशास्त्र को निकाल कर समाज शास्त्र का प्रयोग, नैतिक मूल्यों की जगंह पर यथार्थ के गोपन पलों का वीभत्स चित्रण बन गयी है। और तो और लेखक, कवि अपनी शर्तों पर समीक्षा लिखने लिखवाने लगे तथा प्रकाशक उसे अपने मानकों पर छापने लगे। पत्र-पत्रिकाओं ने खुले तौर पर साहित्यकारों व विधाओं का बहिस्कार कर रखा है। ये सभी कुछ क्या गौरव के विषय हो सकते हैं।

नहीं कदापि नहीं। तो आलोचना को नए उपकरणों व मानकों पर आधारित कर इसे इसके समग्र स्वरूप में स्वीकार यदि नहीं किया जाता तो यह विधा मृत हो जाएगी, इसमें कोई संदेह नहीं।

अनिल जी– कहीं ऐसा तो नहीं कि आलोचना का ही अंत होने वाला हो ?

जयशंकर शुक्ल– भाई कभी भी बीज का नाश नहीं होता। जिस प्रकार बादलों के ढहने पर सूर्य देदीप्यमान हो उठता है, जिस प्रकार राख हटने पर दहकता हुआ कोयला अंगारे के समान उद्भाषित हो उठता है या जेर से आच्छादित गर्म जेर के हटने पर अपना स्वरुप संसार के समक्ष जाता है ठीक उसी प्रकार से जब प्रायोजन का तिलस्म टूट जाएगा, जब गिरोह बंदी की जंजीरें छूट जाएगी तथा जब पारदर्शी व तटस्थ आलोचना की आवश्यकता होगी तब वह अपने मूल को लेकर उपस्थित हो उठेगी।

अनिल जी आज भी सच्चे, खेमा रहित आलोचक हैं पर वे सामने नहीं आ पा रहे हैं। एक बात और आलोचना की विधा में कलम चलाकर श्रेय एवं प्रेय प्राप्त करने वाले रचनाकार जब स्वयं विधा और साहित्य से ऊंचे हो जाते हैं तब यह समस्या ज्यादा विकराल होने लगती है। मान-सम्मान-पद-प्रतिष्ठा जिस विधा ने लोगों को प्रदान किया बाद में उन्होंने अपने आपको स्वयं भू-साहित्य चिन्तक, निर्माता, विचारक, विद्वान घोषित कर दिया। ऐसे छद्म विद्वानों ने आज स्थिति लाने के दोषी हैं। विभिन्न तरह की संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, अकादमियों, पुरस्कार समितियों आदि में इनकी सक्रियता साहित्य व साहित्यकारों के लिए प्रेरक न बनकर अभिशाप बनता जा रहा है।

एक बात और सर्वमान्य मानकों तथा तथा आलोचना के उपकरणों का अभाव भी इसका एक प्रमुख कारण है। आज एक ही मानक पर समान तरह के उपकरणों द्वारा कविता, कहानी, लघुकथा, निबंध, आत्मकथा, डायरी, रिपोर्ताज उपन्यास आदि सभी की आलोचना की जा रही है, जो दुर्भाग्य पूर्ण है। रचनाकार प्रतिकूल टिप्पणियां सुनने के लिए तैयार नहीं है तथा दूसरी तरफ आलोचक संतुलन बिठाने में नाकाम सिद्ध हो रहा है, रिव्यू पैनल भी पत्रिकाओं के निहित स्वार्थ सिद्धि के साधन बनते जा रहे हैं। आज पंथों व खेमों में बैठे साहित्यालोचक किसी भी रचनाकार को उसकी एक पंक्ति के सन्दर्भ हीन आधार पर उसे किसी एक खेमे का सिद्ध करने को प्रतिबद्ध है। आज नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को लांक्षित करना, महापुरुषों को अशोभनीय शब्दों से तिरस्कृत करना, अतीत को नकार कर गैर देशों की मान्यताओं का गुणगान करना एक प्रचलन बनता जा रहा है।

इसके बाद भी आलोचना का भविष्य उज्जवल है, ऐसा मेरा प्रबल मत है।

अनिल जी– वर्तमान में साहित्य के सन्दर्भ में यदि विमर्शों की बात की जाय तो क्या साहित्य को विभाजित करना उचित है?

जयशंकर शुक्ल– भाई अनिल जी आपके इस प्रश्न का उत्तर मैंने प्रकारांत से पूर्व प्रश्नों का उत्तर देते हुए काफी हद तक देने का प्रयास किया है। विमर्श स्वयं को अलग पहचान देने की कोशिश मात्र है और कुछ नहीं। मेरे विचार से साहित्य का यह विभाजन साहित्य का नहीं वरन् साहित्यकारों का है। लोगों ने स्वयं के लिए केंद्र व परिधि का निधारिण कर उसके अनुरूप दायरे में बंधकर साहित्य लेखन का निश्चय किया है।

जब हम स्त्री-विमर्श की बात करते हैं तो इसका दो अर्थ हो सकता है। पहला स्त्री व स्त्रीजन्य संवेदनाओं को केंद्र में रखकर लेखन कर्ता तथा दूसरा अर्थ होता है स्त्री लेखिकाओं का समूह। पहला अर्थ समग्र है तथा दूसरा अर्थ संकुचित। यही अभिप्राय दलित विमर्श को लेकर भी दिया जा रहा है।

अनिल जी साहित्य का विभाजन वह चाहे विषय, कथ्य, शिल्प, शैली, भाषा, जाति, पंथ, अंचल, संप्रदाय किसी भी को लेकर हो स्वीकार नहीं किया जा सकता। अब तो यह पुरातन व नवीन में भी बंट रहा है। विमर्श शब्द अपने आपमें बहुत भ्रामक है और उससे भी विचित्र है इसका साहित्य में विभाजन हेतु प्रयोग। मैं यह विभाजन किसी भी कोण से उचित नहीं मानता।

अनिल जी– डॉ० जयशंकर शुक्ल जी तो फिर भी स्वानुभूति और सहानुभूति के प्रश्न पर आपका क्या विचार है य क्या ये साहित्य में प्रासंगिक है ?

जयशंकर शुक्ल– अनिल कुमार पाण्डेय जी आपका प्रश्न एक बड़े बहस को जन्म देता है । वास्तव में ये दोनों शब्द अपने साथ एक विचार, एक परंपरा, तथा एक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करते हैं । शाब्दिक अर्थ ग्रहण करें तो स्वानुभूति जहां एकांगी है, निजी है, व्यक्तिगतध्व्यहिरगत हैं वहीं सहानुभूति सापेक्ष है, सार्वजनिक है और समष्टिगत हैद्य साहित्य मूलतः इन्हीं दोनों का समुच्चय है द्य प्रारंभ से ही साहित्य इन्हीं दोनों शब्दों पर टिका हुआ है।

सम्पूर्ण वैदिक व उत्तर वैदिक वांग्मय स्वानुभूति पर निर्भर करता है, लेकिन जब हम उसकी व्याख्या करते हैं तो वह अपने विशद सन्दर्भों में

हमारे सामने व्यंजित होता है। है। मूलतः वह परंपरा आज भी उसी रूप में जारी है। लेखक अपने अनुभवों से ही अपने रचना संसार का सृजन करता है। स्वानुभूति इस मायने में विशेष प्राभावी हो जाती है। सत्य को हम अनुभव कर सकते हैं यह शब्द में नहीं वरन अर्थ में होता है। अनुभव को ही स्वानुभूति कह सकते हैं। व्यापक फलक पर हमारा चिंतन हमारे 'स्व' से प्रारंभ होकर 'पर' पर विराम पाता है।

एक लेखक को इन दोनों के मध्य संतुलन स्थापित करना अति आवश्यक होता है।हमें क्यों लिखना है यह जानने से पूर्व क्या नहीं लिखना है इसे जानना ज्यादा जरूरी है। इसी तरह से विचार के धरातल पर भी जाने हैं। भाई सहानुभूति हमारी आपके साथ हो सकती है लेकिन स्वानुभूति तो हमारी अपने साथ ही होगी य हाँ प्रेरक के रूप में अन्य उपादान हो सकते हैं।

अनिल जी– डॉ० साहब क्या साहित्य में रोजी रोटी के अतिरिक्त भी कुछ है, जिसे संदर्भित करने की आवश्यकता हो ?

जयशंकर शुक्ल– मित्र आपका प्रश्न समीचीन तो है पर इसकी भाषा अधूरी है। ''रोजी रोटी का साहित्य में सन्दर्भ'' इस वाक्यांश का स्वयं सन्दर्भ निश्चित करना होगा।भाई साहित्य में स्वप्रेरित रोजी रोटी, विषय के रूप में रोजी रोटी, अथवा साहित्य से रोजी रोटी, लेखन, संपादन, प्रकाशन, विपणन द्वारा रोजी रोटी यह स्पष्ट नहीं किया आपने। खैर, मैं दोनों ही दृष्टियों से इसका उत्तर देना चाहूँगा। प्रथम में दोनों विधाओं में रचनाकार विषय चयन में रोजी-रोटी को केंद्र में रखकर लेखन करें-अर्थात् औद्योगीकरण, शहरीकरण, आधुनिकीकरण आदि पर केन्द्रित विषय-वस्तु का चयन, विवेचन तथा लेखन। इसी के साथ इन प्रतिवादी सोपानों के कारण गांवों का क्षरण, समाज का टूटन, नए समाज का निर्माण, परिणाम स्वरुप संस्कृतियों का टकराव, सेक्स व हिंसा का नवीन आगाज, परिवार नामक संस्था का टूटन, तलाक, सह-वास सम्बन्ध (सपअम पद), अनाचार, अत्याचार, व्यभिचार को नए आयाम देती व्यवस्था उक्त सभी रोजी रोटी से ही जुड़ती नजर आती है। ऐसे में हम यदि युग, देश, काल, परिस्थितियो के अनुसार लेखन करते हैं तो उस साहित्य रुपी दर्पण में समाज अपना स्वयं का चेहरा देख सकता है। यदि लेखन व लेखक की सफलता का राज भी है। भाषा, शिल्प, विचार सभी कुछ आज के हिसाब से होना चाहिए ।

पुरातन का मिथ्या दम्भ व जयगान अप्रासंगिक व त्याज्य है य अतीत पर गर्व करें, पूजें पर लेखन में सोच समझकर प्रयोग करें। रोजी रोटी जैसे शब्द के द्वारा आपने विषय वस्तु सम्बन्धी बात करने को मुझे विवश किया आभार ! दूसरे फलक पर साहित्य के द्वारा कमाई यह लेखन, संपादन, प्रकाशन, पुरस्कारादि के द्वारा देखा जा सकता है। मित्र साहित्य को प्रासंगिक रहना है, लेखन व लेखक को फुल टाइम साहित्य सेवा करके परिवार का भरण-पोषण करना है। यह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है। जापान, जर्मनी, फ्रांस जैसे देशों में एक शोध-आलेख छप जाने पर लेखक को इतना कुछ मिलता है, जिसके प्रभाव से वह वर्ष भर अपना जीवन यापन आर्थिक रूप से कर सकता है। अंग्रेजी भाषा के लेखक व ले खन आज समाज में 'आइकान' बने हुए हैं इसी स्थिति को हिंदी साहित्य में स्थापित करने की आवश्यकता है। रोजी रोटी के अतिरिक्त बहुत कुछ है पर वह इसी से समर्पित व संदर्भित्त है।कहा भी गया है, ''भूखे भजन न होय कृपाला।''

अनिल जी– डॉ० साहब आज बहुत से रचनाकार गुमनामी में खो रहे हैं, गुमनाम हो रहे हैं।यदि ऐसा है तो इसकी वजह क्या है ?

जयशंकर शुक्ल– अनिल कुमार पाण्डेय जी आपके प्रश्न का उत्तर देने के पूर्व मैं एक शोध-निष्कर्ष की चर्चा करना चाहूँगा। लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान वि वि के पूर्व कुलपति प्रो० डॉ० राधावल्लभ त्रिपाठी ने एक शोध किया जिसके द्वारा उन्होंने कालिदास के समकालीन लगभग 452 कवियों, उनकी रचनाओं, उनकी प्रवृत्तियों को ढूंढ निकाला। अब उक्त शोध के आलोक में आप सोच सकते हैं कि ये गुमनामी अब या आज हो ऐसा नहीं है। अब रही बात आज के कालखण्ड में सक्रियधनिष्क्रिय रचनाकारों के गुमनामीं का तो आपके प्रश्नों का उत्तर विविध परिप्रेक्ष्यों में देना चाहूँगा-

भाई रचनाकार या रचनाएँ कालजयी तभी होती हैं, जब वे युग की आवाज को स्वर दे, यदि तत्कालीन परिस्थितियों, युगानुरूप विचार श्रृं खलाओं, देशकाल वातावरण केन्द्रित कथ्यों, विविधता पूर्ण शिल्प तथा भाषा का प्रयोग रचनाकार करने में समर्थ है, तो वह अपनी जगह बना लेगा इसमें कोई दो राय नहीं है। गोस्वामी तुलसीदास जी सार्वकालिक महान व विश्व के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनकी उक्त उक्ति को सन्दर्भ रूप में व्यक्त करने वाले रचनाकारों को बार बार सोचने की जरूरत है कि क्या वे दीमकों के लिख रहे हैं। स्वान्तः सुखाय का उद्घोष करने वाले ज्यादातर लोग अपनी गुमनामी के लिए स्वतः जिम्मेदार हैं ऐसा मेरा मत है।

लेखन के लिए विषय व विधा का चयन अत्यन्त आवश्यक है, जो श्रमसाध्य ह। हम आज शार्टकट ढूंढ़ते हैं। सफलता हेतु किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं। यहीं से हमारी दुर्गति शुरू हो जाती है। रचनाकारों का यश उनकी रचनाओं से होता है। कई प्रकाशक व संपादक या पाठक व आलोचक लेखक को उनके लेखन से ही जानते व पहचानते हैं। रचनाधर्मिता ही हमे व हमारे यश को दिग दिगन्त तक फैलाती है, बढ़ाती है। अर्थात, हम यदि अपनी रचनाओं के माध्यम से जाने जाएँ तो हम गुम नहीं होंगे परन्तु आज का परिवेश कुछ बदल सा गया है। अब लोग तिकड़म, खेमेबाजी, पद, प्रतिष्ठा व पहुंच के द्वारा अपनी प्रसिद्धि चाहते हैं, यह मिल तो जाती है शीघ्र ही पर उतनी ही शीघ्रता से समाप्त भी हो जाती है। हमारा तटस्थ मूल्यांकन हमारी रचनाओं और कृतियों से ही होता है।

इसके पक्ष में तर्क के रूप में कबीर को लिया जा सकता है।

कई शताब्दियों तक गुमनामी में खोए रहने वाला, युग सुधारक, युग प्रवर्तक रचनाकार अँधेरे में, गुमनामी में ही खोया रहा। उनको समाज में लाने का श्रेय जार्ज ग्रियर्सन को जाता है जिन्होनें उनके शबदों, साखयों, रमैनियों का संकलन करके उनपर आलोचनात्मक दृष्टि से एक पुस्तक लिखी। हम शुरुवात नहीं करना चाहते बल्कि हम भारतीयों की अनुकरण की आदत है। कुछ विशेष परिस्थितियों में हम किसी सत्य को तब मानते हैं, जब पश्चिम में बैठा कोई व्यक्ति उसे अनुमोदित कर दे। यह स्थिति हमारे लिए व हमारे साहित्य के लिए घातक है। बाद में महामना मदन मोहन मालवीय के आह्वान पर शांति निकेतन छोड़कर आए हिंदी के उद्भट विद्वान हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी कबीर नामक पुस्तक उनपर केन्द्रित लिखी और फिर लाइन लग गयी उनके वन्दन, अभ्यर्चन को। निराला को हम समग्र रूप से जान पाए इसके लिए हमे जानकी वल्लभ शास्त्री और रामविलास शर्मा का धन्यवाद् करना चाहिए ।बच्चन को हम अजीत कुमार की दृष्टि से देखते हैं।
अनिल यह विशद् विषय है जिस पर पूरी पुस्तक लिखी जा सकती है। हाँ शोध व अनुसंधान में लगे लोगों की जिम्मेदारी भी बनती है, जिससे वे बच नहीं सकते। रचनाकार अपना लेखन करने के साथ साथ उसके प्रकाशन के प्रति सजग रहे और शोधार्थी मूल्यांकन हेतु तत्पर । मेरी अपनी मान्यता है कि शोध विकास कमेटियों में विषयों का सूची बद्ध करने में विषय विशेषज्ञों की मदद ली जानी चाहिए। जैसा कि अन्य विषयों विभागों में है तभी हम भाषा, विचार व रचनाकार को गुमनामी से बचा पाएंगे।

अनिल जी- डॉ० शुक्ल जी आपके रचना फलक को देखते हुए यह पता चलता है कि आपने नवगीत, कहानी, उपन्यास, लघुकथा, साक्षात्कार, समीक्षा, संस्मरण, यात्रा वृत्त जैसे विविध विषयों पर प्रचुर लेखन किया है। पर मूलतः आप कवि हैं और यह प्रश्न समीचीन है कि कविता धीरे धीरे अपना अर्थ खोती जा रही है, आपका क्या मत है ?
जयशंकर शुक्ल- भाई साहब पूरी विनम्रता एवं आदर के साथ मैं आपकी बात स्वीकार करता हूँ और यह भी स्वीकार करता हूँ कि इस लेखन संसार को विकसित करने में आप जैसे लोगों का विशेष योगदान है। जिनके प्रति मैं कृतज्ञ हूँ तथा ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूँ । मेरा लेखन वह है जो करवा लिया गया है। कुछ परिस्थितियों तथा कुछ मांग ने मुझे सदैव लेखन हेतु प्रेरित किया। पत्र-पत्रिकाओं ने सम्पादकों-प्रकाशकों ने, पाठकों व रचनाकारों ने अलग-अलग ढंग से सरोकारों पर आधारित मेरे लेखन को सदैव गतिमान रखने में सहयोग किया। आज आपके माध्यम से मैं उन सभी का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद् ज्ञापित करता हूँ ।

मेरा अपना मानना है कि उक्त वर्णित विविध समूहों, संस्थाओं, व्यक्तियों का ऋण है मुझ पर जिसको कुछ हद तक नई प्रतिभाओं का सहयोग करके उतारा जा सकता है और मैं इसके लिए पूरी तरह कटिबद्ध भी हूँ ।यथा संभव इस तरह के प्रेरणा, परामर्श, संशोधन आदि के द्वारा मैं अपने रचनाकार को निरंतर नवता से जुड़े रहने का संयोग उपलब्ध कराता रहता हूँ । इस तरह की शाश्वत परंपरा साहित्य को मजबूती प्रदान करता है।

यह तथ्य सूर्या की रश्मियों जैसा अकाट्य है कि मैं मूलतः कवि हूँ, गीतकार हूँ । अनिल जी हमारे देश में कवि के लिए कई तरह की उपमाओं का प्रयोग किया जाता है।

अनिल कुमार पाण्डेय

मिस यू पापा

रीना ने जल्दी-जल्दी सुबह का काम निपटाया और बेटे को स्कूल भेज दिया। पतिदेव की तबियत कुछ ठीक नहीं थी, इस लिए वो अभी सो ही रहे थे। इत्मिनान से अपनी चाय ली और किचन के दरवाजे पर ही बैठ गईय क्यों कि आज फिर से आँगन में कुछ गौरैया आयी थीं। वो चहकते हुए इधर-उधर फुदक रही थीं और वह नहीं चाहती थी कि उसकी वजह से वो सब उड़ जाएँ, इस लिए वहीं बैठ कर उनको देखते हुए चाय पीने लगी। उसने धीरे से हाथ बढ़ा कर पास रखी थाली से थोड़े से चावल के दानें ले कर उनके आगे बिखेर दिया। पहले तो वो सब फुदक कर किनारे चली गयीं फिर चावल के दाने देख कर जल्दी-जल्दी अपनी नन्हें-नन्हे चोंच से चुनने लगीं। उनमें कुछ नन्हें चूजे भी थे जो शायद अभी उड़ना सीख रहे थे और घोसले से पहली बार दाना चुनने निकले थे। वो चूजे अपनी दाना चुगने की कोशिश कर रहे थे पर ज्यादातर नर और मादा गौरैया ही उनके चोंच मे दाना डाल रहे थे। रीना वहीं बैठी चुपचाप देख रही थी,उसका ध्यान नर गौरैया पर ज्यादा था। नानी बतातीं थीं कि नर गौरैया के गले में एक बड़ा सा काला धब्बा होता है जो मादा के गले पर नहीं होता। सारे दाने चुन लेने के बाद वह इध ार-उधर फुदक-फुदक कर और दाने तलाश रहा था, चूजे उसके पीछे-पीछे फुदक रहे थे। रीना ने थाली से कुछ और चावल ले कर उनके सामने छिड़क दिया। वो फिर से अपनी नन्हीं चोंच से दानें चुनने लगे। उन्हें दे खते-देखते ना जाने क्या हुआ कि अचानक ही मन में पापा का ख्याल आ गया। उनका ख्याल आते ही दो बूँद आँसू आँखों से ढलक कर गालों पर लुढक चले और वह पापा के ख्यालों में बहती हुई बचपन में उतर गयी ।

सभी बच्चों में कुछ ना कुछ बुरी आदत होती है, उसमें भी थी। जब वह कक्षा छः में पढ़ती थी तो उसे पैसे चुराने की बुरी आदत हो गई थी । वह रोज तैयार हो कर बैग पीठ पर लादती और बड़ी होंशियारी से पापा की पैंट की जेब में हाथ डाल कर जो भी फुटकर पैसे होते १४ , ४६ या ƒ रुपया निकल लेती और स्कूल चली जाती। उस समय पापा स्नान कर रहे होते थे और मम्मी पूजा पर बैठी होतीं इस लिए उसका काम आसानी से हो जाता। स्कूल में वह उन पैसों से चूरन की खट्टी-मीठी गोलियाँ, कैथा, इमली, संतरे वाला कम्पट आदि खरीदती और मजे से खाती।

कुछ दिनों तक तो ये सब बड़े आरम से चलता रहा। मजे की बात ये कि उसे जरा भी एहसास नहीं था कि वह कोई गलत काम कर रही है ना ही उसे ये लगता कि पापा कभी ये सब जान पाएँगें। कुछ दिनों तक ये सब यूँ ही चलता रहा। एक दिन वह तैयार हो कर स्कूल के लिए निकलने लगी। मम्मी पूजा कर रहीं थीं उनके ठीक पीछे दीवार पर लकड़ी की खूँटी थी और पापा की पैंट उसी पर टंगी थी। रोज की तरह पापा स्नान कर रहे थे, उसने धीरे से इधर-उधर देखा और पापा की जेब में हाथ डाल दिया। कुछ सिक्के उसकी मुट्ठी में आ गये, वह हाथ बाहर निकलने ही वाली थी कि तभी पापा बाथरूम से निकल कर बाहर आ गए। वह जहाँ खड़ी थी वहाँ से बाथरूम का दरवाजा साफ दिखाई देता था। अब वह और पापा एक दूसरे के आमने-सामने थे और हक्के-बक्के देख रहे थे एक दूसरे को।उसका एक हाथ पापा के पैंट की जेब में ही था। उसकी इतनी हिम्मत नहीं थी कि वह अपना हाथ जल्दी से बाहर निकाल ले। फिर क्या...! दोनों एक दूसरे को भौचक्के हो देखे जा रहे थे। एक ही पल में परिस्थिति बदल गयी थी।पापा सारा माजरा समझ कर बोले -''अच्छा..तो तुम ही हो..जो मेरी जेब से पैसे गायब करती हो..रुको अभी बताता हूँ..! इतनी गन्दी आदत तुम्हारे अन्दर कहाँ से आई ? मैं भी कहूँ कि मेरी जेब के फुटकर पैसे कहाँ गायब हो जाते हैं ? रोज परेशान होता हूँ कि कहाँ खर्च दिए मैंने!''

पापा बड़बड़ाते जा रहे थे और कुछ इधर -उधर ढूंढ भी रहे थे। वह वहीं जड़वत खड़ी थी। मन ही मन थर-थर काँप रही थी । मम्मी भी सब समझ चुकी थीं। बार-बार सिर घुमा कर उसे कड़ी नजरों से देख रही थींय पर वो पूजा से नहीं उठीं। पापा को एक पतली सी छड़ी मिल गयी। उसके पास आ कर उन्होंने उसके ऊपर छड़ी उठाई और कड़क कर पूछा, ''फिर करोगी ऐसा..?''

उसने डर के मारे जोर से आँखें मूँद ली और काँप कर बोली -- ''नहीं ।''

वह आँखे बंद किये हुए ही छड़ी से लगने वाली चोट की प्रतीक्षा करने लगी पर छड़ी तो पड़ी ही नहीं। थोड़ी देर बाद उसने डरते हुए अपनी आँखें खोली तो देखा कि पापा उदास बैठे हुए हैं और छड़ी जमीन पर पड़ी है। अब रीना को लगा कि उससे बहुत बड़ी गलती हो गई है पर उस समय पापा से कुछ बोलने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही थी वह । चुप-चाप अपराधी की भाँति वहीं खड़ी रही, थोड़ी देर बाद पापा ही बोले...-''आज के बाद मैं तुमसे बात नहीं करूँगा..तुम ऐसा करोगी..मुझे उम्मीद नहीं थी..।''

रीना को लगा कि पापा उसे दो चार छड़ी मार देते तो ज्यादा अच्छा था। वह उनसे बोले बिना कैसे रह पाएगी..! उस दिन स्कूल नहीं गई वह।किसी तरह दो दिन बीत गये। उसे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा था, पापा भी गुमसुम थे। उसने पापा को दुःख पहुँचाया था, अपनी गलती का एहसास हो गया था उसे। ऐसा लग रहा था कि पापा उसे जी भर के डांट लेते, दो चार छड़ी भी लगा देते पर यूँ चुप ना रहते..।

ये सजा उसके लिए असहनीय हो रही थी। इसी तरह तीसरा दिन भी बीत गया। पापा की चुप्पी उससे सहन नहीं हो रही थी। चौथे दिन उससे रहा नहीं गया, वह डरते-डरते पापा के पास गई और बोली..“सहरी पापा..!”

पापा ने देखाय पर बोले कुछ नहीं।

रीना ने अपने दोनो कान पकड़ लिए और सिसकते हुए बोली .. ‘‘ सारी पापा..! आगे से ऐसा कभी नहीं होगा..।’’

‘‘प्रोमिस..?’’ पापा ने पूछ लिया।

रीना ने कान पकड़े-पकड़े ही सिर हिला कर हामी भर दी।

उसके सिर हिलाते ही पापा ने उसे अपने सीने से लगा लिया और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसे समझाने लगे...‘‘आगे से कभी ऐसी गलती मत करना, चोरी करना बहुत बुरी बात होती है, तुम्हें पैसे की जरुरत हो तो मुझसे मांगो..।‘‘ और भी बहुत कुछ समझया पापा नेय पर वह तो पापा के सीने से लगी किसी और ही दुनिया में विचरण कर रही थी..।

पापा ने उसे क्षमा कर दिया था । उसके अंतर्मन से बोझ उतर गया था । उनके सीने से लग कर जिस सुकून की अनुभूति उसे हुई थी वो शब्दों में बयान नहीं कर सकती। पापा की दी हुई सजा का असर उस पर ऐसा हुआ कि आज तक उसने वो गलती दुबारा नहीं दोहराई यहाँ तक कि अपने पतिदेव की जेब में भी कभी हाथ नहीं डालती। उनकी जेब में गलती से कुछ नोट या सिक्के रह भी गये तो वो कपड़ो के साथ ही धुल जाते हैं। पता नहीं ये पापा की चुप्पी का असर है..उनके द्वारा उठाई गई छड़ी का डर..जो पड़ी नहीं थी उस पर..या उनकी दी हुयी सीख का प्रभाव..!

पापा का वो स्पर्श उसे बहुत याद आ रहा है आज..आँसू रुकने का नाम नहीं ले रहे.. अनायास ही उसके होंठ बुदबुदा उठे,

‘‘मिस्स यू पापा..अब भी मुझमे बहुत सी कमियाँ हैं..काश कि एक बार फिर से आप..!’’ बहुत कोशिश के बाद भी अपनी हिचकियाँ नहीं रोक पायी वह।

‘‘रीना..!’’

पतिदेव जाग गये थे और आवाज दे रहे थे। उसने जल्दी से आँसू पोंछा फिर उठ कर मुँह धोया, थोड़ा खुद को संयत किया तब तक दोबारा आवाज आ गयी - ‘‘रीना..!’’

अब पापा का साथ छूट चुका था । वह पतिदेव के कमरे की तरफ बढ़ गई। गौरैया और चूजे कब के उड़ चुके थे।

मीना पाठक

कानपुर

उत्तर प्रदेश

माँ गंगा का इतिहास

मिलन हिमालय का हुआ, मैना से इक बार।
दो कन्या गंगा -उमा, जन्मी उनके द्वार।

गंगा पावन रूप थी, पहुँच गयीं सुरलोक।
उमा तपस्या शिव मिले,सुधर गया इह लोक।

पुरी अयोध्या राज्य में,नहीं सगर सन्तान।
वंशज पाने के लिये ,त्याग तपस्या ध्यान।

नृपति सगर को मिल गया,भृगुऋषि का वरदान।
दोनों रानी से उन्हें, मिलें खूब सन्तान।

पहली रानी से हुए , असमंजस महाराज।
साठ हजार दूजी जने,सफल हुए सब काज।

असमंजस महाराज के,तेजस्वी अशुमान।
अश्वमेघ की घोषणा, चमक उठे दिनमान।

बात पची न इंद्र को, घोड़ा लिया चुराय।
उसकी रक्षा के लिये,सगर पुत्र भिजवाय।

षट सहस्र थे महावली ,पहुँच गये पाताल।
कपिल मुनि का आश्रम,पूरा दिया खंगाल।

अश्व बंधा पाया वहीं, जहाँ ऋषी ध्यानस्थ।
क्रोधित उत्पाती हुए, महावली मदमस्त।

यज्ञ विघ्न से बढ़ गया,कपिल मुनि का ताप।
भस्म ज्वाला मय हुआ ,साठ हजार का पाप।

चाचाओं की खोज में,निकल पड़े अशुमान।
पाया केवल भस्म को ,समझ गये श्रीमान।

उनके तर्पण के लिये ,मामाजी का ध्यान।
केवल सुरसरि ही करे, गरुण दिया ये ज्ञान।

अंशुमान महाराज ने,किया त्याग घनघोर।
किन्तु सफल ना हो सके, चर्चाएं चहुँ ओर।

भगीरथ पुत्र दिलीप ने, लेकर दृढ़ संकल्प।
ब्रह्मलोक को चल दिये ,करने कायाकल्प।

ब्रह्माजी को खुश किया, शिवजी लिए मनाय।
गङ्गा जी को सुख मिला, शीश जटा पर आय।

विन्दुसार से चल पड़ी ,धाराएं भी सात।
संग भगीरथ सातवीं, जो थी गंगा मात।

ऋषि जुन्ह के आश्रम , यज्ञ हुआ व्यवधान।
क्रोधित ऋषि ने पी लिया, गंगा का सम्मान।

ऋषिमुनि सब विस्मित हुए,है स्तुति एक उपाय।
मुदित ऋषि वर कर्ण से, गंगा जी प्रकटाय।

बेटी ऋषिवर जुन्ह की,नया मिला एक नाम।
उसी जान्हवी को सभी ,पूजे जैसे धाम।

पुनः निकलकर चल पडीं, भागीरथ के संग।
सगर पुत्र तर्पित हुए, मुदित लोक के अंग।

गंगोत्री से कर शुरू, सुरसरि का वृत्तांत।
गंगासागर तक कलम,लिखकर होती शांत।

डॉ राजीव पाण्डेय
वेबसिटी,गाजियाबाद

दो गज दूरी - बहुत जरूरी

एहितियात या फिर मजबूरी
दो गज दूरी,बहुत जरुरी।।

खतरा अब भी बढ़ा हुआ है
द्वार कोरोना खड़ा हुआ है
वहीं सुरक्षित है जो अपने
घर के अंदर पड़ा हुआ है।

ईश्वर की इच्छा भी है यह
और खुदा की भी मंजूरी।।

धंधा-पानी मंद हो गया
माना कुछ पाबंद हो गया
रोजी-रोटी के खातिर भी
बाहर जाना बंद हो गया।

किन्तु न जीवन से बढ़कर कुछ
पा लोगे कितना मजदूरी।।

कुछ दिन छोड़ो सैर सपाटा
करो दूर से सबको टाटा
कुछ दिन छोड़ो पिज़्ज़ा-बर्गर
घर में बैठो ,गूथो आटा।

घर की रोटी प्यार से खाओ
और कभी खाना तंदूरी।।

सरकारी फरमान मान लो
जीवन सबसे बड़ा जान लो
लह्कडाउन में रहकर घर में
कोरोना से जंग ठान लो।

जीत तुम्हारे मन में ही है
जैसे मृगा संग कस्तूरी।।

विनोद पाण्डेय
गाजियाबाद

बिना सेल्फी कैसा योग

सुबह-सुबह योग करते हुए लोगों को देखता हूँ,तो लगता है साक्षात जागरूक लोगों को देख रहा हूँ । साक्षात जागरूक वो लोग हैं जो टीवी पर किसी चीज का अस्तित्व देखकर तेजी से उसके प्रति लालायित होते हैं । मैंने यह बात इसलिए कही कि योग हमारे देश में सदियों से होता रहा है पर पिछले दस-पंद्रह सालों में इसकी लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है जिसका एक कारण टीवी है और दूसरे कारण टीवी पर आने वाले बाबा लोग । हम देशवासियों का स्वभाव इतना सरल है कि हम किसी चीज का अस्तित्व तब तक नहीं मानते जब तक वो चीज टीवी पर न दिखाई जाये । हम पहले से मौजूद योग को इतना कठिन समझते थे कि समझना ही नहीं चाहते थे ,अब जब आजकल भाँति - भाँति के बाबा ,भाँति-भाँति के कपड़े पहन कर हाथ,पैर,पेट,पीठ हिलाते हैं तो हमें योग का अद्‌भुत अनुभव प्राप्त होता है । कुछ लोग बाबा जी के योग ज्ञान पर भी सोये रहे और बाद में जब सुन्दर-सुन्दर अभिनेत्रियाँ योग की विभिन्न और विराट साधनाओं को साधते हुए अपना वीडियो सोशल प्लेटफहर्म पर साझा करने लगी तो सोये हुए महापुरुषों को महसूस हुआ कि आज की दुनिया में योग से खूबसूरत कोई चीज है ही नहीं । योग की प्रेरणा लोगों को ऐसे-ऐसे जगह से मिली कि ध ीरे-धीरे न केवल योग करने वालों की बल्कि योगाचार्यों की संख्या में भी तेजी से बढ़ोत्तरी होने लगी । हालत यह है कि ध्यान से आँकलन करें तो योग दिवस पर हर तीसरे घर में दो योगाचार्य मिल जायेंगे । वो खाली योग दिवस पर सक्रिय होते हैं,खूब योग करते हैं और साल भर लाभ उठाते हैं । ऐसा लगता ही नहीं बल्कि कुछ लोगों की तो जबरदस्त धारणा है कि योग दिवस पर योग करके सोशल मीडिया पर फोटो डालने पर वर्ष भर आपको कोई बीमारी नहीं होगी और हो गयी तो समझिये फोटो सही नहीं आयी थी ।

योग करना एक बात है और योग करते समय फोटो ि खँचवाना उससे बड़ी बात है । यह सामान्य मनुष्य के बस की बात नहीं । यह योग से बड़ा योग है या यूँ कहिये महायोग है । और अगर योग करते हुए आप सेल्फी लेते हैं तो इसे दिव्ययोग कहा जाता है । अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई विद्वानों द्वारा कठिन शोध के पश्चात हम इस निर्णय पर पहुँचे कि योग करते समय सेल्फी लेना ही असल में परमेश्वर से साक्षात्कार है ,बाकी सब बेकार है । खुदा का शुक्र है कि 'खुले में शौच मुक्त' का कोई दिन नहीं मनाया जाता वर्ना इंडियन लोग शौचालय से डायरेक्ट उसी स्टाईल में सेल्फी पोस्ट करते जैसे आजकल लोग योग दिवस पर योग करते हुए सेल्फी पोस्ट करते हैं । सेल्फी का अविष्कार करने वाला भी दूरदृष्टि वाला था उसे पक्का पता होगा कि कोई ऐसे ले न ले ,योग दिवस पर लोग अनुलोम-विलोम और कपालभांति करते समय सेल्फी जरूर लेंगे । पहले मै सोचता था कि सेल्फी केवल उन लोगों के लिए बड़ा लाभदायक है जो पहले जेब में कंघी रख कर घुमा करते थे और -

बाल सेट करते वक्त किसी की बाइक या कार के शीशे में देख कर अपना काम चलाते थे पर आज देखता हूँ सेल्फी के कई फायदे हैं । खासकर योग दिवस पर तो कमाल का इस्तेमाल है ।

पिछले साल से मैंने भी योग दिवस पर योग शुरू कर दिया पर अफसोस की बात थी कि फोटो नहीं ले सका । यह बात मुझे साल भर कचोटता रहा । मेरे सारे दोस्तों ने अपने फोटो जब मुझे व्हाट्स ऐप पर भेजते तो कसम से कलेजे पर साँप लोट जाता । लेकिन कभी-कभी गहराई में सोचता हूँ तो लगता है कि अच्छा हुआ कि मोबाइल भूल गया क्योंकि पिछली बार योग दिवस पर एक कांड हो गया था । मैं जैसे ही योग के पोजीशन में आकर हाथों से पैरों के अंगुलियों को छूने के लिए झुका कि धड़ाम से मुँह के बल गिर गया और गिरते वक्त मेरा ढीला-ढाला पजामा (जो मैं योग करने के लिए ही साल में एक बार निकालता हूँ) चरचरा कर फट गया स अब अगर मोबाईल होता तो सेल्फी भी होती और अगर सेल्फी न भी होती तो किसी को अपना मोबाइल देकर एक फोटो तो खिंचावाता ही खिंचवाता,तो सोचिये मैं बाद में कितना प्रसिद्ध हो गया होता । हालाँकि प्रसिद्ध तो मैं वैसे भी हो ही गया था क्योंकि जब बात बीवी को पता चली तो उसने योग के प्रति मेरी श्रद्धा का बखान करते हुए पूरे मोहल्ले में ये बात पहुँचा दी । योग दिवस के अगले दो-तीन दिन तक जब मै घर से बाहर निकलता तो लोग मुझे बड़े घूर-घूर कर देखते रहे । दरअसल मै जब भी कोई काम करता हूँ तो पूरी ईमानदारी से करता हूँ । योग के दौरान मेरे पजामे ने धोखा दे दिया तो इसमें मेरी क्या गलती है । योग में मेरी मेरी तल्लीनता देखिये , मेरा समर्पण देखिये ,मेरा लगन देखिये । किसी और के साथ यह घटना घटी होती तो वो लौट कर घर आ जाता पर मैं साधना में लगा रहा । योग भारतीय संस्कृति की पहचान है ,हम तो ऐसे लोग हैं कि अपनी संस्कृति और सभ्यता के दूसरों के कपड़े तक फाड़ दें तो अपना कपड़ा फट गया तो कौन सी बड़ी बात है । अपनी विरासत को बचाने में छोटी-मोटी कुर्बानियाँ देनी पड़े तो दे देनी चाहिए ।

वैसे एक बात और है सेल्फी या फोटो किसी के लिए जरुरी है पर किसी के लिए नुकसान दायक भी है । योग दिवस मनाने की परम्परा जिस सरकार ने शुरू की उसकी विचारधारा के लोग तो धड़ाधड़ फोटो पोस्ट कर रहे हैं पर विरोधी बेचारे योग को पसंद करते हुए भी नहीं कर पा रहे हैं । मैंने एक विपक्ष के नेता से पूछा कि आप योग दिवस नहीं मना रहे हैं तो उन्होंने कहा कि यह हमारे एजेंडे में नहीं है । मैंने कहा कि योग तो अच्छी चीज है तो उन्होंने तपाक से जवाब दिया कि हम नेता हैं अच्छी और बुरी चीज नहीं मानते ,हमारे लिए दोनों चीजें समान है । हमारे लिए सबसे महत्वपूर्ण हमारा एजेंडा है । वो बेचारे योग दिवस वाले दिन अंगड़ाई और जम्भाई लेने से भी बचते रहे कि कहीं कोई पत्रकार फोटो लेकर यह न छाप दे कि योग दिवस पर विपक्षी नेता भी योग करते हुए दिखाई दिए ।एक और विरोधी पार्टी ने तो अपने नेताओं को झुकने के लिए भी मना कर दिया कहीं इसे योग न मान लिया जाय । वैसे कुछ विपक्ष के नेता योग करने-कराने के पक्ष में थे मगर शर्त थी कि कोई फोटो न खींचें । उनकी समस्या फोटो थी । योग कोई समस्या नहीं थी ।

इसी देश में दो प्रकार के लोग रहते हैं । एक को फोटो और सेल्फी प्रिय है पर एक को नहीं । एक चाहता है कि हम जो कर रहें हैं उसका प्रचार-प्रसार हो पर दूसरा चाहता है कि हम जो कर रहे हैं उसे कोई न जाने । कुल मिलकर मामला अपने-अपने एजेंडे का है । परन्तु आम जनता तो सेल्फी लेकर ही रहेगी क्योंकि सेल्फी बिना सब सून है । आपने योग भी कर लिया और किसी को बताया भी नहीं तो ऐसे करने से क्या फायदा । योग साधना से आपको तो कुछ फायदा होने से रहा क्योंकि एक-दो दिन में न काया बदलेगी और न ही बीमारी भागेगी तो कम से कम एक फोटो तो होनी चाहिए । भविष्य में जब हम डींगे हाँकते हुए योग की बातें करेंगे तो सबूत के तौर पर सेल्फी ही काम आएगी । वर्ना तो आजकल आपको पता ही है बड़ी-बड़ी स्ट्राइक के सबूत माँगे जाते हैं तो योग दिवस पर योग मनाने की सबूत माँगना कितना बड़ा काम है । कल को आपसे आने वाली पीढ़ी योग या किसी भी काम की सबूत माँगेगी तो सेल्फी ही उनका भरोसा जीतेगी इसलिए सेल्फी लेते रहिये । समय के साथ सब खत्म हो जायेगा बस सेल्फी ही बचेगी।

विनोद पांडेय
गाजियाबाद

ये मोह-मोह के धागे

पुरानी दिल्ली स्टेशन पर उतरते ही राग को ताजगी का अहसास हुआ। गर्मी अभी आई नहीं थी और सर्दी जाने को थी। खुशगवार सा मौसम। रात भर की ट्रेन की खड़खड़ाहट से जैसे। निजात मिली हो। यहाँ उसका ननिहाल है। बचपन के बहुत सारे यादगार दिन ध्महीने बीते हैं। उसके मामा के बेटे की शादी है। मामी ने शादी से पंद्रह दिन पहले आने को कहा तो था पर दस दिन पहले ही पहुंचा जा सका। घर पहुंचे तो बहुत रौनक छाई हुई थी। होती भी क्यों ना ! एक तो शादी का माहौल और उस पर पंजाबियों की शादी ! वहां सभी को मालूम था कि राग टेलीविजन की एक संगीत प्रतियोगिता में भाग ले चुकी है। उसे बहुत सम्मानित दृष्टि से देखा जा रहा था। उसे खुद एक सेलेब्रिटी की तरह महसूस हो रहा था। यह अहसास उसे पिछले कई महीनों से जो माहौल झेलती आ रही थी उससे निजात दिला गया। अर्शिया और आरुषि दोनों मामा की बेटी बहनें ही नहीं थी बल्कि बचपन की सहेलियां भी थी। दिन में तीनों ने बचपन की यादें फिर से जी ली।शाम के लिए शहपिंग का कार्यक्रम भी बन गया।

शाम को लगभग छह बजे महल में आरुषि कार पार्क करने गई तो राग और अर्शिया यहाँ वहां का जायजा लेने लगी। राग की एक जगह नजर अटक गई। एक बोर्ड पर एक नई फिल्म के प्रमोशन की जानकारी थी। फिल्म में उभरते हुए नए कलाकार थे। शहपिंग से पहले वहीं जाने का निश्चय किया गया।

“ लो भई राग के काम की चीज है ये तो ....सभी नए -नए कलाकार है यहाँ, हो सकता है कि कोई इसे भी गाने का मौका दे दे !” राग की मौसी बोल पड़ी।

“ हां मौसी ! क्यों नहीं ! मिल भी सकता है मौका !” राग भी हंस पड़ी।

महल के शोर शराबे में जब जगजीत सिंह की गाई गजल राग के कानों में पड़ी तो वह उस ओर खिंचती हुई चल पड़ी। उसके साथ -साथ बाकी भी चल पड़ी। यह वही जगह थी जहाँ पर फिल्म का प्रमोशन होना है। जैसे -जैसे आवाज पास आ थी, उसे वह जानी पहचानी सी लग रही थी। मन की गहराइयों में उतरी जा रही थी।

“ हम लबों से कह ना पाए, उनसे हाल -ए -दिल कभी ,
और वो समझे नहीं ये खामोशी क्या चीज है
इश्क कीजिये फिर समझिए , जिंदगी क्या चीज है.....”

“ उफ ये आवाज ! मैं एक पल के लिए भी नहीं भूली ! अरे ! यह तो ! यह तो !!” चिहुंक पड़ी राग और गाने वाले का नाम गले में ही घुट कर रह गया। गायक का गाना खत्म हुआ तो तालियों की गड़गड़ाहट से महलका वह हिस्सा गूंज उठा। गूंजती हुई तालियां उसे दो साल पीछे ले गई। मशहूर टेलीविजन चौनल की संगीत प्रतियोगिता “ सुर -सरताज” में अलोक के गाए गीत पर बहुत तालियां और निर्णायकों ने खड़े हो कर सराहना की तो राग का ध्यान उस तरफ गया । वह भी उसी की तरह एक प्रतियोगी थी। मुंबई में सभी प्रदेशों से आए हुए प्रतियोगियों में से, अलोक उत्तर प्रदेश से था और वह पंजाब से थी। उसके गाए गीत को भी प्रशंसा मिली।

अगला राउंड जोड़ी बनाओ राउंड था। जिसमे यह करना था कि जब एक पुरुष गायक गायेगा तो उसका साथ महिला गायक को देना होगा, पुरुष गायक के गाए गीत को आगे बढ़ाते हुए ! तीसरा नंबर अलोक का था। उसने गाना शुरू किया,

“ कोरा कागज था ये मन मेरा ,
लिख दिया नाम इस पे तेरा ....”

राग ने सुर में सुर मिला दिया ,

“सूना आँगन था जीवन मेरा ,
बस गया प्यार इसमें तेरा ...”

सुर में सुर मिला तो गीत खिल गया। दोनों ही अच्छे गायक थे। अलोक ने गहरी नजरों से राग को देखा। राग की आँखों की भी चमक बढ़ गई। मंच पर समां बाँध दिया। हर कोई मंत्रमुग्ध सा सुन रहा था। और इस तरह मंच पर छह जोड़ियां बन गई। अब इन जोड़ियों को आने वाले दो सप्ताह तक साथ -साथ ही गाना था। पहले सप्ताह हास्य गीत और अगले सप्ताह रोमांटिक गीत गाना था।

एक गैस्ट हाउस में सभी के ठहरने की व्यवस्था थी। गीत तैयार करने के लिए रियाज की भी वहीं व्यवस्था थी। दोनों लहन में बैठे थे कि हास्य गीत कौनसा चुने !

“ अच्छा राग, गीत तो बाद में चुनेंगे, पहले जरा परिचय तो हो जाये !”

“ हाँ....मैं पंजाब से हूँ। आभा नगरी ज्यादा बड़ा शहर नहीं है पर बहुत अच्छा है। पिता जी का व्यवसाय है। एक भाई और एक बहन है। और इससे ज्यादा क्या परिचय है मेरा ! ”

“ तुम्हारी शिक्षा, रुचियाँ ?”

“ एम. ए.किया है हिन्दी में। रूचि केवल संगीत !संगीत ही पहनना -ओढ़ना और बिछाना भी !“ वह अलोक से अधिक खुलना नहीं चाहती थी।

“ अच्छा-अच्छा ! मैं लखनऊ से हूँ। नवाबों का शहर है तो ख्यालात भी वैसे ही हैं ! इकलौता वारिस हूँ। पिता जी राजपत्रित अधिकारी है। माँ गृहिणी है और मेरी संगीत टीचर भी है। सबसे पहले वही मेरा गीत सुनती है और कोई कमी हो तो सही करने को भी कहती है। मेरी दोस्त, टीचर सभी कुछ मेरी माँ ही है !” कहते हुए अलोक के चहरे पर बहुत प्यार छलक रहा था।

“ माँ का लाडला !” मन ही मन हंसी राग।

“ क्या हुआ, हंस क्यों रही हो ?” राग को गौर से देखते हुए वह बोला। वह चौंक पड़ी कि क्या वह अन्तर्यामी है ! जबकि उसके चेहरे पर तो कोई ऐसे भाव भी नहीं थे कि वह हंस रही हो। वह यह कह कर उठ के चल पड़ी कि गीत चयन कर लो तो फोन पर मैसेज कर दे।

थोड़ी ही देर में फोन पर एक अहडियो था मैसेज के रूप में। गीत पुराना था पर लोकप्रिय था। “ मेरे पिया गए रंगून किया है वहां से टेलीफून ......!”

“ इसे पुराने गीत ही क्यों पसंद है ! “ सोचते हुए अलोक को मैसेज किया कि गीत तो ठीक है पर उसे पुराने गीत ही क्यों पसंद है।

“ क्यूंकि पुराने गीत सीधे -सीधे दिल में उतरते हैं !” जवाब आया।

“ अच्छा ....!”

“ दूसरा गीत कौनसा होगा !”

“ वह तुम बताओ !”

“ सोचती हूँ ! लेकिन मैं नया गीत ही सोचूंगी !”

“ ओके !” कोई समस्या नहीं !

“ ओके !”

“ किस से बात कर रही हो ?” राग की माँ ने राग को फोन पर व्यस्त देख कर पूछा।

“ अलोक से। गीत का डिस्कसन हो रहा है ! माँ आप बताओ अगर आपको रोमान्टिक गीत गाना होता तो कौनसा गाती ? कोई नया गीत ही बताना !”

“ अगर मुझे गाना होता तो मैं ....तो मैं ! हां ! ‘ जोधा -अकबर ‘ का ‘ कहने को जश्न -ए -बहारा है ‘ , चुनती !”

“ ओ यसस्स ! एकदम सही !”

अलोक को सन्देश भेज दिया गया। अलोक को ठीक तो लगा लेकिन उसने बताया कि उसने भी एक गीत सोचा है जो कि ज्यादा अच्छा है। लेकिन वह राग को पसंद नहीं आया। इस पर उन दोनों ने बहस में ना पड़ते हुए पहले, पहले वाले गीत पर ध्यान देने की बात की।

माँ के हाव -भाव थोड़े चिंता वाले होने लगे थे जिसे राग ने अच्छे से पढ़ लिया। किसी से अधिक दोस्ती बढ़ाना नहीं है।विशेष तौर से किसी लड़के से ! कोई भी ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जिस से परिवारध खानदान का नाम खराब हो। मुंबई आने से पहले कितने पाठ पढ़ाए गए। उसे यूँ लगा कि उड़ने को पंख भी दिए और आसमान भी दे दिया, लेकिन पंजों में डोरी फंसा दी कि किस हद तक उड़ना है। ऐसा नहीं था कि वह एक पिछड़ी सोच वाले परिवार से थी। सभी पढ़े-लिखे और स्वतंत्र विचार के थे। लेकिन वे यह नहीं सुन ना चाहते थे कि लड़की ने स्वतंत्रता का गलत फायदा उठा लिया और घर से पैर क्या निकले कि पर ही फैला लिए ।माँ कुछ कह तो नहीं रही थी पर आशंकित तो जरूर थी।

प्रतियोगिता थी और दोगाना भी गाना था तो रियाज भी तो करना ही था। फिर कोई क्या कर सकता था। दोनों को साथ में तो रहना ही था। राग ने महसूस किया कि उसे देखते ही आलोक की आँखों में चमक बढ़ जाती है। वह देख कर अनदेखा कर देती क्यूंकि उसे अपने पंजो में डोर बंधी हुई अच्छे से नजर आती थी।

गीत की बहुत अच्छी तैयारी हुई। दोनों ने ही बहुत सुन्दर गाया। गाना बहुत सराहा गया। उस दिन का कार्यक्रम भी बहुत मजेदार था, हास्य रस से भरपूर ! कार्यक्रम के बाद तक सभी प्रतियोगी इसकी चर्चा करते रहे थे। सभी प्रफुल्लित और खुद को तरोताजा महसूस कर रहे थे। अगले दिन दूसरे गीत की तैयारी करनी थी, सारे दिन की थकान और तनाव भी था इसलिए सभी जल्दी ही सोने के लिए चले गए।

राग अपनी माँ से देर तक बातें करती रही। जहाँ अलोक का जिक्र उसकी आँखों की चमक बढ़ा रही थी, वहीं उसकी माँ के मन में चिंता भी बढ़ा रही थी कि अगर राग का झुकाव अलोक की तरफ हो गया तो वह क्या कर सकेगी। घर पर क्या जवाब देगी ? आदि -आदि .....सोचते हुए उनकी आँख लग गई।

सुबह राग के कानों में एक मधुर स्वर लहरी पड़ी तो उसकी आँख खुल गई।

“ यह अलोक है ! इसे चौन नहीं पड़ता क्या ?” आवाज की और खींची चल पड़ी। वह लहन में गा रहा था। सच में मधुर गीत था। मन को छू लेने वाला।

“अच्छा तो, वो तुम हो ! तुम हो....! “ गाते हुए पलटा तो सामने राग को खड़ी पाया। देख कर चेहरे पर प्यारी सी मुस्कान आ गई।

“तुम्हे चौन नहीं पड़ता क्या ? इतनी सुबह-सुबह ही ....”

“ हाँ , सुबह ही क्यों, मैं तो देर रात तक भी गाता हूँ। मुझे अर्जुन की तरह चिड़िया की आँख ही नजर आ रही है , मेरा मतलब है कि मुझे ‘ सुर-सरताज ‘ ही बनना है। क्या तुम जीतने नहीं आई ? “ बात काट दी राग की। वह भला क्या जवाब देती ! उसे कोई गायिका तो बनना नहीं था। उसका भविष्य तो शादी ही था,एक आम लड़की की तरह ! यह तो संगीत का शौक था और टेलीविजन में आने की जिद थी जो कि उसे यहाँ तक ले आया।

“ क्या सोच रही हो ?”

“ कुछ नहीं ! तुम कौनसा गीत गा रहे थे ? वही क्या जो मुझे बताया था ? सुनने में तो अच्छा है।”

“ हाँ, वही ! जब साज के साथ सजेगा तो और भी खिल जायेगा।”

“ जरा गा कर सुनाओ !”

अलोक गाने को हुआ ही था कि राग की माँ ने पुकार लिया। “ तुम यहाँ क्या कर रही हो ! अभी समय हो गया क्या रियाज का ?”

“ अलोक मैं जाती हूँ अभी ...”

उफ्फ, कर के रह गया अलोक।

राग को अलोक का गीत ही पसंद आया हालाँकि उसकी माँ को यह बात ही पसंद नहीं आई कि उसने अलोक वाला गीत गाने के लिए चुना है।

एक बड़े संगीतकार के साथ गीत की तैयारी शुरू हुई। गीत गाते हुए अलोक के चेहरे पर कोमल भावनाएं आ जाती थी जिसे राग पढ़ तो लेती थी पर अनदेखा ही करती रही।अलोक हमेशा की तरह सुर-ताल में परफेक्ट था, राग को थोड़ी मेहनत करनी पड़ी।

गीत प्रस्तुत करने का दिन भी आ गया ! आज फैसले का दिन भी था कि आज कोई एक घर चला जाने वाला है। सबके मन में धुक-धुकी सी थी। सभी अपना सर्वोत्तम देने को ही कर रहे थे।

बाकी किस्मत और जजों की मर्जी !

" कई दिन से मुझे कोई सपने में आवाज देता था, हर पल बुलाता था

अच्छा तो वो तुम हो तुम हो..

अकसर मेरा मन कहता था चुप कर कोई आता है, हलचल मचाता है

अच्छा तो वो तुम हो तुम हो....

राग और अलोक ने जब यह गीत गया तो जैसे सभी की सांसे थम सी गई हो एक तो सुन्दर गीत जो कि कम ही सुनने में आया और वह भी इतनी खुबसूरती से गाया गया था। दोनों में एक अच्छी सी केमेस्ट्री बन गई थी जो कि नजर भी आ रही थी। गीत जुबान से कम दिल से अधिक गाया प्रतीत होता था। सलोनी से नेहा (दोनों ही प्रतियोगी थी) ने धीरे से कहा कि लगता है 'केमिकल -रीएक्शन ' हो गया है ! फिर धीरे से हंसी। यह काना-फूसी और हंसी राग की माँ की नजर में आ गई। वह फिर से चिंता के भंवर में फंसने लगी। सारा प्रोग्राम उनके सर से ही निकल गया। सोचने लगी अगर ....! कहीं ....! .....? मन में एक अजीब सी उथल पुथल मच गई। वह यह भी ठीक से नहीं देख पाई कि उसकी बेटी कितना अच्छा गा रही थी। उसे कितनी सराहना मिली। प्रोग्राम अच्छा रहा। एक प्रतियोगी बाहर हो गया था। अब अगले कार्यक्रमों से सभी को अकेले ही गाना था। राग भी अलोक को अनदेखा करते -करते कुछ अधिक ही ध्यान देने लग गई थी। उसे लगता कि आलोक के सारे गीत उसी के लिए हैं या उसी को सुनाने के लिए वह ऐसे गीत चुनता है। चाहे ' मुझे तुमसे मुहब्बत है, मगर मैं कह नहीं सकता '......या ' बड़े अच्छे लगते हैं, ये धरती ये नदिया ये रैना और तुम '......

जिस दिन ये गीत गाया था, उस दिन उसने उसकी नजरों-नजरें में डाल कर कह भी दिया था कि " और तुम ! " समझ कर भी ना समझने वाले ऐसे मौके बहुत आये थे। लेकिन राग के पैरों की रस्सियाँ ही मजबूत धागे की बनी हुई थी। एक -एक कर के सभी प्रतियोगी बाहर होते जा रहे थे। अलोक का दबदबा हमेशा की तरह कायम था। सभी कयास लगा रहे थे कि ' सुर-सरताज 'तो अलोक ही बनेगा। सातवें नंबर पर आते-आते राग भी बाहर हो गई।इस बार उसने एक पुराना खूबसूरत परन्तु मुश्किल गीत चुना था।

" जाइये आप कहाँ जायेंगे
ये नजर लौट के फिर आएगी ...."

यहाँ सुर-ताल में गड़बड़ हो गई और उसे प्रतियोगिता से बाहर होना पड़ा। राग को थोड़ी सी निराशा तो हुई क्यूंकि वह इतनी जल्दी बाहर नहीं जाना चाहती थी। उसे यह तो उम्मीद थी कि वह पहले तीन स्थानों में जगह तो जरूर बना पाएगी। लेकिन ....

" मुझे बहुत अफसोस है राग !" कहते हुए बहुत मायूस दिख रहा था अलोक।

" कोई बात नहीं अलोक .....यह प्रतियोगिता है इसमें सभी तो पहले नम्बर पर तो नहीं आ सकते।" राग ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

अब राग पर प्रतियोगिता वाला बोझ नहीं था। लेकिन परिणाम घोषित होने तक वे अपने शहर नहीं जा सकते थे। जो प्रतियोगी बाहर हो चुके थे, उन्होंने मुंबई घूमने का प्रोग्राम बनाया और संगीतकारों से मिलने का,उनसे, उनके स्टूडियो में घ ूमने और सुर की बारीकियां सीखने का भी प्रोग्राम बनाया।

राग के लिए छोटे से शहर आभा नगरी से मुंबई आना बहुत बड़ी बात थी। अब तक तो वह पंजाब के शहरों तक ही जा पाई थी।स्कूल से कहलेज अपने शहर से ही किया। अभी तक तो संगीत की प्रतियोगिता के लिए भी राज्य स्तर तक ही भाग लिया था। उसे टेलीविजन में आने के लिए कितनी मिन्नते- चिरौरी करनी पड़ी थी। माँ ने ही मनाया था कि अहडिशन राउंड में भाग लेने में क्या हर्ज है। जरुरी थोड़ी है कि यह चुन ही ली जाए, शौक है पूरा हो जायेगा !लेकिन राग यहाँ तो चुन ली गई। बात तो खुशी की ही थी ! पापा भी खुश हुए। मुम्बई जाने की इजाजत भी मिली लेकिन बहुत सारी हिदायतों शर्तों के साथ !

राग कुछ उदास भी थी। इसलिए नहीं कि वह प्रतियोगिता से बाहर हो गई बल्कि इसलिए कि कुछ दिन बाद उसे वहां से जाना पड़ेगा और फिर ना जाने अलोक से मिलना होगा भी या नहीं। वह अलोक की आँखों की तपिश अपने चेहरे पर महसूस तो करती थी लेकिन अपने पापा की कठोर हिदायतों को बीच में ले आती थी। दिल को समझाते हुए चेहरे पर कई रंग आते जाते रहते। चेहरे के हावभाव माँ से छुपे नहीं थे पर खामोश थी क्यूंकि वह राग को अपनी जिम्मेदारी पर मुंबई लाई थी। वह नहीं चाहती थी कोई ऐसी बात हो और उस पर ऊँगली उठाई जाये।

आखिरी दिन भी आ गया। मतलब कि फैसले का दिन ! जैसा कि सभी ने कयास लगा ही लिया था, अलोक को ही 'सुर-सरताज 'का खताब मिला। जीत की खुशी अलोक के चेहरे पर झलक रही थी। खुशी से दमकता चेहरा उसे बहुत सुन्दर और आकर्षक दिखा रहा था। राग भी बहुत खुश थी। उस पर से नजर हट ही नहीं रही थी। वह उसका चेहरा अपनी नजरों में इस तरह बसा लेना चाहती थी कि कभी भी ओझल ही ना हो सके। जब अलोक को गाना गाने को कहा तो उसने कहा ," मैंने अभी तक तो पुराने गीत ही गाए हैं , आज मैं नया गीत गाऊँगा ! " कहते हुए राग की ओर देखा जैसे कह रहा हो कि ये उसके लिए ही गा रहा है।

" है दिल को तेरी आरजू , पर मैं तुझे ना प सकूँ
है दिल को तेरी जुस्तजू, पर मैं तुझे ना प सकूँ

मैं हूँ शब् तू सुबह ,दोनों जुड़ के जुदा
मैं हूँ लब तू दुआ , दोनों जुड़ के जुदा ......''

गीत सच में ही राग के लिए ही था। राग की आँखे भर आई। एक बार मन तो हुआ कि .....! लेकिन....

इस तरह एक जोड़ी भरी आँखों ने दूसरी भरी आँखों से विदा ले ली। मुम्बई से फ्लाइट थी और दिल्ली से ट्रेन पर जाना था। ट्रेन पर बैठते ही मोबाईल हाथ में लिया तो देखा अलोक के बहुत सारे सन्देश थे। पढ़ लिए। जवाब नहीं देगी राग। यह सोच लिया था उसने ! नम्बर डिलीट कर दिया । चेहरा सपाट था, लेकिन दिल का हाल क्या था ....कोई बयान नहीं ! नम्बर डिलीट करते हुए उसे लगा जैसे खुद उसने अपने ही हाथों गंगा में अपनी अस्थियां बहा दी हो....रोकते हुए भी आंखों के कोर भीग ही गए। चेहरे पर दुपट्टा कर के सोने का उपक्रम करने लगी।

उसका स्टेशन पर स्वागत हुआ, शहर का नाम जो रोशन किया था। चेहरे पर खुशी की रोशनी और दिल में अँधेरा लिए वह भी खुशियों में शामिल हो गई। उसके बाद तो कई दिन तक उसको समारोहों में बुला कर सम्मानित किया जाता रहा। उससे गीत गाने की फरमाईश भी की जाती जिसे वह सहर्ष स्वीकार करती। यह सब उसके पापा को पसंद नहीं आ रहा था।

'' यह सब क्या है राग बेटा ? बहुत हुआ ! अब घर पर रहो ! तुम्हारी शादी भी करनी है हमें !''

'' मैं उनको मना भी कैसे करूँ पापा ?''

'' तुम्हारे पास बहुत बहाने हो सकते हैं, जैसे तुम्हारी परीक्षाएं है या तुम शहर से बाहर हो ! कोई भी .....''

वह समझ गई। उसके पंख उतारे जा चुके हैं। लेकिन वह खुश भी थी कि उसके माँ-पापा ने बहुत सारी ख्वाहिशें पूरी की है। नहीं तो उसकी उम्र की लड़कियां कितना मन मारे बैठी थी। समाज के कुछ नियम है उसमे शादी करना भी एक था। माता -पिता का फर्ज था ये जो कि निभाना भी जरुरी था। रिश्ते देखने की कवायद शुरू की गई।

राग के लिए रिश्तों की क्या कमी थी ! सुन्दर थी, उच्च्च शिक्षित थी और अमीर पिता की बेटी भी तो थी। फिर भी एक बात पर आकर बात अड़ जाती। दिल में शक पैदा हो जाता है कि जो लड़की टेलीविजन तक जा आई है, कदम तो घर से बाहर पड़ ही गए जाने घर में टिकेगी या नहीं। क्या मालूम घर ही ना बसाए !बात चलती और ठप्प हो जाती।

'' मतलब तो यही हुआ माँ, कि लड़कियां जितनी भी पढ़े आगे बढ़े लेकिन घर की चारदीवारी तक ही सीमित रह कर। अंतिम मंजिल शादी है। कमाल है ! लोग चाँद पर घर बनाने की सोचते हैं और हम भारतीय सोच में पिछड़े के पिछड़े ही रहेंगे !'' राग को खीझ हो आई।

'' हम समाज से लड़ नहीं सकते।''

'' क्यों नहीं लड़ सकते माँ ! मैं मानती हूँ कि अगर मेरे घर परिवार के लोगों को मेरा आगे बढ़ना , स्टेज पर गाना बुरा नहीं लगेगा तो दुनिया में किसी की ताकत नहीं कि मुझे रोक सके।''

'' तो तुम क्या चाहती हो कि तुम संगीत में भाग्य आजमाओ ?'' पापा ने कमरे में प्रवेश किया।

'' बुराई क्या है ?''

'' है बुराई ! संगीत की दुनिया बुरी नहीं हैं लेकिन इस तक जाने के लिए दलदल भरा रास्ता पार करना पड़ेगा। बहुत बड़ी जानकारी और सिफारिश की जरूरत पड़ती है। हमारी इतनी पहुँच नहीं है कि हम तुम्हारी ये ख्वाहिश पूरी कर सकें.....'' पापा की बात में दम था।

कुछ दिन बाद घर में राग की चाची के बताए हुए रिश्ते पर चर्चा चल पड़ी। मालदार, अच्छा खानदान है । पढ़े लिखे लोग है । लड़का भी उच्च्च शिक्षित और उच्च्च पद पर था। एक लड़की को इससे ज्यादा क्या चाहिए। राग की सोच इससे विपरीत थी। मालदार ना हो पर सोच अच्छी और परिपक्व हो। शिक्षा सिर्फ डिग्री तक नहीं हो बल्कि व्यवहारिक भी हो।

जो भी हो, हर एक की सोच होती है। कोई भावुक होता है तो कोई व्यवहारिक होता है। राग इन दोनों के बीच की थी। उसके दिल-दिमाग दोनों संतुलन में थे।

उस दिन सुबह से ही गहमा-गहमी थी कि लड़के वाले आने वाले थे। राग मुस्कुरा रही थी। इसलिए नहीं कि शादी की बात हो रही थी, इसलिए कि हर घर में लड़की है और लड़का भी। फिर भी लड़के वाले कितनी वी आई पी ट्रीटमेंट पाते हैं। जैसे कोई भगवान ही जमीन पर उतरने वाला हो। उनको यूँ देखा जाता है कि जैसे ये ही उनकी बेटी के तारन हार है। और यही लड़की वाले जब खुद लड़के वाले बन जाते हैं तो इनके सुर-ताल बदल जाते हैं।

ओह ! सुर -ताल ...मन में कुछ अटक सा गया। मुस्कुराहट बुझ सी गई। तो क्या हुआ ? किसको परवाह थी। सब लोग तो बिजी थे। उसे भी तैयार होने की हिदायत दे दी गई। राग पर हर परिधान खिलता था। उसको साड़ी पहनना अधिक पसंद था। पसंद तो हमेशा से ही था लेकिन एक बार अलोक के तारीफ करने पर उसे साड़ी पहनना ही अधिक भाने लगा। आईने के सामने खड़ी खुद को निहार रही थी कि जैसे पीछे अलोक खड़ा हो। भीगी आँखों से मुस्कुरा दी। प्रेम ऐसी ही अनुभूति होती है कि होठ मुस्कुरा ही पड़ते हैं।

औपचारिक बात -चीत, खाने-पीने के बाद राग और विशाल आमने सामने थे।

'' आपको संगीत का बहुत शौक है.....''

'' हाँ, बहुत अधिक ....''

'' आप क्या सोचती हो कि शादी के बाद भी आपका यह शौक बना रहेगा ?''

'' ....''

'' जवाब नहीं दिया ? क्या सोच रही हो ....''

राग चुप थी। अभी क्या बोलती वह ? कुछ बातें भविष्य में ही तय होती है। फिर कुछ सोच कर बोली ,'' आप क्या सोचते हैं , मुझे क्या

करना चाहिए ?''

'' हम्म, शौक बुरा नहीं है लेकिन घर की जिम्मेदारियों के बाद अगर समय मिले तो ही ....''

राग चुप ही रही।

'' एक बात बताओ राग, जब आप प्रतियोगिता के लिए मुंबई गई थी तो किसी से दोस्ती नहीं हुई ? मैंने आपके प्रोग्राम यू -ट्यूब पर देखे हैं, जिनमे आपको दोगाना भी गाना था।''

'' आप कहना क्या चाहते हैं ?''

'' मैं यह कह रहा हूँ कि आपकी किसी से कोई दोस्ती हो गई हो और अभी तक वह संपर्क में हो। अगर ऐसा है तो आने वाली जिंदगी में मुश्किल आ सकती है। कोई पुरानी जान पहचान ले कर आपसे मिलने आ जायेगा तो मुझे पसंद नहीं आएगा !'' लहजा थोड़ा तल्ख सा हो गया विशाल का।

राग का अपमान से चेहरा तमतमा सा गया।

'' आप अच्छी व्यापारिक बुद्धि के इंसान है। पहले ही सारी टर्म एंड कंडीशन तय किये जा रहे हो। मेरा किस से संपर्क होता है या किस से दोस्ती हुई यह मेरा निजी मामला है। यह मैं आपको बताने की जरूरत नहीं समझती।''

'' फिर यह शादी नहीं हो सकती !''

'' मैं खुद इंकार करती हूँ शादी से, जिसकी सोच इतनी घटिया हो वह इंसान मेरे लायक ही नहीं !''

सारा दोष राग और उसकी माँ पर थोप दिया गया। पापा नाराज-विक्षुब्ध थे कि बेटी को मुंबई भेजना ही गलत था। अब आगे उसकी बहन -भाई के भविष्य भी दांव पर लगता दिख रहा था।

'' पापा, आप सोचिये कि मैं वहां खुश ही नहीं रह सकती थी, जहाँ इतनी संकीर्ण सोच के लोग बसते हों।'' राग ने डरते -डरते कहा।

'' और नहीं तो क्या ! बेटी को यूँ ही कहीं भी धकेल तो नहीं सकते .. ...''

'' तुम्हारी बात सही है। लेकिन हमनें इसे मुंबई भेज कर गलत किया है !लोगों की सोच नहीं बदली और दूसरों की ही क्यों, क्या हम अपने बेटे के लिए ऐसी लड़की ला सकते हैं ?''

'' पापा ! ऐसी लड़की से मतलब !'' रो पड़ी राग।

'' मेरे कहने का मतलब है कि जिस लड़की के सपने बहुत ऊँचे हो ऐसी लड़की घर बसा पायेगी ?''

बात तो घूम फिर कर वहीं आ गई कि लड़की पढ़े लिखे, नौकरी भी करे लेकिन घर की सीमा में रह कर ही। चारदीवारी से परे सपने देखने की इजाजत नहीं है। राग अब क्या करे। सपने देखे हैं तो भुगतान भी करे। जब तक शादी नहीं होती तब तक उसने प्राइवेट स्कूल में नौकरी ज्वाइन कर ली। जिंदगी यूँ ही चल पड़ी। रिश्ते में अड़चन तो आ रही थी। माँ पंडितों के पास कुंडली भी ले जाने लगी कि कोई मंगल का दोष तो नहीं। मंगल दोष तो नहीं था लेकिन ऊपर वाला जोड़ी बनाता है तो छुपा कहाँ देता है ? आसानी से मिला क्यों नहीं देता ? कोई इशारा ही दे देता तो खोज-बीन में मुश्किल तो ना आती। राग की माँ रोज यह सोचती और चिंता में डूब जाती। उनको लगता जैसे अँधेरा सा छा गया हो कोई राह ही नजर नहीं आता।

तभी राग के मामा के बेटे की शादी का सन्देश आ गया और सभी का ध्यान कुछ बंट गया। माँ को थोड़ी आस जगी कि शादी में ही कोई बात बन जाये। कई रिश्तेदार आएंगे तो कहीं न कहीं बात बन जाएगी।

राग,माँ को उदास देख कर एक दिन अलोक की बात छेड़ बैठी कि वह उसे पसंद करने लगा था। हालाँकि कभी उसने बोल कर नहीं कहा था फिर भी बिन कहे समझा भी दिया था।

'' मुझे मालूम है बेटा, सब जानती हूँ .....लेकिन तुम्हें अपनी जिम्मेदारी पर ले गई थी। और मैं खुद नहीं चाहती थी कि तुम्हारी बात दोस्ती की सीमा से आगे बढ़े। मुझे घर आ कर मुहं भी तो दिखाना था....हाँ, अलोक सच में बहुत योग्य लड़का था और उसके माता -पिता भी अच्छे और सुंस्कारी ही लगे .....लेकिन विजातीय दोष भी तो था !''

'' मतलब कि आपको पसंद तो था ?''

'' पसंद होने और तुम्हारे लिए जीवन साथी के रूप में पसंद करना ,अलग बात होती है बेटा ....''

'' आप इस बारे में एक बार पापा से बात कर सकती हो ?''

'' क्यों ? तुम अभी उससे बात करती हो ! ''

'' नहीं ! मैंने तभी फोन नंबर डिलीट कर दिया था। लेकिन मुझे मुख -जुबानी याद है अभी भी ......कसम से ,मैंने उससे कभी बात नहीं की !''

'' कसम मत खाओ, मुझे मालूम है तुमने कभी अलोक से बात नहीं की ....मैंने तुम्हारे पापा से बात की थी.... मुझे आशंका थी कि वे जरूर भड़केंगे लेकिन मेरी सोच के विपरीत वे सुन कर चुप रहे कुछ बोले नहीं। एक बार दिल्ली जा कर आते हैं फिर देखते है कि क्या बात बनती है !''

राग को थोड़ी राहत सी महसूस हुई और मन में एक आस सी जगी। वह कुछ सोच कर मुस्कुरा पड़ी।

'' क्या सोच कर मुस्कुरा रही हो ?''

आरुषि ने कंधे झकझोर कर राग को हिलाया। तो वह हंस पड़ी और अनायास ही खुश हो कर उसके गले लग गई। गजल गाने वाला अलोक ही था। उसे भी इस नई फिल्म में गाने का मौका दिया गया था। तभी स्टेज पर अनाउन्स हुआ कि दर्शकों में कोई है जो गाना चाहेगा ? राग का मन तो था कि वह भी गाए पर लेकिन बाकी लोग थे और सामने अलोक भी था। उसे डर था कि कोई ऐसी बात ना हो जाये कि किसी को उस पर ऊँगली उठने का मौका मिल जाए। मन की मन में ही रख ली।

शपिंग के बाद घर आने तक राग अनमनी ही रही। हालांकि उसने जाहिर तो नहीं होने दिया था पर माँ बेटी की मनोदशा समझ रही थी । वह भी खामोश ही रही।

शादी के माहौल में कब तक अनमना रहा जा सकता

था। लेकिन दिल तो कही अटका ही पड़ा था। संगीत के दिन तक राग के पापा भी आ गए। आईने के सामने खड़ी राग अपने बाल संवारती कुछ सोच रही थी।

'' राग, तुम जहाँ खड़ी तो वहां तुम हो नहीं और जहाँ तुम होना चाहती हो वहां के बारे में सोच रही हो !'' माँ कई देर से उसे गुमसुम खड़े देख रही थी। पास आकर बोली तो चौंक पड़ी वह।

'' उस दिन महल में अलोक को देखा तो एक ख्याल मेरे मन में आया है।''

'' क्या ?'' राग का दिल उछल सा गया।

'' कि उसे तुम्हारे पापा से मिलवाया जाये और उनको पसंद हो तो उसके घर वालों से बात चलाई जाये।''

राग को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। चकित सी माँ को देखती रही और माँ के गले लग गई। मन भर आया और आँखे भी। माँ कुछ देर तक बेटी के सर पर प्यार से हाथ फिराती रही।

'' अच्छा अब ज्यादा भावुक मत हो और अलोक को फोन कर के शादी में आने का निमंत्रण दे। मैंने तेरे मामा से बात कर के, राय ले कर ही तुझे कहा है। ''

राग ने खुशी से कांपते हुए हाथों से अलोक को फोन मिलाया। ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा। दूसरी तरफ अलोक बोल रहा था।

'' हेलो राग....'' भीगी सी आवाज सुन कर वह कुछ बोल ना पाई। गला और आँखे दोनों भर आये।

'' यह तुम हो ! तुम्हें आज याद आई मेरी ?''

भरे गले से अलोक शिकायती हो उठा।

'' हाँ ...., ''कहते हुए रो दी राग।

कई देर खामोशी रही।

'' तुम कहाँ रहे अलोक।''

'' तुमने दिल में तो देखा ही नहीं होगा कभी , मैं वहीं था हमेशा।''

'' तुम दिल के अलावा मेरे गीतों में भी रहे।''

'' फिर क्यों पूछती हो कि कहाँ रहा ?''

'' अब मैं तुम्हें अपने आस-पास देखना चाहती हूँ, हमेशा-हमेशा के लिए ! तुम दिल्ली में हो यह मुझे मालूम है। तुम्हें महल में देखा था पर मेरी हिम्मत नहीं हुयी कि तुम्हें मिलूं। आज माँ के कहने पर ही फोन किया है। तुम चले आओ मेरे घर वालों से मिलो। हो सके तो तुम अपने पेरेंट्स से भी बात कर लो।''

'' ओह हो ! इतनी जल्दी ! वैसे मैंने तभी बात कर ली थी पर तुमने कोई रिस्पांस तो मुझे भी संकोच हुआ कि तुम कहीं मना ना कर दो।''

'' तो एक बार हिम्मत कर के देखते तो सही !''

'' यह गलती तो मुझसे हुयी है राग। परन्तु मुझे यह विश्वास था कि हमारे बीच में जो मोह के धागे हैं वो उलझ गए है तो उनको हमारा साथ ही सुलझा सकेगा। इन्होने ही तो हमें बांधे रखा था।'' राग भी सहमत थी इन मोह-मोह के धागों से बंधे बंधन से।

उपासना सियाग
नई सूरज नगरी
गली न. 7 नौवां चौक
अबोहर (पंजाब)

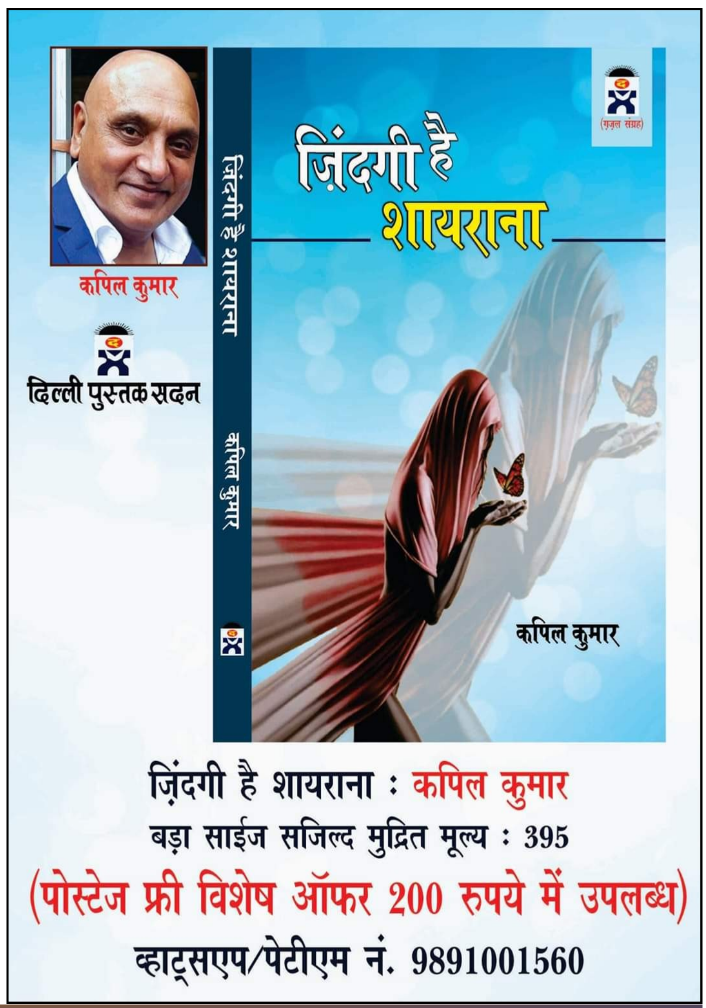

हिन्दी: केवल भाषा ही नहीं बल्कि पूर्ण संस्कृति

सृष्टि के संचालन में संचार की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है अतः संचार के माध्यम का सशक्त होना अति आवश्यक है। जब दो असमान तत्वों के बीच संचार होता है तो उसका माध्यम अनुभव या भाव-भंगिमा इत्यादि हो सकते हैं।

जब समान तत्वों के बीच संचार की बात होती है, विशेष तौर से मनुष्य में, तब भाषा बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यही कारण है कि शिशु से भी संवाद करते समय व्यक्ति अपनी मूल भाषा का प्रयोग करता है। शिशु को भले ही वर्णमाला का ज्ञान ना हो किंतु निरंतर हो रहे संवादों से उसे वस्तुओं को पृथक शब्दों के साथ साम्यता स्थापित करने का अभ्यास हो जाता है तथा इस प्रकार उसके अंदर भाषा का विकास होता है। यह एक चरणबद्ध प्रक्रिया है तथा आगे के चरणो में वह वर्णमाला का अभ्यास करता है तथा भाषा को लिपियों के माध्यम से श्रव्य के साथ-साथ दृश्य भाव में भी अंगीकार करता है। किंतु भाषा का क्षेत्र केवल संचार माध्यम तक ही सीमित नहीं होता, बल्कि भावाभिव्यक्ति का यह माध्यम व्यापार, चिकित्सा, विज्ञान इत्यादि क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए संस्कृति एवं विकास का अंग बन जाता है।

आज भारतीय समाज ने वैश्विक स्तर पर बहुत प्रगति की है तथा लगभग हर देश के साथ अच्छे व्यापारिक एवं राजनैतिक संबंध स्थापित किए हैं। जाहिर सी बात है कि इस कार्य में अन्य देशों की भाषाओं को अपनाने की शैली विकसित की गई है। यह कार्य इसीलिए सफलतापूर्वक हो सका है क्योंकि हमारी संस्कृति प्रत्येक भारतीय के जीवन में वसुधैव कुटुंबकम की भावना को मजबूती से स्थापित करती है। यह कार्य केवल एक भाषा का चमत्कार नहीं है वरन् जब भाषा में संस्कृति घुली हुई हो, आदर्शों की भावना हो, जीवमात्र हेतु सम्मान का भाव हो, मर्यादाएं हो, स्वतंत्रता हो, विनम्रता हो तभी नागरिकों में इतनी शक्ति आती है कि वे विश्व बंधुत्व की भावना लिए अन्य संस्कृतियों एवं भाषाओं का सम्मान करते हुए उनके मध्य प्रगाढ़ संबंध बना सकते है। हमारी हिंदी में यह सुंदरता नैसर्गिक रूप से रची बसी है।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि हमारी हिंदी केवल संचार का माध्यम न होकर अपने आप में पूरी संस्कृति है। यही कारण है कि एक आम हिंदीभाषी के अंदर अन्य भाषाओं एवं संस्कृतियों के प्रति सम्मान का भाव है। वैश्विक भाषा बन चुकी अंग्रेजी को भी हिंदी से प्रेम रखने वाले उसी भाव से स्वीकार कर पाते हैं। यह हिंदी की शाश्वत सुंदरता है। हिंदी भाषियों के हृदय में श्रेष्ठता का अहंकार नहीं होता बल्कि आदर एवं विनय उनके सहज स्वभाव में सम्मिलित होता है। हिंदी के जितने प्रमाणिक ग्रंथ हैं वे व्यक्ति की आंतरिक दृष्टि को उनकी चेतना से जोड़कर व्यक्ति के सहज स्वरूप का दर्शन कराने की क्षमता रखते हैं। जब व्यक्ति के अंदर श्रेष्ठता का अहंकार होता है तब वह बाहरी नेत्रों द्वारा दूसरों के दोष एवं आत्मप्रशंसा में अपना जीवन व्यर्थ कर देता है। ऐसा जीवन पूरी तरह दिखावटी होता है तथा झूठी श्रेष्ठता के दिखावे के कारण व्यक्ति के अंदर अनर्गल संचय की प्रवृत्ति विकसित होती है जिसके कारण मान-सम्मान एवं मर्यादाओं की परवाह किए बिना वह कोई भी अनैतिक कार्य करने में नहीं हिचकता।

भाषा केवल कुछ अक्षरों, मात्राओं, शब्दों एवं वाक्यों का समुच्चय नहीं है बल्कि यह मानवीय सभ्यता का प्रथम चरण है। अतः इसमें मानवीय संवेदनाओ की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। जो मधुरता का भाव मां, अम्मा, माई, बाबूजी, पिताजी, भइया, दीदी जैसे शब्दों में आता है वही भाव महम, पा, ब्रो या सिस जैसे शब्दों में नहीं मिलता। भारतीयों के लिए वैश्विक भाषा को संचार माध्यम के रूप में अपनाना बहुत अच्छा है क्योंकि इसमें देश की प्रगति निहित है।

विकास आवश्यक है किंतु अपनी जड़ों की कीमत पर किया हुआ विकास स्वयं के ही अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देता है। हम तभी तक सशक्त हैं तथा दूसरों के साथ सक्षम संवाद करने में समर्थ है जब तक हम अपनी जड़ों से जुड़े हुए हैं अन्यथा हमारा जीवन कटी हुई पतंग के समान है जो भले ही जमीन से बहुत ऊंचा दिखाई दे रहा हो किंतु उसके अस्तित्व का भविष्य अनिश्चित है - वह पेड़ों की झाड़ियों में फंसकर नष्ट हो सकता है, नदी नालों में बहकर अपनी लीला समाप्त कर सकता है अथवा बच्चों की छीनाझपटी के दौरान फट सकता है। उसके पुनः आकाश तक पहुंचने का केवल एक ही मार्ग है कि किसी सुरक्षित हाथ में पड़े जो उसे पुनः डोरी से जोड़ कर उसे ऊंचाई तक पहुंचाने हेतु प्रयास करे।

हिंदी संवेदनशील है। हिंदी में दूसरी भाषाओं का सम्मान है यही कारण है कि इतनी सशक्त भाषा होने के बावजूद हिंदी अन्य भाषाओं जैसे अंग्रेजी, उर्दू, सिंधी, पंजाबी, गुजराती, बांग्ला इत्यादि के शब्दों को भी सहजता से स्वीकार कर लेती है। हमारा दायित्व है कि हिंदी की इस विशालता एवं विराटता को नमन करें तथा इसका प्रयोग करने में गर्व का अनुभव करें। हिंदी हमारी संस्कृति है, हिंदी हमारा गर्व है, हिंदी हमारी धरती है, हिंदी हमारा आकाश है, हिंदी हमारा जीवन है, हिंदी हमारी चेतना है, हिंदी हमारी स्वांस है, हिंदी हमारा प्राण है, हिंदी हमारी जागृति है।

दीपक श्रीवास्तव

नई फुहार

अपनेपन के प्रबल भाव से,सराबोर परिवार रहे।
बजे जीत का बिगुल सदा ही,नहीं हृदय में हार रहे।।

खिड़की कहती धरती देखो,जहाँ उजाला स्याह नहीं।
करना ज्यादा उछल कूद मत,सड़क कटी यह राह नहीं।
फूँक फूँक कर कदम बढ़ें सब,अम्बर तक विस्तार रहे।।

विषम परिस्थितियों में भी प्रिय,अपने पथ पर डटे रहो
घर की दीवारें कहती हैं,अपनों से मत कटे रहो
पथ प्रशस्त जो करे सभी का,उसी मन्त्र को गढ़े रहो
हर मुश्किल को सरल करें जो,कर में वह हथियार रहे।।

अपने अंक समेट सभी के,सुख दुख भी सहना सीखो
छत कहती है ऊंचाई पर ,तुम स्थिर रहना सीखो
ऊँचे उठकर कभी न गिरना,सबसे यह कहना सीखो
उर में उच्च विचारों वाली,नाव और पतवार रहे।।

कभी न थकना कभी न रुकना,सतत चलायमान रहना
दीवारों की कलाइयों की घड़ी सदृश टिक टिक कहना
अपना ही उदाहरण रखकर सारी मुश्किल दुख सहना
चलने के इस संस्कार की,जग में नई फुहार रहे।।

चंद्र भानु मिश्रा
गाजियाबाद

देवतुल्य परिवार मिले

प्राणवंत हो सुप्त भावना,।
हो पूरण सब मनोकामना।
वाणी में अमृत घुलता हो।
बाँहो का हार मचलता हो।

अग्रज के सम्मुख हम नत हो।
आदर्शों में अध्ययनरत हों।
हो बीजारोपण ममता का।
जहाँ पाठ पढ़े सब समता का।

कर्मठता का मूल्यांकन हो।
हर योग यहाँ मणिकांचन हो।
घर घर मे तुलसी सेवा हो।
हर मूर्ति यहाँ सचदेवा हो।

जहाँ वेद ऋचाएं गुंजित हों।
आशीषों से अभिनन्दित हों।
घर प्रगतिशील कल्पना हो।
जीवन में नई अल्पना हो।

मुरली की तान बिखरती हो।
मंदिर घण्टा ध्वनि बजती हो।
जीवन का कोना कुसुमित,
रोज यहाँ त्योहार मिले।

संस्कृतियों के संरक्षण हित
देवतुल्य परिवार मिले।
सुरभित क्यारी सी गंध मिले।
उन सुमनों पर मकरन्द मिले।

उन पर भृमरों का गुंजन हो।
कली का अलि से अभिनन्दन हो।
जहाँ पक्षी करते हों कलरव।
हो गन्ध गंध में हर अवयव।

खुशियां डूबी अभिलाषा हो।
समरसता की परिभाषा हो।
अतिथि भाव में सत्कार मिले।
सबको मुट्ठी भर प्यार मिले।

साधु संत सेवा में अर्पण।
दीन दुखी के लिए समर्पण।
स्वार्थ सिद्ध से मुक्त भावना।
प्रभु के प्रति आसक्त कामना।

मयूरा जैसा मन नृत्य करे।
खुशबू में डूबे कृत्य करें।
जहां प्रीत प्रेम की गागर हो।
वहाँ नेह स्नेह का सागर हो।

घर घर में प्रेम गंगा से,
अधरों पर रसधार मिले।
संस्कृतयों के संरक्षण हित
देवतुल्य परिवार मिले।

डॉ राजीव पाण्डेय
वेबसिटी,गाजियाबाद

अंतराष्ट्रीय त्रैमासिक ई -पत्रिका

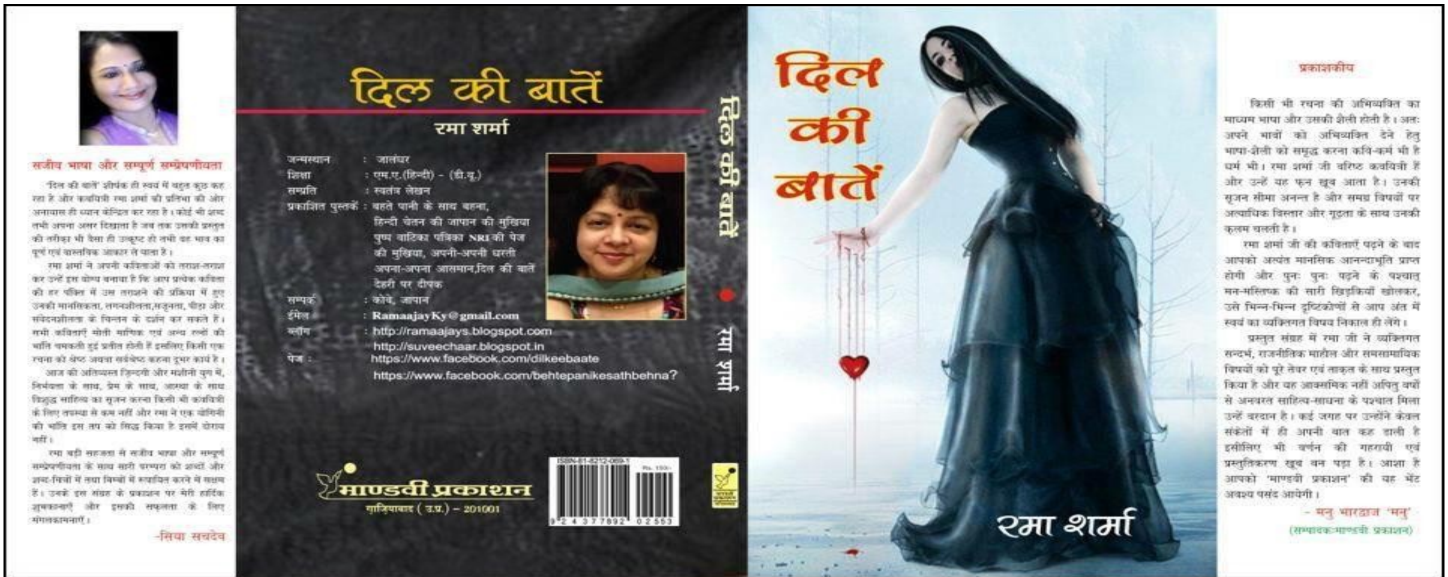
सजीव भाषा और सम्पूर्ण सम्प्रेषणीयता
-सिया सचदेव
दिल की बातें
रमा शर्मा
जन्मस्थान : जालंधर
शिक्षा : एम.ए.(हिन्दी) - (डी.यू.)
सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन
प्रकाशित पुस्तकें : बहते पानी के साथ बहना, हिन्दी चेतन की जापान की मुखिया पुष्प वाटिका पत्रिका NRI की पेज की मुखिया, अपनी-अपनी धरती अपना-अपना आसमान,दिल की बातें देहरी पर दीपक
सम्पर्क : कोबे, जापान
ईमेल : RamaajayKy@gmail.com
ब्लॉग : http://ramaajays.blogspot.com
http://suveechaar.blogspot.in
पेज : https://www.facebook.com/dilkeebaate
https://www.facebook.com/behtepanikesathbehna?
माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.) – 201001
दिल की बातें ● रमा शर्मा
दिल की बातें
रमा शर्मा
प्रकाशकीय
- मनु भारद्वाज 'मनु'
(सम्पादक-माण्डवी प्रकाशन)

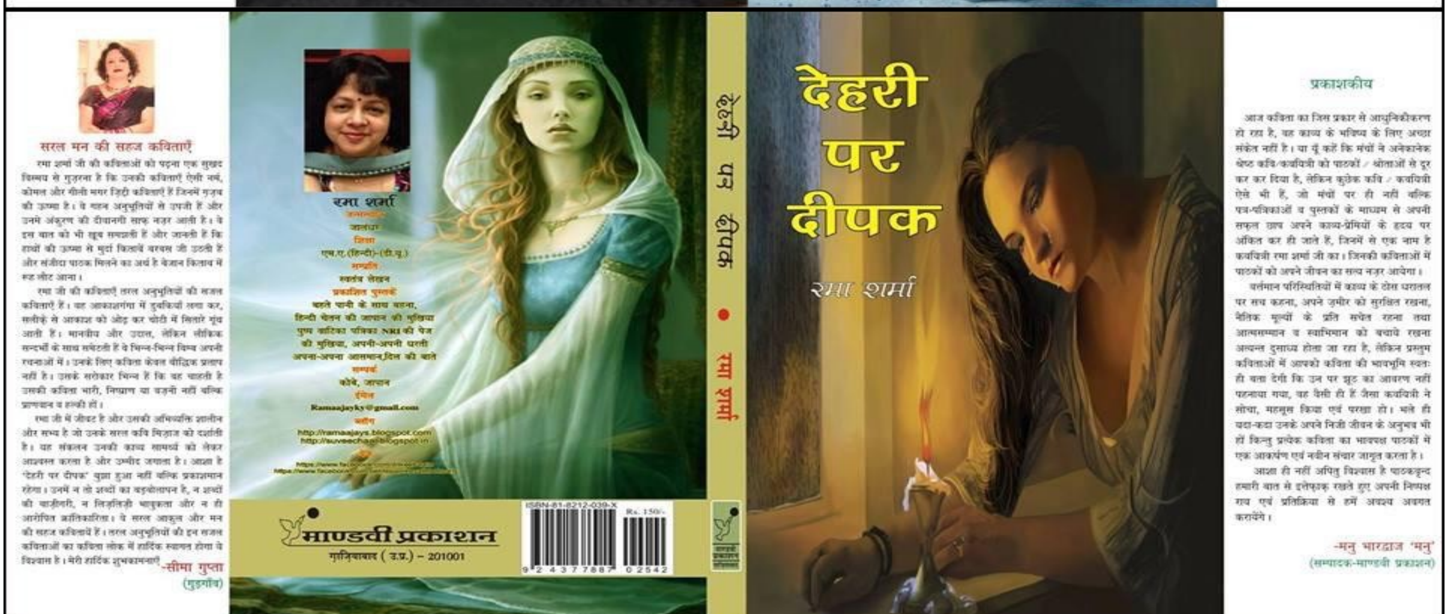
सरल मन की सहज कविताएँ
-सीमा गुप्ता
(गुड़गाँव)
रमा शर्मा
Ramaajayky@gmail.com
http://ramaajays.blogspot.com
माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.) – 201001
Rs. 150/-
देहरी पर दीपक ● रमा शर्मा
देहरी पर दीपक
रमा शर्मा
प्रकाशकीय
-मनु भारद्वाज 'मनु'
(सम्पादक-माण्डवी प्रकाशन)

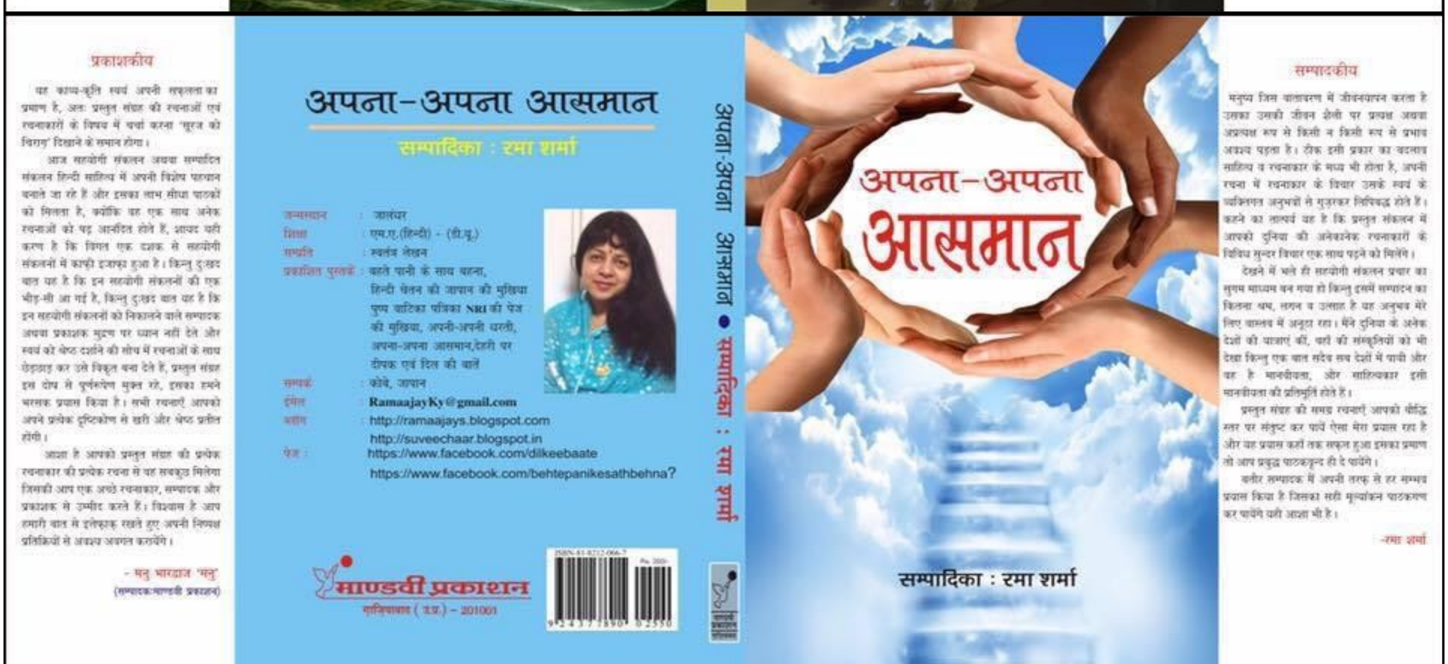
प्रकाशकीय
- मनु भारद्वाज 'मनु'
(सम्पादक-माण्डवी प्रकाशन)
अपना-अपना आसमान
सम्पादिका : रमा शर्मा
जन्मस्थान : जालंधर
शिक्षा : एम.ए.(हिन्दी) - (डी.यू.)
सम्प्रति : स्वतंत्र लेखन
प्रकाशित पुस्तकें : बहते पानी के साथ बहना, हिन्दी चेतन की जापान की मुखिया पुष्प वाटिका पत्रिका NRI की पेज की मुखिया, अपनी-अपनी धरती, अपना-अपना आसमान,देहरी पर दीपक एवं दिल की बातें
सम्पर्क : कोबे, जापान
ईमेल : RamaajayKy@gmail.com
ब्लॉग : http://ramaajays.blogspot.com
http://suveechaar.blogspot.in
पेज : https://www.facebook.com/dilkeebaate
https://www.facebook.com/behtepanikesathbehna?
माण्डवी प्रकाशन
गाज़ियाबाद (उ.प्र.) – 201001
अपना-अपना आसमान ● सम्पादिका : रमा शर्मा
अपना-अपना आसमान
सम्पादिका : रमा शर्मा
सम्पादकीय
-रमा शर्मा

हिन्दी की गूँज

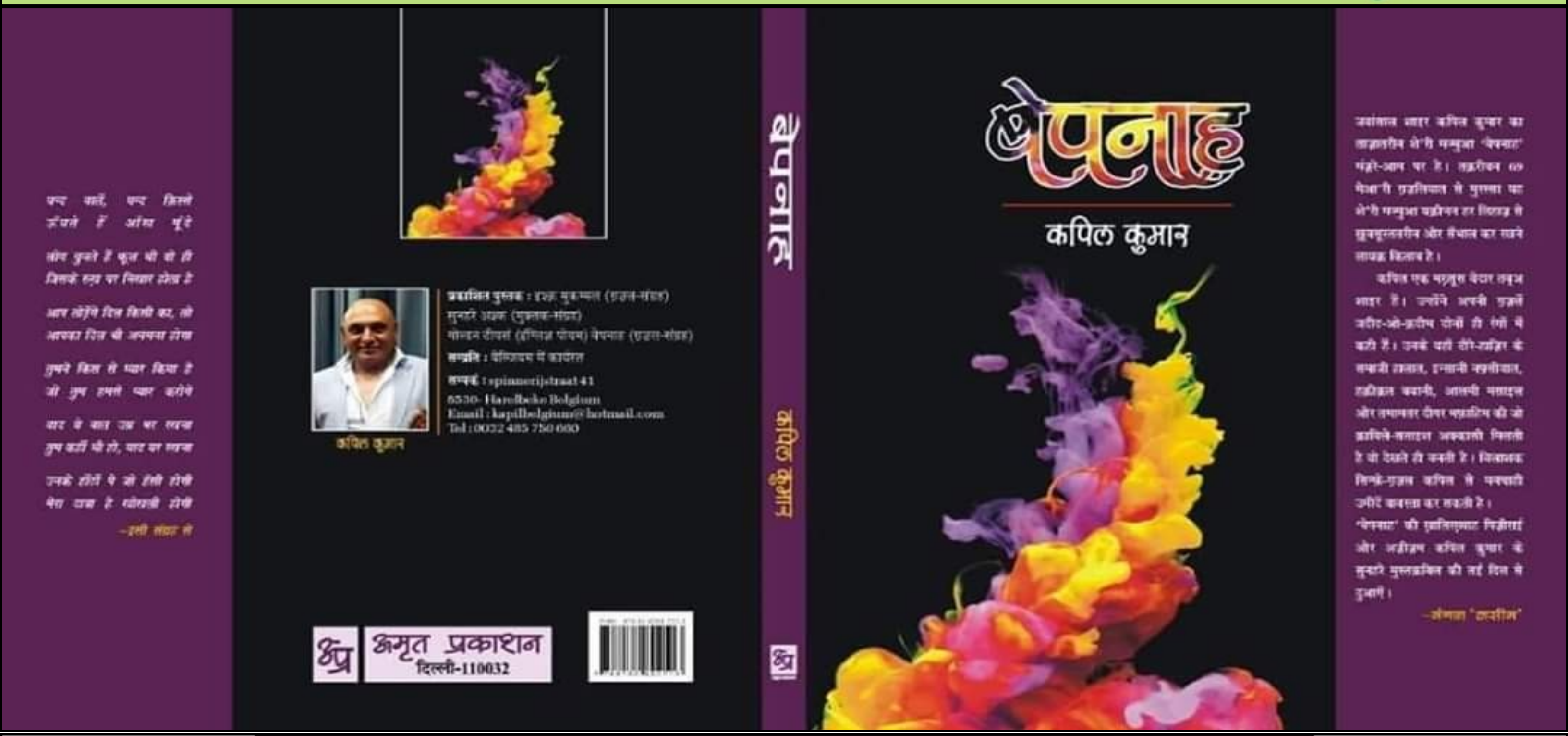

अंतराष्ट्रीय त्रैमासिक ई -पत्रिका